

उभरता बिहार

वर्ष : 16, अंक : 1, जुलाई 2023

सचिवालय, लखारी, सकारात्मक विद्यार्थ



नरेंद्र मोदी को उत्खाड़ना नहीं अपने अपने क्षत्रियों को है छवाना



जातीय हिंसा में
झुलसते 'मणिपुर...



योग भारतीय प्राचीन
संस्कृति की...

ENVISION MEDICAL IMAGING & SCAN CENTRE

(A UNIT OF ENVISION MEDICAL IMAGING & SCAN CENTRE PVT. LTD)

ENVISION MEDICAL IMAGING & SCAN CENTRE

MRI

1.5 Tesla Ultrast High Definition MRI Scan
Silent MRI System
Artificial Intelligence Enable
All MRI Examination

CT SCAN

Latest Generation Multi Slice CT Scan
Ultrast & Digital CT Angiography
Very Low Radiation dose CT Scan System
CT Guided Biopsies

ULTRASOUND

4D Ultrasound Machine
Elastography / Fibroscan
Ultrasound Guided Procedures
Colour Doppler / 3D/4D Cardiography

X-RAY

32 KW HF X-Ray Machine (Dr-400)
Full Leg/Full Spine with auto
Switching Technology
Reduced Expose Dose

C - 14, Housing Colony, Kankarbagh, Patna - 800029 | Website : www.envisionimaging.in Contact Us : 9155998970 , 9155998971



C-14 BEHIND V-MART, KANKARBAGH AUTO STAND, KANKARBAGH, PATNA - 800 020
MOBILE : 9155998970, 9155998971, E-mail : envisionimagingpatna@gmail.com

उभरता बिहार

वर्ष : 16, अंक : 01, जुलाई 2023

RNI No. BIHHIN/2007/22741

संपादक

राजीव रंजन

समाचार संपादक

राकेश कुमार

विषेश संवाददाता

कुमुद रंजन

छायाकार

विनोद राज

विधि सलाहकार

उपेन्द्र प्रसाद

चंद्र नारायण जायसवाल

साज-सज्जा

मयंक शर्मा

प्रशासनिक कार्यालय

सी-49 हाऊसिंग कॉलोनी, लोहियानगर

कंकड़बाग, पटना - 800020

फोन : 7004721818

Email : ubhartabihar@gmail.com

स्वामी मुद्रक, प्रकाशक व संपादक राजीव
रंजन द्वारा कृत्या प्रकाशकेशन, लंगरटोली, बिहार से
मुद्रित एवं सी-49 हाऊसिंग कॉलोनी, लोहियानगर,
कंकड़बाग, पटना - 800020 से प्रकाशित।

संपादक: राजीव रंजन

सभी कानूनी विवाद पटना न्यायिक क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत
निपत्ते जायेंगे। लेखकों द्वारा व्यक्त विचार उनके अपने हैं।
इसकी जिम्मेदारी उनकी है एवं इसके लिये संपादक, प्रकाशक
की सहमति अनिवार्य नहीं है। सामग्री की वापसी की जिम्मेवारी
उभरता बिहार की नहीं होगी। इस अंक में प्रकाशित सभी
रचनाओं के सर्वाधिकार सुरक्षित है। कुछ छाया चित्र और लेख
इंटररोट, एंजेसो एवं पत्र-पत्रिकाओं से साधार। उपरोक्त सभी पढ़
अस्थायी एवं अवैधिक हैं। किसी भी आलेख पर आपत्ति हो
तो 15 दिनों के अंदर खंडन करें।

नोट : किसी भी रिपोर्टर द्वारा अनैतिक ढंग
से लेन-देन के जिम्मेवार वे स्वयं होंगे।

संरक्षक

डॉ. संतोष कुमार

राजा बाबू

अखिलेश कुमार जायसवाल

डॉ. राकेश कुमार



द्वादश ज्योतिलिंगों के दर्शन से मिल जाता है ...

07

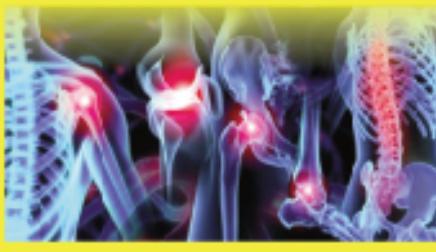


शक्ति रूप में विराजमान है बाबा विश्वनाथ ... 13

ओडिशा बालासोर : हादसा, लापरवाही...

20

मातृछाया ऑर्थो एण्ड हेल्थ केयर



Consultant Trauma & Spinal Surgeon
हड्डी, जोड़, टीव, नस सह अविद्या सेम विषेषज्ञ

दिलोषता:

1. यहाँ हड्डी टीव ले तंत्रित रुकी टीवों पर इलाज होता है।
2. लीची ले द्वारा टूं-हड्डी बैंडों की सुविधा उपलब्ध है।



दिलोषता:

3. ट्राइज्युलरी भी भी तुरेण है।
4. Total Joint Replacement टिलेज्जों की टीव के द्वारा रल्ले द्वारा ब्र भी तारी है।

24 HRS.
ORTHO &
SPINAL
EMERGENCY



Dr. Rakesh Kumar

M.B.B.S. (Pat), M.S. (Pat), M.Ch.
Ortho Fellowships in Spine Surgery
India Spine Injury Centre, New Delhi

G-43, P.C. Colony, Kankarbagh, Patna-20, Mob. - 7484814448, 9504246216



राजीव रंजन

संपादक

सावन का महीना केवल भारत ही नहीं विदेशों में रहने वाले हिन्दुओं के लिए भी बहुत महत्व रखता है। यह महीना हिन्दुओं की आस्था का प्रतीक है। इस महीने के सभी दिन हिन्दू धर्म में बहुत शुभ माने जाते हैं। हिन्दू धर्म के कुछ महत्वपूर्ण त्यौहार भी इसी महीने में आने से सावन का महीना हिन्दुओं के लिए और भी खास बन जाता है। सावन में मंदिरों में सामान्य से अधिक भीड़ इकट्ठा होती है। सावन में बारिश से मौसम ठंडा और खुशहाल हो जाता है। सावन के आते ही मौसम खुशबूझा हो जाता है। एक तरफ धर्म और दूसरी तरफ रोगांस। यह मौसम जहाँ बारसात के भीगे-भीगे समाँ के कारण मन और भावनाओं को नशीला बना देता है। वहीं, इन दिनों धर्म का पवित्र वातावरण पूजा-पाठ के लिए प्रेरित करता है। दोनों ही दो अलग तरह की प्रवृत्तियाँ हैं लेकिन मौसम एक ही है। सावन भोलेनाथ को प्रसन्न करने का महीना है जबकि मौसम की ठंडक दो दिलों में प्यार घोलने का काम करती है। सावन वह मौसम है जब भाई-बाहन का स्नेह भी रक्षाबंधन के रूप में दिखता है। सावन का महीना हिन्दू धार्मिक कैलेण्डर का 5वां महीना होता है। सावन का महीना हिन्दू आस्था से जुड़ा एक पवित्र महीना होता है और भारत में वर्षा ऋतु का यह दूसरा महीना होता है। सावन के महीने में मंदिरों में दर्शनार्थियों की खूब भीड़ लगती है।

नरेंद्र मोदी को उखाड़ना नहीं अपने अपने क्षत्रपों को है बचाना

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार विपक्ष को एकजुट करने के प्रयास में लगे हुए हैं। लेकिन हकीकत इसके ठीक उलट है। यह अलग बात है कि मोदी के खौफ के आगे सभी विपक्षी दलों का मकसद एक ही है—बीजेपी को केंद्र की सत्ता से बेदखल करना। मकसद समान होने के बावजूद सबके अपने-अपने हित हैं। ऐसे में बड़ा सवाल तो यही है एक तरफ जो पार्टियां राज्यों में अपना वर्घस्व बनाने के लिए सिर फुटौवल कर रही हैं, वे लोकसभा के लिए एक साथ एक मंच पर कैसे आएंगी? राज्यों में लड़ाई तो राष्ट्रीय स्तर पर दोस्ती कैसे? और अगर सहमती बन भी गयी तो सीटों का बंटवारा कैसे होगा? दरअसल, विपक्षी एकता तो बहाना है असल मकसद है मोदी की आंधी में अपने-अपने राज्यों को बचाना है। कांग्रेस और वाम दलों को छोड़ कर ज्यादातर विपक्षी एकता मिशन में क्षेत्रीय दलों के क्षत्रप हैं। जबकि उनका अपने-अपने राज्यों में एक का दूसरे राजनीतिक दल से दूर-दूर तक कोई रिश्ता नहीं है। खास बात यह है कि उन्हीं दलों की वोटबैंक में सेंधमारी कर अपने को भाजपा से मुकाबले में बताती है। यहीं वजह है कि क्षत्रप अपने राज्यों में कांग्रेस को स्थान नहीं देना चाहते हैं, क्योंकि उनका सियासी आधार कांग्रेस की जमीन पर खड़ा है।

क्या 2024 में काईटमा दिखा पाएगा विपक्ष?



सुरेश गांधी

फि

रहाल, लोकसभा

2024 चुनाव में

अब करीब नौ

माह ही बचे हैं। ऐसे में मैदान मारने के लिए हर दल अपनी पूरी ताकत झोके पड़े हैं। जबकि मोदी सरकार के कामकाज से अधिकतर जनता संतुष्ट है। हालांकि, महंगाई और बेरोजगारी जैसे मुद्दों को लोग मोदी सरकार की बड़ी नाकामयाबी मानते हैं। विपक्ष इसी मुद्दे पर लगातार भाजपा को धेर भी रहे हैं। लेकिन धार नहीं दे पा रहे हैं। इसी वजह से विपक्षी दलों ने

एकजुटता की कड़ी में क्षेत्रीय क्षत्रपों के साथ समझौता करने का निर्णय लिया है। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार विपक्ष को एकजुट करने के प्रयास में कुछ हद तक सफलता भी पायी है। यह अलग बात है कि मोदी के खौफ के आगे सभी विपक्षी दलों का मकसद एक ही है—बीजेपी को केंद्र की सत्ता से बेदखल करना। पटना में तीन घटे की मंथन में एक ही मुद्दे पर सैद्धांतिक सहमति बनी कि भाजपा मुक्त भारत के लिए सभी विपक्षी दल साथ रहेंगे। बैठक में कोई रणनीति नहीं बन पाई। उल्टे बैठक के बाद सीएस अरविंद केजरीवाल ने पटना से लेकर दिल्ली तक यह सकेत दे दिया कि विपक्षी एकता की बात बेमानी है। कहा जा सकता है मकसद समान होने के बावजूद

सबके अपने-अपने हित हैं। यहीं हित और स्वार्थ की टकराहट विपक्षी एकता की कामयाबी में संदेह के कारण हैं। दरअसल, विपक्षी एकता तो बहाना है असल मकसद है मोदी की आंधी में अपने-अपने राज्यों को बचाना है।

कांग्रेस और वाम दलों को छोड़ कर ज्यादातर विपक्षी एकता मिशन में क्षेत्रीय दलों के क्षत्रप हैं। जबकि उनका अपने-अपने राज्यों में एक का दूसरे राजनीतिक दल से दूर-दूर तक कोई रिश्ता नहीं है। खास बात यह है कि उन्हीं दलों की वोटबैंक में सेंधमारी कर भाजपा के मुकाबले में चुनाव लड़ते हैं। ममता की टीएमसी ने बंगाल से कांग्रेस और वाम दलों का जिस तरह सफाया किया है, वे कैसे उन

दलों से तालमेल बिठा पाएँगी, कहना कठिन है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से लेकर सपा प्रमुख अखिलेश यादव और आरजेडी नेता तेजस्वी यादव समेत तमाम विपक्षी दल के नेता चाहते हैं कि कांग्रेस उनके प्रभाव वाले राज्यों से चुनाव नहीं लड़े, ताकि भाजपा से सीधे मुकाबले में बौद्धों का बटवारा नहीं हो। बंगल, दिल्ली, तमिलनाडु, झारखण्ड, पंजाब, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना और ओडिशा में जनता के बीच मजबूत पकड़ रखने वाली पार्टियों को प्राथमिकता देनी चाहिए। दिलचस्प यह है कि ममता ने आरंभ में बिना कांग्रेस के विपक्षी एकता का अभियान छेड़ा था, जिसका किसी दल ने समर्थन नहीं किया। नीतीश कुमार की पहल पर जब विपक्षी एकता मिशन की शुरूआत हुई, तब से ममता बनर्जी कांग्रेस को उसकी ओकात बताने की कोशिश करती रही हैं। दिल्ली और पंजाब में आप और कांग्रेस एक दूसरे के दुश्मन हैं। दिल्ली और पंजाब की सत्ता आप ने कांग्रेस को धकेल कर ही हासिल की है। दोनों राज्यों के बड़े कांग्रेसी नेताओं को ऐसा लगता है कि आप से नजदीकी बढ़ी तो इन दो राज्यों में कांग्रेस के लिए सत्ता में लौटने के सफेद पर पानी फिर जाएगा। विपक्षी बैठक के दो दिन पहले बयान आया कि दिल्ली और पंजाब को कांग्रेस भूल जाएं तो राजस्थान और मध्य प्रदेश के विधानसभा चुनाव में आप अपना उम्मीदवार नहीं उतारेगी। अब खुद अरविंद केजरीवाल ने बयान दिया है कि अध्यादेश पर सभी साथ नहीं आएं तो विपक्षी एकता का कोई मतलब नहीं है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और राहुल गांधी से मुलाकात में पंजाब और दिल्ली इकाइयों के नेता अपनी पीड़ा बत चुके हैं। कांग्रेस इसी वजह से चुप है। 80 सीटों वाले यूपी में सपा के संबंध किसी दल से ठीक नहीं हैं। अखिलेश यादव के लिए कांग्रेस बड़ा दुश्मन रही है। हालांकि एक बार उन्होंने कांग्रेस के तालमेल से चुनाव भी लड़ा था। चुनाव की नाकामी के लिए वे कांग्रेस को जिम्मेवार मानते



हैं। ऐसी स्थिति में कौन किसका साथ कितनी ईमानदारी से देगा, यह देखने वाली बात होगी। खास यह है कि गठबंधन के बावजूद सपा की बीजेपी को हराने की 3 कोशिशें विफल हो चुकी हैं।

महाराष्ट्र में शिवसेना के नेता और पूर्व सीएम उद्धव ठाकरे कट्टर हिन्दुत्व विचारधारा के हैं। सीएए, एनआरसी, कामन सिविल कोड, मंदिर जैसे मसलों पर वे कैसे विपक्षी एकता के बावजूद सपा की शामिल करा पाएंगे, जब कांग्रेस समेत ज्यादातर पार्टियां इसके खिलाफ हैं। जम्मू कश्मीर से धारा 370 के खासे के सवाल पर केजरीवाल का स्टैंड नेशनल कांग्रेस के नेता उमर अब्दुल्ला को नागवार लगा था। उन्होंने अपनी पीड़ा का इजहार भी बैठक में किया। उद्धव ठाकरे हिन्दुत्व पर कैसे अपना रुख बदलेंगे। यानी कॉम्पन मिनिमम प्रोग्राम तैयार करना भी विपक्ष के लिए बड़ी चुनौती होगी।

मतलब साफ है मकसद एक होने के बावजूद सभी विपक्षी दलों की विचारधारा एक नहीं है। और मोदी खौफ में तालमेल बन भी गया तो इनका मुख्या

कौन होगा? ये बड़ा सवाल है। देखा जाएं तो सपा प्रमुख अखिलेश यादव संभवतः यूपी में कांग्रेस को 15 सीटें, ममता बनर्जी बंगल में लगभग 6 सीटें देने पर सहमत हो सकती हैं और दिल्ली में कांग्रेस और आप के बीच 4 व 3 का फॉर्मूला विवाद सुलझा सकता है। कांग्रेस पार्टी के लिए यह एक लिटमस टेस्ट है और देखना होगा कि क्या उसे क्षेत्रीय दलों से वह स्वीकार्यता और महत्व मिल पाता है जिसकी वह उम्मीद करती है। यूपीए 2004 में अस्तित्व में आया और फिर उसे दूसरा कार्यकाल मिला। तब सोनिया गांधी यूपीए की चेष्टपर्सन थीं। यूपीए 3 के लिए नेतृत्व का मुद्दा भी एक विवादास्पद है क्योंकि सोनिया गांधी ने अब पार्टी में जिम्मेदारी नहीं ली है। पीएम मोदी के लिए प्रमुख चुनौती कौन होगा या क्या यह एक सामूहिक चुनौती होगी? इस पर भी सबकी नजर रहेगी।

कांग्रेस की रणनीति बीजेपी की रणनीति से विकुल अलग है। बीजेपी के लिए नरेंद्र मोदी तुरूप का इक्का है। जिनकी लोकप्रियता आज भी बरकरार है बीजेपी के पास अर्जुन जैसा धनुर्धर।



द्वादश ज्योतिलिंगों के दर्शन से मिल जाता है जीवन-मरण के बंधन से मुक्ति



पुराणों में कहा गया है, जब तक महादेव के 12 ज्योतिलिंग के दर्शन आप नहीं कर सकते, आपका आध्यात्मिक जीवन पूर्ण नहीं हो सकता। हिंदू मान्यता के अनुसार ज्योतिलिंग कोई सामान्य शिवलिंग नहीं है। कहते हैं कि इन सभी 12 जगहों पर भोलेनाथ ने खुद दर्शन दिए थे, तब जाकर वहां ये ज्योतिलिंग उत्पन्न हुए। ज्योतिलिंग एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ होता है छोरेशनी का प्रतीक़हूँ। वैसे भी भगवान शिव की साकार रूप में पूजा लिंग स्वरूप में सबसे ज्यादा होती है। जहां इस लिंग रूप में भगवान ज्योति के रूप में विद्यमान रहते हैं उसको ज्योतिलिंग कहते हैं। कुल मिलाकर भगवान शिव के द्वादश (बारह) ज्योतिलिंग हैं— सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकालेश्वर, ओंकारेश्वर, केदारनाथ, भीमाशंकर, विश्वनाथ, त्रयम्बकेश्वर, वैद्यनाथ, नागेश्वर, रामेश्वर, घुश्मेश्वर। भगवान के अन्य लिंगों की पूजा की तुलना में ज्योतिलिंगों की पूजा करना अधिक उत्तम होता है। अगर... नित्य प्रातः केवल इन शिवलिंगों के नाम का स्परण किया जाय तो माना जाता है कि इससे सात जन्मों के पाप तक खुल जाते हैं। अगर आप इन शिवलिंगों के दर्शन नहीं कर पाते तो इनकी प्रतिकृति (चित्र) लगाकर पूजा करने से भी आपको अपार लाभ हो सकता है। इन्हीं 12 ज्योतिलिंग की मैने दर्शन पूजन उपरांत विस्तृत रिपोर्ट तैयार कर रहे हैं। प्रस्तुत है देश के 12 ज्योतिलिंग कहां-कहां हैं और उनकी क्या विशेषता है, के बाबत कुछ जरूरी जानकारियां:-

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमऽङ्कारमलेश्वरम्।
परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमाशंकरम्।
सेतुबधे तु रामेशं नागेशं दारकावने॥।
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यंबकं गौतमीतटे॥।
हिमालये तु केदारम् घुश्मेशं च शिवालये॥।
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सावं प्रातः पठेन्तरः।
सप्तसन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति॥।

सुरेश गांधी

भा

रत अध्यात्म एवं आस्था का देश है। भारतीय संस्कृति की सनातन धर्म एवं 33 कोटि देवी देवताओं में भगवान शिव ही देवाधिदेव महादेव की उपमा से अलंकृत माने गए हैं। मनिंगों के इस देश में कई ऐसे विशिष्ट धाम एवं पवित्र तीर्थस्थल हैं जहां पर भक्तों का तांत्र हमेशा लगा रहता है। इन प्रमुख तीर्थों में

भारत के चार धाम के साथ-साथ भगवान शिव के ज्योतिलिंग भी शामिल हैं जहां दूर-दूर से लोग तीर्थ करने पहुंचते हैं। भगवान शिव का केदारनाथ ज्योतिलिंग उत्तराखण्ड चार धाम यात्रा का प्रमुख केंद्र भी है। लेकिन भगवान शिव के 12 ज्योतिलिंगों का अपना अलग ही महत्व है। पुराणों और धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक इन 12 स्थानों पर जो शिवलिंग मौजूद हैं उनमें ज्योति के रूप में स्वयं भगवान शिव विराजमान हैं। यही कारण है कि इन्हें ज्योतिलिंग कहा जाता है। ज्योतिलिंग दो शब्दों से मिलकर बना है। धार्मिक मान्यताओं व ग्रथों के अनुसार शिव साक्षात रूप में एक दिव्य ज्योति के रूप में प्रकट हुये थे। ज्योतिलिंग का अर्थ प्रकाश स्तंभ होता है। ज्योतिलिंग की उत्पत्ति का रहस्य श्री शिव महापुराण में बताया गया है। श्री शिव महापुराण के अनुसार एक बार विष्णु जी और ब्रह्मा जी के बीच वर्चस्व को साक्षित करने के लिए युद्ध हो गया था, जिसका हल ढूँढ़ने के लिए भगवान शिव ने एक योजना बनाई। भगवान शिव ने प्रकाश के एक विशाल स्तंभ से तीनों लोगों को छेद दिया था। इसके बाद भगवान शिव ने ब्रह्मा जी और विष्णु जी को उस प्रकाश का अंत खोजने को कहा परंतु दोनों इस काम को करने में असफल रहे, विष्णु जी ने तो अपनी हार स्वीकार कर ली, परंतु ब्रह्मा जी ने शिव जी से शूष्ठ बोला की मुझे प्रकाश का अंत मिल गया है। जिसके बाद शिव जी ने नाराज हो कर ब्रह्मा जी को श्राप दे दिया है, जो शिव जी ने प्रकाश के विशाल स्तंभ से जो छेद किया था उसे ज्योतिलिंग कहते हैं, और इसी से ज्योतिलिंग की उत्पत्ति हुई है। मान्यता है कि जो भी व्यक्ति अपने पूरे जीवन में एक बार शिव के

“ ”

भगवान शिव का केदारनाथ ज्योतिलिंग उत्तराखण्ड चार धाम यात्रा का प्रमुख केंद्र भी है। लेकिन भगवान शिव के 12 ज्योतिलिंगों का अपना अलग ही महत्व है।

पुराणों और धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक इन 12 स्थानों पर जो शिवलिंग मौजूद हैं उनमें ज्योति के रूप में स्वयं भगवान शिव विराजमान हैं। यही कारण है कि इन्हें ज्योतिलिंग कहा जाता है।





द्वादश ज्योतिर्लिंग के दर्शन कर लेता है तो वह सभी दोषों से मुक्त होकर मृत्यु पश्चात मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। सौभाग्यशाली लोग ही अपने जीवन में शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों के दर्शन कर पाते हैं।

1. सोमनाथ ज्योतिर्लिंग, गुजरात

गुजरात के सौराष्ट्र में अरब सागर के तट पर स्थित है देश का पहला ज्योतिर्लिंग जिसे सोमनाथ के नाम से जाना जाता है। शिव पुराण के अनुसार जब चंद्रमा को प्रजापति दक्ष ने क्षय रोग का श्राप दिया था तब इसी स्थान पर शिव जी की पूजा और तप करके चंद्रमा ने श्राप से मुक्ति पाई थी। ऐसी मान्यता है कि स्वयं चंद्र देव ने इस ज्योतिर्लिंग की स्थापना की थी। कहते हैं देवताओं ने यहाँ पवित्र कुण्ड बनाया था जिसे सोमनाथ कुण्ड माना जाता है। इस कुण्ड में स्नान करने से मनुष्य के सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। वह मृत्यु-जन्म के चक्र से मुक्त होकर मोक्ष को प्राप्त करता है। पुराणों के अनुसार इस मंदिर के सुनहरे का भाग का निर्माण चंद्रदेव ने किया और चांदी का भाग सूर्योदय ने बनाया। चंदन के भाग को भगवान श्री कृष्ण ने बनवाया और पत्थर की संरचना को भीमदेव नामक राजा ने बनवाया। इस मंदिर पर महमूद गजनवी ने तकरीबन 16 बार आक्रमण किया और 16 बार इसे खंडित किया। लेकिन इसे फिर से वापस खड़ा किया गया।

2. मलिलकार्जुन ज्योतिर्लिंग, आंध्र प्रदेश

आंध्र प्रदेश में कृष्णा नदी के किनारे श्रीशैल पर्वत पर स्थित है मलिलकार्जुन ज्योतिर्लिंग। इसे दक्षिण का कैलाश भी कहते हैं। इस ज्योतिर्लिंग के दर्शन मात्र से सभी कष्ट दूर हो जाते हैं। खास बात यह है कि इसके पास में एक शक्तिपीठ भी है, जो भारत में कुल 51 शक्तिपीठों में से एक है।

3. महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग, मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश के उज्जैन में क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित है महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग। ये एकमात्र दक्षिणमुखी ज्योतिर्लिंग है जहाँ रोजाना होने वाली भस्म अरती विश्व भर में प्रसिद्ध है। यहाँ प्रतिदिन 5000 से ज्यादा भक्त पूजा के लिए आते हैं। त्योहारों पर तो यहाँ 20,000 से 30,000 भक्तों का तांता लग जाता है और सावन में लाखों श्रद्धालु पहुंचते हैं।

4. ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग, मांधारा मध्य प्रदेश

ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र के शिवपुरी द्वीप में नर्मदा नदी के किनारे पर्वत पर स्थित है। इसे मांधारा पर्वत के नाम से भी जाना जाता है। मान्यता है कि तीर्थ यात्री सभी तीर्थों का जल लाकर ओंकारेश्वर में अर्पित करते हैं तभी उनके सारे तीर्थ पूरे माने जाते हैं। ओंकारेश्वर का मंदिर का नाम ओंकारेश्वर इसलिए पड़ा है क्योंकि यह ज्योतिर्लिंग के चारों ओर पहाड़ के चारों

और जो नदी बहती है वह ओम का आकार बनाती है। इसलिए इसे ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग भी कहा जाता है। ओंकारेश्वर का अर्थ होता है ओम के आकार का ज्योतिर्लिंग।

5. केदारनाथ ज्योतिर्लिंग, उत्तराखण्ड

केदारनाथ ज्योतिर्लिंग उत्तराखण्ड में अलखनंदा और मंदाकिनी नदियों के तट पर केदार नाम की चोटी पर स्थित है। यहाँ से पूर्वी दिशा में श्री बद्री विश्वाल का बद्रीनाथाम मंदिर है। मान्यता है कि भगवान केदारनाथ के दर्शन किए बिना बद्रीनाथ की यात्रा अधूरी और निष्पल है। केदारनाथ ज्योतिर्लिंग पूरे विश्व में सबसे अधिक लोकप्रिय है। यहाँ पर विश्व भर से लाखों लोग भगवान केदारनाथ के दर्शन के लिए पहुंचते हैं। केदारनाथ ज्योतिर्लिंग समुद्र तल से तकरीबन 3584 मीटर ऊंचा है। भगवान केदारनाथ का ज्योतिर्लिंग उत्तराखण्ड के चार धाम यात्रा का एक धाम भी है। माना जाता है कि केदारनाथ धाम की खोज पांडवों ने थी। वह अपने पापों से मुक्ति पाने के लिए केदारनाथ धाम पहुंचे थे और मंदिर का निर्माण पांडवों ने ही सबसे पहले करवाया था। इसके बाद इसका पुनर्निर्माण आदिशंकराचार्य जी ने करवाया था। यह धाम अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है। बर्फ से ढके हुए केदारनाथ की शोभा अद्भुत है।

6. भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग, पूर्णे महाराष्ट्र

भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग, महाराष्ट्र में पूर्णे से करीब 100 किमी दूर डाकिनी में स्थित है। यहाँ स्थित शिवलिंग काफी मोटा है, इसलिए इसे मोटेश्वर महादेव भी कहा जाता है। कथा के मुताबिक यह मंदिर रामायण काल से जुड़ी हुई है। कहते हैं कि जब भगवान राम ने कुंभकरण का वध कर दिया था तब कुंभकरण की कर्कटी नामक पत्नी के पुत्र भीम को कर्कटी ने देवताओं से दूर रखने के लिए इसी जगह को चुना था। जब भीम को पता चला कि देवताओं ने उसके पिता का वध कर दिया तो उसने बदला लेने के लिए ब्रह्मा जी की तपस्या की और महान बलशाली हाने का वरदान मांगा। इसी कारण उन्होंने कामरूपेश्वर नामक राजा को बदी बनाकर काल कोठरी में डाल दिया। क्योंकि वह शिव जी के भक्त थे। भीम ने कहा कि तुम मेरी पूजा करो लेकिन कामरूपेश्वर ने ऐसा करने से मना कर दिया और भीम ने कामरूपेश्वर को मारने की कोशिश की। तभी भगवान शिव ने वहाँ प्रकट होकर भीम का वध कर दिया तभी देवताओं ने भगवान शिव से प्रार्थना की कि वे वही अपने ज्योतिर्लिंग के रूप में निवास करें। तब से इस ज्योतिर्लिंग का नाम भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग पड़ गया।

7. बाबा विश्वनाथ धाम ज्योतिर्लिंग, वाराणसी उत्तर प्रदेश

मोक्ष की नगरी काशी में गंगा तट पर विश्वनाथ का विश्वनाथ। कहते हैं कैलाश छोड़कर भगवान शिव ने यहीं अपना स्थाई निवास बनाया था। मान्यता है कि सूर्य की पहली किरण काशी पर ही गिरी थी। इस मंदिर को कई बार तोड़ने की कोशिश की गई। औरंगजेब ने तो मंदिर तोड़ने के बाद यहाँ ज्ञानवापी मस्जिद का निर्माण करा दिया था, जो आज भी मौजूद है। हालांकि इस समय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रयास से भगवान काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग का कॉर्सिडोर के रूप में भव्य निर्माण कराया गया है। हर साल मुख्यतः श्रावण मास में इस मंदिर में भक्तों की इतनी भीड़ लगती है कि उनकी गणना करना संभव नहीं है। पहली सोमवारको 6 लाख से ज्यादा ने अपना मत्था टेका था। इस समय बाबा विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग

“ ”

गुजरात के सौराष्ट्र में अरब सागर के तट पर स्थित है देश का पहला ज्योतिर्लिंग जिसे सोमनाथ के नाम से जाना जाता है। शिव पुराण के अनुसार जब चंद्रमा को प्रजापति दक्ष ने क्षय रोग का श्राप दिया था तब इसी स्थान पर शिव जी की पूजा और तप करके चंद्रमा ने श्राप से मुक्ति पाई थी। ऐसी मान्यता है कि स्वयं चंद्र देव ने इस ज्योतिर्लिंग की स्थापना की थी। कहते हैं कि वह शिव जी के भक्त थे। भीम ने कहा कि तुम मेरी पूजा करो लेकिन कामरूपेश्वर ने ऐसा करने से मना कर दिया और भीम ने कामरूपेश्वर को मारने की कोशिश की। तभी भगवान शिव ने वहाँ प्रकट होकर भीम का वध कर दिया तभी देवताओं ने भगवान शिव से प्रार्थना की कि वे वही अपने ज्योतिर्लिंग के रूप में निवास करें। तब से इस ज्योतिर्लिंग की स्थापना की थी।

आज पूरी दुनिया के आकर्षण का केंद्र हैं। रोजाना हजारों लाखों पर्यटक इस मंदिर में भगवान शिव के ज्योतिर्लिंग का दर्शन करने आते हैं। घाटों का भव्य नजारा किसी स्वर्ग से कम नहीं है।

8. त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग, नासिक महाराष्ट्र

त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग महाराष्ट्र के नासिक से 30 किमी दूर पश्चिम में स्थित है। गोदावरी नदी के किनारे स्थित यह मंदिर काले पत्थरों से बना है। शिवपुराण में वर्णन है कि गौतम ऋषि और गोदावरी की प्रार्थना पर भगवान शिव ने इस स्थान पर निवास करने निश्चय किया और त्र्यंबकेश्वर नाम से विख्यात हुए। त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग ब्रह्मगिरी नामक एक पर्वत पर स्थित है। जहां से गोदावरी नदी शुरू होती है। त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग, त्र्यंबकेश्वर के नाम से इसलिए भी जाना जाता है क्योंकि यहां पर तीन छोटे-छोटे लिंग हैं जिन्हें ब्रह्मा, विष्णु और शिव के प्रतीक भी माना जाता है।

9. वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग, देवघर झारखण्ड

बाबा वैद्यनाथ धाम ज्योतिर्लिंग झारखण्ड के देवघर में है। कहा जाता है एक बार रावण ने तप के बल से शिव को लंका ले जाने की कोशिश की, लेकिन रास्ते में व्यवधान आ जाने से शर्त के अनुसार शिव जी यहां स्थापित हो गए। शिवपुराण में हुए वर्णन के अनुसार इसे भगवान शिव के इस पावन धाम को चिता भूमि कहा जाता है। भगवान वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग को रावण की भक्ति का प्रतीक भी माना जाता है। यह ज्योतिर्लिंग अपने भक्तों की कामनाओं को पूरा करने और उन्हें रोग मुक्त बनाने के लिए प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि एक बार रावण भगवान शिव का ज्योतिर्लिंग लेकर इसी मार्ग से जा रहा था लेकिन रास्ते में ही उसे लधुशंका लग गई जिसके कारण उसने वह शिवलिंग एक ग्वाले के हाथ में थमा दिया जिसने भारी-भरकम भार वहन से थक कर उस शिवलिंग को वहां जपीन पर रख दिया और भगवान शिव यहां स्थापित हो गए। कहा जाता है कि एक बैजू नाम के ग्वाले की गाय रोजाना वहां घास चढ़ाते हुए अपना दूध भगवान शिव को समर्पित कर देती थी। उसी वाले के नाम पर यहां स्थित भगवान शिव के ज्योतिर्लिंग का नाम बैजनाथ धाम पड़ा।

10. नागेश्वर ज्योतिर्लिंग, द्वारका गुजरात

नागेश्वर मंदिर गुजरात में बड़ौदा क्षेत्र में गोमती द्वारका के करीब स्थित है। धार्मिक पुराणों में भगवान शिव को नागों का देवता बताया गया है और नागेश्वर का अर्थ होता है नागों का ईश्वर। कहते हैं भगवान शिव की इच्छा अनुसार ही इस ज्योतिर्लिंग का नामकरण किया गया है। यह द्वारकापुरी से तकरीबन 17 किमी दूर है। नागेश्वर ज्योतिर्लिंग में भगवान शिव की 80 फीट ऊँची एक मूर्ति है। इसमें इसके निर्माण में दारुका नाम और उसके पति दारुक की कथा सुनाई जाती है। इसके लिए एक की संस्कृत में श्लोक भी कहा गया है कि- ह्लैवैद्यनाथन चिताभूमे नागेशं दारुकावनेह्।

11. रामेश्वर ज्योतिर्लिंग, कन्याकुमारी तमिलनाडु

भगवान शिव का 11वां ज्योतिर्लिंग तमिलनाडु के रामनाथम नामक स्थान में है। मान्यता है कि रावण की लंका पर चढ़ाई से पहले भगवान राम ने जिस शिवलिंग की स्थापना की थी, वही रामेश्वर के नाम से विश्व विख्यात हुआ। रामसेतु भी वही स्थित है। कहते हैं रामेश्वरम मंदिर में जो 24 पानी के कुएँ हैं उसे खुद भगवान श्रीराम ने अपने तीरों से बनाए थे, ताकि वे अपने वानर सेना की प्यास बुझा सकें। रामेश्वरम मंदिर के पास ही भगवान राम और विभीषण की पहली बार मुलाकात हुई थी। माना जाता है कि रावण को मारने के लिए जो ब्रह्म हत्या का पाप भगवान राम को लगा था उसके दोषी से मुक्त होने के लिए भगवान राम ने यही भगवान शिव की आराधना करी थी। उत्तर में जितना महत्व काशी का है, उतना ही महत्व दक्षिण में रामेश्वरम का भी है। यह सनातन धर्म के चार धारों में से एक है।

12. घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग, औरंगाबाद महाराष्ट्र

घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग महाराष्ट्र के संभाजीनगर के समीप दौलताबाद के पास है। भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से यह अंतिम ज्योतिर्लिंग है। इस ज्योतिर्लिंग को घुश्मेश्वर के नाम से भी जाना जाता है। यह ज्योतिर्लिंग घुश्मा के



मृत पुत्र को जीवित करने के लिए भगवान शिव के समर्पण में बनाया गया है। तभी से यह घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

काशी में सभी द्वादश ज्योतिर्लिंगों का है मंदिर

काशी एक मात्र ऐसा तीर्थस्थल है, जहां शिवभक्तों को सभी द्वादश ज्योतिर्लिंग के दर्शन का मौका मिलता है। मान्यता है कि 12 ज्योतिर्लिंग यहां काशी में साक्षात् मूल स्वरूप में ही मौजूद हैं। इनमें पहले स्थान पर सोमनाथ महादेव मान मंदिर, दूसरे स्थान पर मलिलकार्जुन महादेव सिंगरा, तीसरे स्थान पर महाकालेश्वर महादेव दारानगर, चौथे स्थान पर केदारनाथ महादेव केदर घाट, पांचवें स्थान पर भीमशंकर महादेव नेपाली खपड़ा, छठवें स्थान पर विश्वेश्वर महादेव विश्वनाथ गली, सातवें स्थान पर त्रिकेश्वर महादेव हौज कटोरा बांस फाटक, आठवें स्थान पर बैजनाथ महादेव बैजनत्था, नौवें स्थान पर नागेश्वर महादेव पठानी टोला, दसवें स्थान पर रामेश्वरम महादेव रामकुंड, 11वें स्थान पर घुश्मेश्वर महादेव कमच्छ और 12वें स्थान पर ओंकारेश्वर महादेव छित्तनपुर में मौजूद हैं।



भगवान शिव का 11वां ज्योतिर्लिंग तमिलनाडु के रामनाथम नामक स्थान में है। मान्यता है कि रावण की लंका पर चढ़ाई से पहले भगवान राम ने जिस शिवलिंग की स्थापना की थी, वही रामेश्वर के नाम से विश्व विख्यात हुआ। रामसेतु भी वही स्थित है। कहते हैं रामेश्वरम मंदिर में जो 24 पानी के कुएँ हैं उसे खुद भगवान श्रीराम ने अपने तीरों से बनाए थे, ताकि वे अपने वानर सेना की प्यास बुझा सकें। रामेश्वरम मंदिर के पास ही भगवान राम और विभीषण की पहली बार मुलाकात हुई थी। माना जाता है कि रावण को मारने के लिए जो ब्रह्म हत्या का पाप भगवान राम को लगा था उसके दोषी से मुक्त होने के लिए भगवान राम ने यही भगवान शिव की आराधना करी थी। उत्तर में जितना महत्व काशी का है, उतना ही महत्व दक्षिण में रामेश्वरम का भी है। यह सनातन धर्म के चार धारों में से एक है।

जिस शिवलिंग की स्थापना की थी, वही रामेश्वर के नाम से विश्व विख्यात हुआ। रामसेतु भी वही स्थित है। कहते हैं रामेश्वरम मंदिर में जो 24 पानी के कुएँ हैं उसे खुद भगवान श्रीराम ने अपने तीरों से बनाए थे।



बिहार का बराबर पहाड़ पर बाबा सिद्धेश्वरनाथ शिवलिंग



कुमुद रंजन सिंह

बिहार में पर्यटन, आध्यत्म व धार्मिक स्थल गया जिले में स्थित है बराबर पहाड़। ऐतिहासिक दृष्टि से यह पहाड़ काफी महत्वपूर्ण है। भगवान श्रीकृष्ण, शिव, पाण्डव और बाणासुर से सम्बन्धित है यह प्राचीन पर्वत है, जो अब पहाड़ी के रूप में विराजमान है। पृथ्वी पर यह एकमात्र पहाड़ी है, जो भगवान श्रीकृष्ण और शिव के बीच हुए भयंकर युद्ध का साक्षी है। विश्व के गिने-चुने पहाड़ों में बराबर पहाड़ी शामिल है जो खण्डित है, जड़ से चोटी तक पूरी तरह टुकड़ों में बँटा है। यहाँ भगवान शिव सिद्धेश्वरनाथ शिवलिंग के रूप में विराजमान हैं। सालोंभर भक्तों और पर्यटकों से बराबर पहाड़ी गुलजार रहती है।

बराबर पहाड़ी के टूटे होने की एक कथा प्राचीन भारतीय ग्रन्थ में उपलब्ध है। उस की संक्षिप्त चर्चा मैं यहाँ कर रहा हूँ। वामनरूपधारी भगवान को पृथ्वी दान देनेवाले राजा बलि के सौ पुत्रों में बाणासुर ज्येष्ठ था। उदार, बुद्धिमान व अटल प्रतिज्ञा के लिए प्रसिद्ध बाणासुर भगवान शिव की भक्ति में मन रहता था। वह शोणितपुर (वर्तमान असम का तेजपुर) में राज्य करता था।

भगवान शिव के आशीर्वाद से बाणासुर ने एक हजार भुजाएँ प्राप्त की। हजार

भुजा प्राप्त कर वह समूची पृथ्वी पर तहलका मचाने लगा। उस ने कई पर्वतों को अपने हाथों से तोड़ डाला। इसी दौरान उस ने बराबर पहाड़ पर भी प्रहर किया और इसे चूर कर दिया। पूरा पहाड़ छोटे-बड़े चट्टानों के रूप में है। कई विशाल चट्टानें बहुत छोटी चट्टानों पर अवलम्बित हैं, पर आश्चर्य है कि ये गिरते नहीं।

हजार हाथों के अलावा शिवजी ने अन्य वरदान माँगने को कहा तो बाणासुर

बराबर पहाड़ी के टूटे होने की एक कथा प्राचीन भारतीय ग्रन्थ में उपलब्ध है। उस की संक्षिप्त चर्चा मैं यहाँ कर रहा हूँ। वामनरूपधारी भगवान को पृथ्वी दान देनेवाले राजा बलि के सौ पुत्रों में बाणासुर ज्येष्ठ था। उदार, बुद्धिमान व अटल प्रतिज्ञा के लिए प्रसिद्ध बाणासुर भगवान शिव की भक्ति में मन रहता था। वह शोणितपुर (वर्तमान असम का तेजपुर) में राज्य करता था।

पुत्रों में बाणासुर ज्येष्ठ था। उदार, बुद्धिमान व अटल प्रतिज्ञा के लिए प्रसिद्ध बाणासुर भगवान शिव की भक्ति में मन रहता था। वह शोणितपुर (वर्तमान असम का तेजपुर) में राज्य करता था।



ने कहा- आप मेरे किले के पहरेदार बन जाये। लाचारी में शिव उस के किले के रक्षक बन गये।

बाणासुर अत्यन्त बलशाली हो गया। उस से कोई राजा या देवता युद्ध करना नहीं चाहते थे। सभी भयभीत रहने लगे। तब बाणासुर ने शिवजी से युद्ध करनी चाही मगर शिष्य होने के कारण शिवजी ने मना कर दिया। उन्होंने बाणासुर को एक ध्वज दिया और कहा कि जिस दिन यह फट जायेगा, उस दिन तुम से युद्ध करनेवाला (श्रीकृष्ण) अवतार लेगा। यह सुन बाणासुर डर गया। उस ने पुनः तपस्या की और अपनी हजार हाथों से कई सौ मृदंग बजाकर शिवजी को प्रसन्न किया और श्रीकृष्ण से युद्ध के दौरान उन के सहयोग व अपने प्राण की रक्षा का वरदान पा लिया।

बाणासुर की एक पुत्री उषा थी। उषा से विवाह के लिए कई राजा आये किन्तु बाणासुर सब को अपमानित कर भगा देता था। एक दिन उषा ने स्वप्न में एक सुन्दर राजकुमार देखा और मन-ही-मन उस से प्रेम करने लगी। यह बात सखी चित्रलेखा को बतायी। चित्रलेखा मायावी थी जो सुन्दर कलाकृति बनाती थी। उस ने माया से उषा की आँखों में झाँका और स्वप्न-दृश्यों को देखकर उस राजकुमार का चित्र बना दिया। चित्रलेखा ने कहा कि यह चित्र श्रीकृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध का है। उषा के आग्रह पर चित्रलेखा ने माया के बल पर द्वारिका से अनिरुद्ध को अदृश्य कर उषा के सामने प्रकट कर दिया। तब दोनों ने ओखिमठ नायक स्थान (केदारनाथ के पास) में विवाह किया, जहाँ आज भी उषा-अनिरुद्ध नाम से एक मन्दिर है। बाणासुर ने अनिरुद्ध और उषा को कैद कर लिया।

अन्ततः श्रीकृष्ण और बलराम ने बाणासुर पर हमला कर दिया। भयंकर युद्ध हुआ। बाणासुर की तरफ से भगवान शिव भी श्रीकृष्ण से युद्ध किये। श्रीकृष्ण ने बाणासुर के छियानबे हाथों को काट डाले। तब बाणासुर ने उषा-अनिरुद्ध का विवाह कर दिया और सब सुखी-सुखी रहने लगे।

बाणासुर का राज्य विस्तार

बाणासुर को अधिकतर ग्रन्थों में शोणितपुर का शासक बताया गया है। पर, कुछ ग्रन्थों में उस के शासन क्षेत्र का विस्तार भी बताया गया है। उत्तर में बामसू (वर्तमान उत्तराखण्ड का लमगौन्दी), मध्य भारत में बाणपुर (मध्यप्रदेश) में भी बाणासुर का राज था। बाणासुर बामसू में रहता था। बाणासुर को आज भी उत्तराखण्ड के कुछ गाँवों में पूजा जाता है। बाणासुर का राज्य विस्तार वर्तमान उत्तराखण्ड में भी था। अतः बाणासुर के नाम से एक पर्वत ह्यवारणावत पर्वतहृ उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी जिले में भी है। जिस प्रकार बराबर पहाड़ी पर सिद्धेश्वरनाथ शिवलिंग हैं, वैसे ही वारणावत पर्वत पर विमलेश्वर महादेव का

मन्दिर है।

शिवभक्त बाणासुर से सम्बन्धित ह्यवारणावतहृ नाम का स्थान भी है जो ग्रन्थ में प्रसिद्ध है। ह्यमहाभारतहृ के अनुसार, वारणावत में ही पाण्डवों को जलाकर भस्म कर देने के लिए दुर्योधन ने लाक्षागृह बनवाया था। युधिष्ठिर ने जिन पाँच ग्रामों को युद्ध से पूर्व दुर्योधन से माँगा था, उन में से एक वारणावत भी था। महाभारत के आदिपर्व में वर्णन है कि वारणावत में शिवोपासना से सम्बन्धित भारी मेला लगता था, जिसे ह्यसमाजहृ कहा जाता था। इस प्रकार के ह्यसमाजोंहृ का उल्लेख अशोक के शिलालेख संख्या एक में भी है। माना जाता है कि शिवभक्त बाणासुर यहाँ शिवोपासना से सम्बन्धित मेले का आयोजन करवाता था। वर्तमान उत्तर प्रदेश राज्य के मेरठ जिलान्तर्गत ह्यावरनावाहृ स्थान ही प्राचीन वारणावत है। हिंडन और कृष्ण नदी के संगम पर मेरठ नगर से 15 मील दूर बरनावा स्थित है।

नामकरण

बराबर पहाड़ी का वर्णन ग्रन्थों में ह्याबाणावर्त पर्वतहृ के नाम से है।

यह नामकरण शोणितपुर के राजा बाणासुर के नाम पर पड़ा। कालान्तर में यह अपश्चित्त होकर ह्यावराबर पहाड़हृ हो गया। ऊँचाई कम होने के कारण इसे अब पहाड़ी कहा जाता है- बराबर पहाड़ी।

सात गुफाएँ

बराबर पहाड़ी में सात प्राचीन गुफाएँ हैं। ये विस्तृत प्रकोष्ठों के रूप में निर्मित हैं। तीन गुफाओं में मौर्य वंश के प्रसिद्ध शासक अशोक के अभिलेख अंकित हैं।



बाणासुर की एक पुत्री उषा थी। उषा से विवाह के लिए कई राजा आये किन्तु बाणासुर सब को अपमानित कर भगा देता था। एक दिन उषा ने स्वप्न में एक सुन्दर सुन्दर राजकुमार देखा और मन-ही-मन

उस से प्रेम करने लगी। यह बात सखी चित्रलेखा को बतायी। चित्रलेखा मायावी थी जो सुन्दर कलाकृति बनाती थी। उस ने माया से उषा की आँखों में झाँका और स्वप्न-दृश्यों को देखकर उस राजकुमार का चित्र बना दिया।

बाबा सिद्धेश्वरनाथ



अभिलेख से विदित होता है कि अशोक ने वन और पर्वत के बीच गुफाओं का निर्माण परिभ्रमण करनेवाले भिक्षुओं के ठहराव के लिए करवाया था। बराबर पहाड़ी की दो गुफाएँ अशोक द्वारा शासन के 12वें वर्ष और 19वें वर्ष में भिक्षुओं को दान में दी गयी थीं। तीन गुफाओं का आकार बड़ा है—कर्णचौपार, विश्वज्ञोपड़ी और सुदामा गुफा। गुफा की दीवारें अब भी काफी चिकनी हैं। एक गुफा में अन्दर बैंच की तरह ऊँचा बैठने का स्थान है। बताया जाता है कि उस पर परिवाजक साधु टोली के प्रमुख (गुरु) बैठते थे और शिष्यगण नीचे बैठकर उन से निर्देश लेते या ध्यान करते थे। एक ह्यालोमस ऋषि गुफाहूँ हैं जो लोमस ऋषि से सम्बन्धित हैं।

विशाल गुफा

बड़ी गुफा के अन्दर सूर्य का प्रकाश नहीं पहुँचता। ऐसे में यह शोध का विषय है कि आखिर राजा अशोक के समय धुआँरहित वह कौन-सी प्रकाश व्यवस्था थी, जिस के प्रकाश में गुफा के अन्दर की निर्माण प्रक्रिया पूरी की गयी।

यहाँ मैं ने एक अधूरे निर्माणवाला गुफा भी देखा। प्रवेश द्वार से दो-तीन फीट तक गुफा की आन्तरिक दीवारें चिकना कर दी गयी हैं और शेष भाग पर पत्थर काटे जाने के निशान बरकरार हैं। इन के बारे में कहा जाता है कि निर्माण के दौरान अशोक के शासन काल की समाप्ति हो गयी और गुफा अधूरी रह गयी।

मनोरम वातावरण

यहाँ मनोरम व प्रदूषणहित वातावरण है। प्राकृतिक छटाओं से परिपूर्ण बराबर पहाड़ी पर्यटकों को आकर्षित करती है। यहाँ वर्षभर पर्यटकों की भीड़ लगी रहती है। बराबर पहाड़ी की प्राकृतिक वादियाँ, पाताल गंगा, नौका विहार, ऐतिहासिक व पुरातात्त्विक महत्ववाली गुफाएँ और झरना पर्यटकों को खूब आकर्षित करती हैं। झरने का जल अत्यन्त शुद्ध है, जिसे यहाँ के लोग पीते हैं।

बराबर पहाड़ी की चोटी पर भगवान शिव सिद्धेश्वर शिवलिंग के रूप में विराजमान हैं। बाबा सिद्धेश्वरनाथ का मन्दिर काफी लोकप्रिय है।

यहाँ सालों भर जलाभिषेक करने के लिए दूर-दूर से श्रद्धालु आते हैं। शिवपुराण में कहा गया है कि भगवान शिव के नौ रूपों में सिद्धनाथ का सर्वोच्च स्थान है। यह साधना का महत्वपूर्ण स्थान है। सिद्धेश्वरनाथ या सिद्धनाथ मन्दिर के गर्भ गृह का प्रवेश द्वार छोटा है, जिस में झुककर अन्दर जाना पड़ता है। शिवलिंग के अलावा यहाँ आदिशक्ति का दुर्गा रूप और हनुमान की प्रतिमाएँ स्थापित हैं। पहाड़ी के नीचे भी एक मन्दिर स्थानीय श्रद्धालुओं ने दशकों पूर्व स्थापित की है।

पहाड़ी के अन्दर मन्दिर

कहा जाता है कि बाणासुर ने बराबर पहाड़ी के अन्दर शिवलिंग स्थापित किया था। वह उस शिवलिंग की पूजा प्रतिदिन करने आता था। पहाड़ी के एक छोर से अन्दर की तरफ विशाल गुफा है जो जंगलों से अटा पड़ा है। यही अन्दर जाने का रास्ता है, जहाँ बाणासुर द्वारा स्थापित शिवलिंग है। अन्दर अब तक किसी के जाने का प्रमाण नहीं मिला है।

आये थे श्रीकृष्ण संग पाण्डव

कहा जाता है कि अज्ञातवास के दौरान युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव (पाण्डव) के साथ भगवान श्रीकृष्ण बराबर पहाड़ी के क्षत्र में आये थे। परिभ्रमण के दौरान श्रीकृष्ण को प्यास लगी। तब अर्जुन ने धरती में तीर मारकर भूर्भु जल को प्रकट किया। यहाँ अर्जुन ने तीर चलाया था, पहाड़ी पर वह स्थान आज भी गड्ढे के रूप में बरकरार है। पाताल गंगा के झरने का जल अब भी अत्यन्त शुद्ध है, जिसे पेयजल के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

टुकड़ों में बैंटी पहाड़ी

सुविधाएँ विकसित

सरकार द्वारा इस स्थल को अन्तरराष्ट्रीय पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के लिए कई तरह की आधुनिक सुविधाएँ बहाल करायी गयी हैं। अब पाताल गंगा के निकट अत्याधुनिक संग्रहालय बनाया गया है। साथ ही कैफिटेरिया, सुदामा मार्केट कॉम्प्लेक्स, जल नौकाओं की सुविधा, अतिथिशाला और बाबा सिद्धनाथ मन्दिर तक जाने-आने के लिए सीढ़ियों का निर्माण श्रद्धालुओं के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र है।

पहुँच पथ

बिहार की राजधानी पटना से बराबर पहाड़ी की दूरी सड़क मार्ग से करीब 65 किलोमीटर है। भाड़े की गाड़ी या अपनी गाड़ी से यहाँ पहुँचा जा सकता है। रेलमार्ग से आने के लिए पटना जंक्शन से बैंसी ट्रेन को पकड़ें जो पटना-गया रेलमार्ग से जाती हो और बेलांगंज स्टेशन या बराबर हॉल्ट पर रुकती हो। यहाँ उत्तरकर भाड़े की गाड़ी से बराबर पहाड़ी तक पहुँच सकते हैं। यहाँ ठहरने के लिए सरकारी अतिथिशाला बना है। यहाँ खाने-पीने के सामान उचित मूल्य पर उपलब्ध हैं।

“ “

सरकार द्वारा दस्तावेजों को डिजिटल करने के तहत सन 2015 में

इसे आनलाइन किया गया। जबकि इसके शोध और प्रकाशन के लिए उस समय 6000 रुपये सरकार की ओर से

प्रति गजेटियर रकम उपलब्ध कराई

गई थी। वाराणसी गजेटियर में लगभग 20 अलग अलग विषय शामिल हैं। काशी को आनंदवन एंव वाराणसी नाम से भी जाना जाता है। इसकी महिमा का आख्यान स्वयं भगवान विश्वनाथ ने एक बार भगवती पार्वती जी से किया था।

शक्ति रूप में विराजमान है बाबा विश्वनाथ



काशी विश्वनाथ ज्योतिलिंग दो भागों में बंटा हुआ है। ज्योतिलिंग के दाहिने भाग में शक्ति के रूप में मां भगवती, तो दूसरी तरफ भगवान शिव वाम रूप (सुंदर) रूप में विराजमान हैं। अर्थात् इस ज्योतिलिंग में शिव और शक्ति दोनों एक साथ ही विराजते हैं, जो न सिर्फ अद्भुत, अकल्पनीय है बल्कि ऐसा दुनिया में कहीं और देखने को नहीं मिलता है। यही वजह है कि काशी को मुक्ति का धारा भी कहा जाता है। मंदिर में श्रृंगार के समय सारी मूर्तियां पश्चिम मुखी होती हैं। बाबा विश्वनाथ दरबार में गर्भ गृह का शिखर है। इसमें ऊपर की ओर गुंबद श्री यंत्र से मंडित है। तात्त्विक सिद्धि के लिए ये उपस्थुक स्थान माना जाता है। इसे श्री यंत्र-तंत्र साधना के लिए प्रमुख माना जाता है। तंत्र की वृष्टि से चार प्रमुख द्वार इस प्रकार हैं- शांति द्वार, कला द्वार, प्रतिष्ठा द्वार, निवृत्ति द्वार। इन चारों द्वारों का तंत्र में अलग ही स्थान है। पूरी दुनिया में ऐसी कोई जगह नहीं है जहां शिवशक्ति एक साथ विराजमान हो और वहां तंत्र द्वार भी मौजूद हो। बाबा विश्वनाथ काशी में गुरु और राजा के रूप में विराजमान है। वह दिनभर गुरु रूप में काशी में ध्वनि करते हैं। रात्रि नौ बजे जब बाबा का श्रृंगार आरती किया जाता है तो वह राज वेश में होते हैं। यही वजह है कि भगवान शिव को राजराजेश्वर भी कहा जाता है।

सुरेश गांधी

वै से तो ये पूरा जगत शिवमय है। क्योंकि शिव ही इस जगत के आधार हैं। लेकिन काशी के कण-कण में देवत्व की बात कही जाती है। यहां बाबा विश्वनाथ के चमत्कार की ढेरों कहनियां भरी पड़ी हैं। मान्यता है कि जब पृथ्वी का निर्माण हुआ था तब प्रकाश की पहली किरण काशी की ही धरती पर पड़ी थी। तभी से काशी ज्ञान तथा आध्यात्म का केंद्र माना जाता है। धर्मग्रन्थों और पुराणों में भी काशी को मोक्ष की नगरी कहा गया है, जो अनंतकाल से बाबा विश्वनाथ के भक्तों के जयकारों से गूंजती आयी है। कहते हैं सावन में

यहां आकर भोले भंडारी के दर्शन कर जिसने भी रूद्राभिषेक कर लिया, उसकी सभी मुरादें पूरी हो जाती हैं। जीवन धन्य हो जाता है। गंगा में स्नान करने मात्र से सभी पाप धूल जाते हैं। उसके लिए मोक्ष के द्वार खुल जाते हैं। यहां आने भर से ही भक्तों की पीड़ा दूर हो जाती है। तन-मन को असीम शांति मिलती है। क्योंकि यहां स्वयं भगवान शिव विराजते हैं।

देखा जाएं तो तीनों लोकों में न्यारी, धर्म एवं आस्था से जुड़ा शिव की नगरी काशी परित पावनी मां गंगा के टट पर देवादिदेव महादेव की त्रिशूल पर बसी है। यहां साक्षात् बाबा भोलेनाथ मां पार्वती के साथ वास करते हैं, जिन्हें बाबा विश्वनाथ के नाम से जाना जाता है। इहें आनन्दवन, आनन्दकानन, अविमुक्त क्षेत्र तथा काशी आदि अनेक नामों से भी स्मरण किया जाता है। शास्त्रों की मानें तो पूरे दुनिया में काशी मात्र एक स्थल है जहां सावन में शिव के साथ मां पार्वती उदयमान रहते हैं और सबको दर्शन देते हैं। यही कारण है कि द्वादश ज्योतिलिंगों

धर्मग्रन्थों और पुराणों में भी काशी को मोक्ष की नगरी कहा गया है, जो अनंतकाल से बाबा विश्वनाथ के भक्तों के जयकारों से गूंजती आयी है। कहते हैं सावन में यहां आकर भोले भंडारी के दर्शन कर जिसने भी रूद्राभिषेक कर लिया, उसकी सभी मुरादें पूरी हो जाती हैं। जीवन धन्य हो जाता है। गंगा में स्नान करने मात्र से सभी पाप धूल जाते हैं। उसके लिए मोक्ष के द्वार खुल जाते हैं।



में काशी के बाबा विश्वनाथ प्रधान माने गए हैं। देश भर के भक्त मां गंगा का जल लेकर बाबा विश्वनाथ का जलाभिषेक करते हैं। कहते हैं सावन के महीनों में तो एक लोटा जल चढ़ा देने मात्र से मिल जाता है मां पार्वती संग बाबा विश्वनाथ का भी आशीर्वाद। मान्यता है कि भोलेनाथ के यहां जो अपनी इच्छा लेकर आता है, वो खाली हाथ नहीं लौटता। इस मंदिर में स्थापित शिवलिंग 12 ज्योतिलिंगों में सातवां स्थान रखता है। द्वादश ज्योतिलिंगों में काशी विश्वेश्वर (विश्वनाथ) लिंग एक मात्र ऐसा ज्योतिलिंग है जिसके दर्शन मात्र से शेष 11 ज्योतिलिंगों के दर्शन का पुण्य भी प्राप्त होता है। इस ज्योतिलिंग की दर्शन व गंगा स्नान के साथ ही रोजाना सुबह 4 से 6 बजे के बीच दर्शन-पूजन एवं सायंकाल होने वाली गंगा आरती में शरीक होने मात्र से ही श्रद्धालुओं की हर मनोकामनाएं पूरी हो जाती है। यहां जीवन और मौत के चक्र को खत्म कर मोक्ष प्रदान होता है।

इतना ही नहीं, कहते हैं महादेव अपने इस दर पर किसी भी भक्त खाली नहीं लौटने देते हैं। काशी क्षेत्र में कदम रखते ही शिव की शक्ति का, उनकी ख्याति का एहसास होता है। मंदिर का शिखर देवाधिदेव की महिमा का बखान करता है, जहां अपने भव्य रूप में महादेव भक्तों का कल्याण करते हैं। यही वजह है कि उम्मीदों की खाली झोली लिए श्रद्धालु सुबह से ही बाबा विश्वनाथ के दर्शनों के लिए उमड़ने लगते हैं। यहां आने वाले हर श्रद्धालु के मन में ये अटूट विश्वास होता है कि अब उनकी सारी मुश्कियों का अंत हो जाएगा। यहां कोई अपने पापों के प्रायश्चित्त के लिए आता है, तो कोई अपने सुहाग की लंबी आयु की मन्त्र लेकर बाबा की आराधना करता है, तो कोई अपने नैनिहाल को भगवान के दरबार में इस उम्मीद के साथ लेकर आता कि भगवान से उसे लाभे और निरोगी जीवन का आशीर्वाद मिल सके। देश दुनिया की सीमा से परे हर रोज हजारों श्रद्धालु यहां पहुंचते हैं। मंदिर में सबसे पहले भक्तों की भेट भगवान के प्रिय बाहन नंदी से होती है, जिन्हें देखकर ऐसा लगता है माने नंदी भगवान के हर भक्त की अगुवायी कर रहे हों। मंदिर के अंदर पहुंच कर एक अलग ही दुनिया में होने का एहसास होता है, जिस तरफ भी नजर पड़ती है भगवान के चमत्कार का कोई न कोई रूप नजर आता है। भगवान के अद्भुत रूप के श्रृंगार का साक्षी बनने का मौका कोई भी भक्त

गवाना नहीं चाहता।

यहां देवों के देव महादेव का सबसे पहले पंचामृत स्नान कराया जाता है। स्नान के बाद बारी आती है उनके भव्य और अलौकिक श्रृंगार की। शिवलिंग पर चदंस से ऊं अंकित किया जाता है और फिर बेलपत्र अर्पित किया जाता है। शिव भक्ति में दूबे भक्त अपने आराध्य का यह अलौकिक रूप देखते ही रह जाते हैं। उन्हें इस बात का एहसास होने लगता है कि यह जीवन धन्य हो गया। बाबा की पूजा के बाद मंदिर के पुजारी भगवान के हर रूप की आराधना करते हैं, जिसे देखना अपने आप में सौभाग्य की बात है। जाते जाते भक्त भगवान के बाहन नंदी जी से अपनी मन्त्रें भगवान तक पहुंचाने की सिफारिश करना नहीं भूलते, व्यांक भक्तों का मानना है कि उनके आराध्य तक उनकी हर गुहार नंदी जी ही पहुंचाते हैं।

मंदिर की बाबाकट और मंदिर की दीवारों पर की गई शिल्पकारी शिव भक्ति का उत्कृष्ट नमूना है। कहते हैं सृष्टि की रचना के समय भी यह शिवलिंग मौजूद था। ऋग्वेद में भी इसके महत्व का बखान किया गया है। परित पावनी मां गंगा साक्षात् बाबा विश्वनाथ से चंद कदम की दूरी पर बहती हैं। सोमवार का दिन बाबा को बहुत प्रिय है। काशी में मां गंगा के जल से भगवान भोलेनाथ का जलाभिषेक करने से जन्म-जन्मांतर के पापों से मुक्ति मिल जाती है। काशी शिव भक्तों की वो मजिल है जो सदियों से यहां मोक्ष की तलाश में आते रहे हैं। कहते हैं अगर भक्तों के जीवन में ग्रह दशा के कारण परेशानी आ रही है, ग्रहों की चाल ने जीना दूभर कर दिया है तो यहां आकर दर्शन करने के बाद यदि रुद्राभिषेक करा दिया जाए तो भक्तों को ग्रह बाधा से मुक्ति मिल जाती है। स्कंध पुराण में 15000 श्लोकों में काशी विश्वनाथ का गुणगान मिलता है। इससे सिद्ध होता है कि यह मंदिर हजारे वर्ष पुराना है। जो प्रलयकाल में भी लोप नहीं हो सका। कहते हैं काशी पर जब कोई आपदा आनी होती है तो उस समय भगवान शंकर इसे अपने त्रिशूल पर धारण कर लेते हैं। सृष्टि काल आने पर इसे नीचे उतार देते हैं। इसी स्थान पर भगवान विष्णु ने सृष्टि उत्पन्न करने का कामना से तपस्या करके आशुतोष को प्रसन्न किया था और फिर उनके शयन करने पर उनके नाभि-कमल से ब्रह्मा उत्पन्न हुए, जिन्होंने सृष्टि की रचना की। अगस्त्य मुनि ने भी विश्वेश्वर की बड़ी आराधना की थी और इन्हीं की अर्चना से श्रीवशिष्ठजी तीनों लोकों में पुजित हुए तथा राजर्षि विश्वामित्र ब्रह्मणि कहलाये।

दो रूपों में होता है बाबा का दर्शन

काशी ही एक ऐसा तीर्थस्थल है जहां महादेव के दो रूपों का दर्शन होता है। खासियत यह है कि महादेव के दोनों रूपों को बाबा विश्वनाथ के नाम से पुकारा जाता है। पहला दिव्य मंदिर मां गंगा किनारे स्थापित है तो दुसरा काशी हिन्दू विश्व विद्यालय परिसर में। मान्यता है कि अगर कोई भक्त बाबा विश्वनाथ के दरबार में हाजिरी लगाता है तो उसे जन्म-जन्मांतर के चक्र से मुक्ति मिल जाती है। बाबा का आशीर्वाद अपने भक्तों के लिए मोक्ष का द्वार खोल देता है। ऐसी मान्यता है कि एक भक्त को भगवान शिव ने सपने में दर्शन देकर कहा था कि गंगा स्नान के बाद उसे दो शिवलिंग मिलेंगे और जब वो उन दोनों शिवलिंगों को जोड़कर उन्हें स्थापित करेगा तो शिव और शक्ति के दिव्य शिवलिंग की स्थापना होगी और तभी से भगवान शिव यहां मां पार्वती के साथ विराजमान हैं। एक दूसरी मान्यता है कि मां भगवती ने खुद महादेव को यहां स्थापित किया था। सोमवार को चढ़ाए गए जल का पुण्य विशेष फलदायी होता है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय परिसर में मौजूद काशी विश्वनाथ मंदिर कहने को नया है, लेकिन इस मंदिर का भी महत्व

“ ”

इतना ही नहीं, कहते हैं महादेव अपने इस दर पर किसी भी भक्त खाली नहीं लौटने देते हैं। काशी क्षेत्र में कदम रखते ही शिव की शक्ति का, उनकी ख्याति का एहसास होता है। मंदिर का शिखर देवाधिदेव की महिमा का बखान करता है, जहां अपने भव्य रूप में महादेव भक्तों का कल्याण करते हैं। यही वजह है कि उम्मीदों की खाली झोली लिए श्रद्धालु सुबह से ही बाबा विश्वनाथ के दर्शनों के लिए उमड़ने लगते हैं।



उतना ही है जितना पुराने काशी विश्वनाथ का। नए विश्वनाथ मंदिर के बाबत कहा जाता है कि एक बार पेंडिट मदन मोहल मालवीय जी ने बाबा विश्वनाथ की उपासना की, तभी शाम के समय उन्हें एक विशालकाय मूर्ति के दर्शन हुए, जिसने उन्हें बाबा विश्वनाथ की स्थापना का आदेश दिया। मालवीय जी ने उस आदेश को भोले बाबा की आज्ञा समझकर मंदिर का निर्माण कार्य आरंभ करवाया। लेकिन बीमारी के चलते वो इसे पूरा न करा सके। तब मालवीय जी की मंशा जानकर उद्योगपति युगल किशोर बिरला ने इस मंदिर के निर्माण कार्य को पूरा करवाया। मंदिर में लगी देवी-देवताओं की भव्य मूर्तियों का दर्शन कर लोग जहां अपने आप को कृतार्थ करते हैं, वहीं मंदिर के आस-पास आम कुंजों की हरियाली एवं मोरों की आवाज से भक्त भाविभाव हो जाते हैं। इस भव्य मंदिर के शिखर की सर्वोच्चता के साथ ही यहां का आध्यात्मिक, धर्मिक, पर्यावरणीय माहौल दुनियाभर के श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है। विश्वविद्यालय के प्रांगण में होने के कारण खासकर युवा पोढ़ी के लिए यह मंदिर विशेष आकर्षण का केंद्र बन चुका है।

मां पार्वती संग विराजते हैं बाबा विश्वनाथ

वैसे तो काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग के संबंध में कई पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं। एक कथानुसार जब भगवान शंकर पार्वती जी से विवाह करने के बाद कैलाश पर्वत रहने लगे तब पार्वती जी इस बात से नाराज रहने लगीं। उन्होंने अपने मन की इच्छा भगवान शिव के सम्मुख रख दी। अपनी प्रिया की यह बात सुनकर भगवान शिव कैलाश पर्वत को छोड़ कर देवी पार्वती के साथ काशी नगरी में आकर रहने लगे। इस तरह से काशी नगरी में आने के बाद भगवान शिव यहां ज्योतिर्लिंग के रूप में स्थापित हो गए। तभी से काशी नगरी में विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग ही भगवान शिव का निवास स्थान बन गया। माना यह भी जाता है कि काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग किसी मनुष्य की पूजा, तपस्या से प्रकट नहीं हुआ, बल्कि यहां निराकार परमेश्वर ही शिव बनकर विश्वनाथ के रूप में साक्षात प्रकट हुए।

सूर्य की पहली किरण पड़ती है काशी में

वाराणसी विश्व के प्राचीनतम शहरों में से एक है। दुनियाभर में यह भारत की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में सुरोधित है। काशी के हृदय में बसा है भगवान काशी विश्वनाथ का मंदिर जो प्रभु शिव, विश्वेश्वर या विश्वनाथ के प्रमुख ज्योतिर्लिंगों में से एक माना जाता है। स्त्री हो या पुरुष, युवा हो या प्रौढ़, हर कोई यहाँ पर मोक्ष की प्राप्ति के लिए जीवन में एक बार अवश्य आता है। यहाँ पर आने वाला हर श्रद्धालु भगवान विश्वनाथ को अपनी ईष्ट इच्छा समर्पित करता है। ऐसा माना जाता है कि जब पृथ्वी का निर्माण हुआ था तब प्रकाश की पहली किरण

काशी की धरती पर पड़ी थी। तभी से काशी ज्ञान तथा आध्यात्म का केंद्र माना जाता है। धर्मग्रन्थों और पुराणों में भी काशी को मोक्ष की नगरी कहा गया है, जो अनंतकाल से बाबा विश्वनाथ के भक्तों के जयकारों से गूँजती आयी है। शिव भक्तों की ओर मंजिल है जो सदियों से यहां मोक्ष की तलाश में आते रहे हैं। क्योंकि काशी में बसता है देवाधिदेव महादेव का पूरा परिवार। वैसे भी जहां देवगण विराजते हैं और गंगा की धार बहती है, वो परमतीर्थ ही कहलाता है। यहां आने भर से ही भक्तों की पीढ़ी दूर हो जाती है। तन-मन को असीम शांति मिलती है। मान्यता है कि अगर कोई भक्त बाबा विश्वनाथ के दरबार में हाजिरी लगाता है तो उसे जन्म-जन्मान्तर के चक्र से मुक्ति मिल जाती है। बाबा का आशीर्वाद अपने भक्तों के लिए मोक्ष का द्वार खोल देता है।

पौराणिक मान्यता

ज्योतिर्लिंग को अनादि सिद्ध निविड़ कहा गया है। समस्त भारत में द्वादश ज्योतिर्लिंग की आराधना का व्यापक प्रभाव है। द्वादस ज्योतिर्लिंगों में छठवें विश्वेसर, जो कि बाबा विश्वनाथ के नाम से विश्वनाथ गली में है। यहां हौज कटोरा बांसफाटक स्थित त्रयंबकेश्वर मंदिर, केदारघाट स्थित केदारेश्वर मंदिर, सिंगरा स्थित मल्लिकार्जुन मंदिर सहित कई इलाकों में द्वादस ज्योतिर्लिंग हैं, जिनकी पूजा अर्चना करके शिवभक्त अपना जीवन सार्थक व पूण्य अर्जित कर सकते हैं। नरहरपुरा-ईश्वरगंगी स्थित जागेश्वर महादेव की महिमा कुछ अलग ही है। कहा जाता है कि हर शिवरात्रि पर यह स्वयंभूलिंग एक जौ के बराबर बढ़ता है। औरंगजेब सैनिकों ने जब तलवार से हमला किया था तो खून की धार बहने लगी।

“ ”

मालवीय जी ने उस आदेश को भोले बाबा की आज्ञा समझकर मंदिर का निर्माण कार्य आरंभ करवाया। लेकिन बीमारी के चलते वो इसे पूरा न करा सके। तब मालवीय जी की मंशा जानकर उद्योगपति युगल किशोर बिरला ने इसे

मंदिर के निर्माण कार्य को पूरा करवाया। मंदिर में लगी देवी-देवताओं की भव्य मूर्तियों का दर्शन कर लोग जहां अपने आप को कृतार्थ करते हैं, वहीं मंदिर के आस-पास आम कुंजों की हरियाली एवं मोरों की आवाज से भक्त भाविभाव हो जाते हैं।

श्री इस लिंग से और अंग्रेजों की आंखे खुली की खुली रह गयी। शैव सम्प्रदाय में ज्योतिर्लिंग की उपासना को सर्वोपरि माना गया है। पूर्व प्रचलित रुद्र, सरूत, इंद्र, वरुण अग्नि आदि की उपासना का रूपांतरण शिवोपासना में हो गया। इसी परंपरा में शैव सम्प्रदाय की स्थापना हुई। साथ ही शिव के कापालिक रूप को भी लोकप्रियता मिली। लिंग पूजा के प्रचलन के पूर्व ही सिधु घाटी सभ्यता के अवशेषों में योगमूर्तिधर के स्वरूप की उपस्थिति मिलती है, जिससे रुद्र को शिव के रूप में संबोधित करने की सुविधा मिली। शिवोपासना की परंपरा कश्मीर से लेकर कन्या कुमारी तक फैलती गयी। खास कर काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग की उपासना का महत्व मोक्ष, रोगमुक्ति व कामनाओं की पूर्ति से है। वैदिक युग व उत्तर वैदिक युग में किसी प्रकार का अनुष्ठान कामनाओं की पूर्ति एवं स्वास्थ्य लाभ के लिए व्यवहरित था। भारत में जगन्नाथपुरी, भुवनेश्वर, वैद्यनाथ, केदारनाथ, अमरनाथ व काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग को सर्वाधिक लोक प्रसिद्ध प्राप्त हुई।

ऋषि-मुनियों की तपोस्थली रही काशी

काशी आदिकाल से ऋषि-मुनियों की तपोभूमि रहा है। यहां का वातावरण इतना सुरम्य है कि महज तीर्थयात्रियों का ही नहीं बल्कि प्रकृति प्रेमियों का भी तांता लगा रहता है। यह मंदिर हजारों साल पुराना है। इस ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने के लिए आदि शंकराचार्य, सन्त एकनाथ रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, महर्षि दद्यानंद, गोस्वामी तुलसीदास सभी का आगमन हुआ है। यहीं सन्त एकनाथजी ने वारकरी सम्प्रदाय का महान ग्रन्थ श्री एकनाथी भागवत लिखकर पुरा किया। काशी नरेश तथा विद्रुतजनोद्वारा उस ग्रन्थ कि हाथी पर से शोभायात्रा खुब धुमधाम से निकाली गयी। शास्त्रों में मिलता है कि वर्तमान के विशेश्वरगांज में दिव्य ज्योति साक्षात् बाबा विश्वनाथ के रूप में दिखाई पड़ती थी। इसीलिए आदिलिंग के रूप में अविमुक्तेश्वर को ही प्रथम लिंग माना गया है। इसका उल्लेख महाभारत और उपनिषद में भी किया गया है।

मंदिर पर औरंगजेब का हमला

बादशाह अकबर के बाद टोडरमल ने मंदिर का पुनर्निर्माण 1558 में करवाया था। 1669 में औरंगजेब ने आक्रमण कर इस मंदिर को क्षति पहुंचाई थी। 1777 में इंदौर की राजकुमारी अहिल्या बाई द्वारा इस मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया गया था। बाद में महाराजा रंजीत सिंह द्वारा 1853 में 1000 कि.ग्रा शुद्ध सोने द्वारा मढ़वाया गया। 1983 में उत्तरप्रदेश सरकार ने इसका प्रबंधन अपने हाथ में ले लिया और पूर्व काशी नरेश विभूति सिंह को इसके द्रस्ती के रूप में नियुक्त किया।

ब्रह्मा ने की थी शिव का स्वागत





कहते हैं कि प्रलयकाल में भी इस शिलिंग का लोप नहीं होता। उस समय भगवान शंकर इसे अपने त्रिशूल पर धारण कर लेते हैं और सृष्टि काल आने पर इसे नीचे उतार देते हैं। यही नहीं, आदि सृष्टि स्थली भी यहीं भूमि बतलायी जाती है। इसी स्थान पर भगवान विष्णु ने सृष्टि उत्पन्न करने का कामना से तपस्या करके आशुतोष को प्रसन्न किया था और फिर उनके शयन करने पर उनके नाभि-

कमल से ब्रह्मा उत्पन्न हुए, जिन्होंने संसार की रचना की। अगस्त्य मुनि ने भी विश्वेश्वर की बड़ी आराधना की थी और इन्हीं की अर्चना से श्रीवशिष्ठ जी तीनों लोकों में पुजित हुए तथा राजर्षि विश्वामित्र ब्रह्मर्षि कहलाये। नारद पुराण में अंकित है-

वाराणसीतु भुवनत्रया सारभूत, रम्या नृनाम सुगतिदाखिल सेव्यामना। अत्रगाता विविधा दुष्कृतकारिणोपि, पापाद्यै वृजासहा सुमनप्रकाशशः॥

यह भी माना जाता है कि निर्वासन में कई साल बिताने के पश्चात भगवान शिव इस स्थान पर आए थे और कुछ समय तक काशी में निवास किया था। ब्रह्माजी ने उनका स्वागत दस घोड़ों के रथ को दशाश्वमेघ घाट पर भेजकर किया था। गंगा तट पर सँकरी विश्वनाथ गली में स्थित विश्वनाथ मंदिर कई मंदिरों और पीठों से दिखा हुआ है। यहां पर एक कुआँ भी है, जिसे ज्ञानवापी की संज्ञा दी जाती है, जो मंदिर के उत्तर में स्थित है। विश्वनाथ मंदिर के अंदर एक मंडप व गर्भगृह विद्यमान है। गर्भगृह के भीतर चाँदी से मढ़ा भगवान विश्वनाथ का 60 सेंटीमीटर ऊंचा शिवलिंग विद्यमान है। यह शिवलिंग काले पत्थर से निर्मित है। हालांकि मंदिर का भीतरी परिसर इतना व्यापक नहीं है, परंतु वातावरण पूरी तरह से शिवमय है। पौराणिक मान्यताओं की माने तो काशी विश्वनाथ मंदिर का इतिहास युगो-युगांतर से है। काशी विश्वनाथ मंदिर को विश्वेश्वर नाम से भी जाना है। विश्वेश्वर शब्द का अर्थ होता है ह्यब्रह्मांड का शासकङ्ग। कहा जाता है कि इस मंदिर का दोबारा निर्माण 11 वीं सदी में राजा हरीशचन्द्र ने करवाया था। 1194 ईसवी में मुहम्मद गौरी ने इसे ध्वस्त कर दिया था। परंतु मंदिर का पुन निर्माण करवाया गया लेकिन 1447 ईसवी में इसे एक बार फिर जौनपुर के सुल्तान महमूद शाह ने तुड़वा दिया। इतिहास के पन्नों में ज्ञाकने पर यह ज्ञात होता है कि काशी मंदिर के निर्माण और तोड़ने की घटनाएं 11वीं सदी से लेकर 15वीं सदी तक चलती रही। 1585 में राजा टोटेडरमल की मदद से पंडित नारायण भट्ट ने विश्वनाथ मंदिर का एक बार फिर से निर्माण करवाया लेकिन एक बार फिर 1632 में शाहजहां ने मंदिर का विध्वंस करने के लिए अपनी सेना भेजी लेकिन सेना अपने मकसद में कामयाब नहीं हो पाई। इसके बाद औरंगजेब ने 18 अप्रैल 1669 में इस मंदिर को ध्वस्त करा दिया। इसके बाद करीब 125 साल तक वहां कोई मंदिर नहीं था। वर्तमान में जो बाबा विश्वनाथ मंदिर स्थित है उसका निर्माण महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने 1780 में करवाया था। बाद में महाराजा रणजीत सिंह ने 1853 में 1000 किलोग्राम सोना दान दिया था। इस मंदिर में दर्शन करने के लिए आदि शंकराचार्य, संत एकनाथ, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, महर्षि दयानंद, गोस्वामी तुलसीदास भी आए थे। कहा जाता है कि मस्जिद मंदिर की ही मूल जगह पर बनाई गई है। कहा जाता है औरंगजेब बनासर से गुजर रहे थे। सभी हिन्दू दरबारी अपने परिवार के साथ गंगा स्नान और विश्वनाथ दर्शन के लिए काशी आए। विश्वनाथ दर्शन कर जब लोग बाहर आए तो पता चला कि कच्छ के राजा की एक रानी गायब हैं। जब उनकी खोज की गई तो मंदिर के नीचे तहखाने में वस्त्राभूषण विहीन, भय से त्रस्त रानी दिखाई पड़ी। जब औरंगजेब को पंडों की यह काली करतूत पता चली तो वह बहुत क्रुद्ध हुआ और बोला कि जहां मंदिर के गर्भ गृह के नीचे इस प्रकार की डकैती और बलात्कार हो, वो निस्सदेह ईश्वर का घर नहीं हो सकता। उसने मंदिर को तुरंत ध्वस्त करने का आदेश जारी कर दिया। औरंगजेब के आदेश का तत्काल पालन हुआ लेकिन जब यह बात कच्छ की रानी ने सुनी तो उन्होंने उसके पास संदेश भिजवाया कि इसमें मंदिर का क्या दोष है, दोषी तो वहां के पंडे हैं। रानी ने इच्छा प्रकट की कि मंदिर

यह भी माना जाता है कि निर्वासन में कई साल बिताने के पश्चात भगवान शिव इस स्थान पर आए थे और कुछ समय तक काशी में निवास किया था। ब्रह्माजी ने उनका स्वागत दस घोड़ों के रथ को

दशाश्वमेघ घाट पर भेजकर किया था। गंगा तट पर सँकरी विश्वनाथ गली में स्थित विश्वनाथ मंदिर कई मंदिरों और पीठों से दिखा हुआ है। यहां पर एक कुआँ भी है, जिसे ज्ञानवापी की संज्ञा दी जाती है, जो मंदिर के उत्तर में स्थित है। विश्वनाथ मंदिर के अंदर एक मंडप व गर्भगृह विद्यमान है।



का पुनः निर्माण करवाया जाए। लेकिन औरंगजेब के लिए अपने धार्मिक विश्वास के कारण, फिर से नया मंदिर बनवाना असंभव था, इसलिए उसने मंदिर की जगह मस्जिद खड़ी करके रानी की इच्छा पूरी की। कुछ मान्यताओं के अनुसार अकबर ने 1585 में नए मजहब दीन-ए-इलाही के तहत विश्वनाथ मंदिर और ज्ञानवापी मस्जिद बनवाई थी। मस्जिद और विश्वनाथ मंदिर के बीच 10 फीट गहरा कुआं है, जिसे ज्ञानवापी कहा जाता है। इसी कुएं के नाम पर मस्जिद का नाम पड़ा। स्कंद पुराण के अनुसार भगवान शिव ने स्वयं लिंगाभिषेक के लिए अपने त्रिशूल से ये कुआं बनाया था। शिवजी ने यहीं अपनी पत्नी पार्वती को ज्ञान दिया था, इसलिए इस जगह का नाम ज्ञानवापी या ज्ञान का कुआं पड़ा। किंवदत्तियों, आम जनमानस की मान्यताओं में यह कुआं सीधे पौराणिक काल से जुड़ता है। विश्वनाथ मंदिर का प्रमुख शिवलिंग 60 सेंमी लंबा और 90 सेंमी की परिधि में है। मुख्य मंदिर के आसपास काल-भैरव, कर्तिकेय, विष्णु, गणेश, पार्वती और शनि के छोटे-छोटे मंदिर हैं। मंदिर में 3 सोने के गुंबद हैं, जिन्हें 1839 में पंजाब

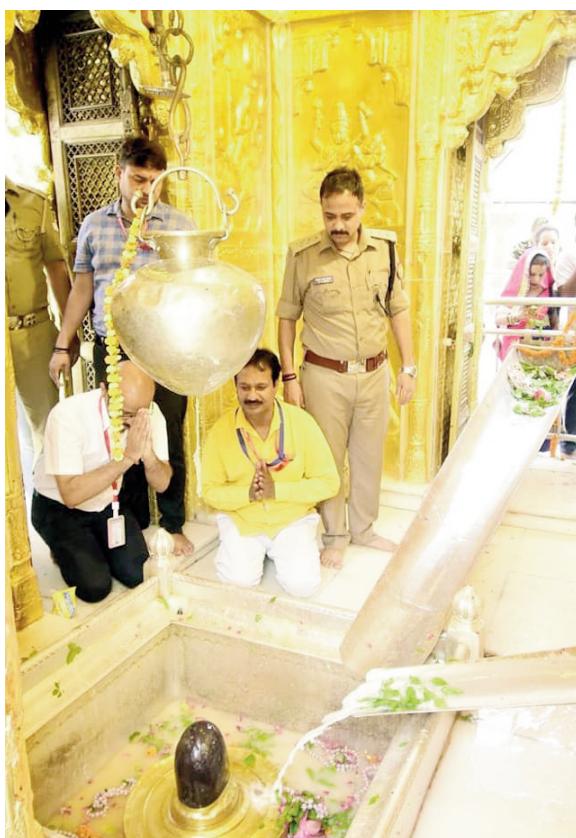
के महाराजा रणजीत सिंह ने लगवाया था।

होती है मोक्ष की प्राप्ति

सर्वतीर्थमयी एवं सर्वसंतापहारिणी मोक्षदायिनी काशी की महिमा ऐसी है कि यहां प्राणत्याग करने से ही मुक्ति मिल जाती है। भगवान भोलानाथ मरते हुए प्राणी के कान में तारक-मंत्र का उपदेश करते हैं, जिससे वह आवगमन से छुट जाता है, चाहे मृत-प्राणी कोई भी क्यों न हो। मतस्यपुराण का मत है कि जप, ध्यान और ज्ञान से रहित एवं दुखों परिपेड़ित जनों के लिये काशीपुरी ही एकमात्र गति है। काशी में अनेक विशिष्ट तीर्थ हैं, जिनके विषय में लिखा है- विश्वेशं माधवं द्वुष्ठं दण्डपाणिं च भैरवः। वन्दे काशीं गुहां गंगा भवानीं मणिकर्णिकाः॥ अर्थात् ह्यविश्वेश्वर ज्योतिलिंगं बिन्दुमाधव, द्वुष्ठराज गणेश, दण्डपाणि कालभैरव, गुहा गंगा (उत्तरवाहिनी गंगा), माता अन्नपूर्णा तथा मणिकर्णिक आदि मुख्य तीर्थ हैं। और इहीं से युक्त यह अविमुक्त क्षेत्र कहा जाता है। काशी के उत्तर में ओंकारखण्ड, दक्षिण में केदारखण्ड और मध्य में विश्वेश्वरखण्ड में ही बाबा विश्वनाथ का प्रसिद्ध है। कहते हैं मन्दिर की पुनः स्थापना आदि जगत गुरु शंकरचार्य जी ने अपने हाथों से की थी। श्री विश्वनाथ मंदिर को मुगल बादशाह औरंगजेब ने नष्ट करके उस स्थान पर मस्जिद बनवा दी थी, जो आज भी विद्यमान है। इस मस्जिद के परिसर को ही ज्ञानवापी कहा जाता है। प्राचीन शिवलिंग आज भी ज्ञानवापी कहा जाता है। काशी की भूमि ताउप्र हिंदुओं के लिए परम तीर्थ स्थान कहा गया है। दुनिया में काशी सबसे पुराना जीवित शहर है। कहा तो यहां तक जाता है कि जिसकी काशी की भूमि पर मृत्यु हुई, उसे फिर से जन्म के चक्र से मुक्ति और स्वतंत्रता प्राप्त होती है। मां गंगा के लिए कहा जाता है कि यहां लोग अपने पापों को धोने के लिए आते हैं।

आरती व पूजा-अर्चना

यह मंदिर प्रतिदिन 2.30 बजे भौर में मंगल आरती के लिए खोला जाता है



“ कुछ मान्यताओं के अनुसार अकबर ने 1585 में नए मजहब दीन-ए-इलाही के तहत विश्वनाथ मंदिर और ज्ञानवापी मस्जिद बनवाई थी। मस्जिद और विश्वनाथ मंदिर के बीच 10 फीट गहरा कुआं है, जिसे ज्ञानवापी कहा जाता है। इसी कुएं के नाम पर मस्जिद का नाम पड़ा। स्कंद पुराण के अनुसार भगवान शिव ने स्वयं लिंगाभिषेक के लिए अपने त्रिशूल से ये कुआं बनाया था।



जो सुबह 3 से 4 बजे तक होती है। दर्शनार्थी टिकट लेकर इस आरती में भाग ले सकते हैं। तत्पश्चात् 4 बजे से सुबह 11 बजे तक सभी के लिए मंदिर के द्वारा खुले होते हैं। 11.30 बजे से दोपहर 12 बजे तक भोग आरती का आयोजन होता है। 12 बजे से शाम के 7 बजे तक पुनः इस मंदिर में सार्वजनिक दर्शन की व्यवस्था है। शाम 7 से 8.30 बजे तक सप्तऋषि आरती के पश्चात रात के 9 बजे तक सभी दर्शनार्थी मंदिर के भीतर दर्शन कर सकते हैं। 9 बजे के पश्चात मंदिर परिसर के बाहर ही दर्शन संभव होते हैं। अंत में 10.30 बजे रात्रि से शयन आरती प्रारंभ होती है, जो 11 बजे तक संपन्न होती है। चढ़ावों में चढ़ा प्रसाद, दूध, कपड़े व अन्य वस्तुएँ गरीबों व जरूरतमंदों में बाँट दी जाती हैं। यहां वर्षों तक बाबा की आरती और भोग प्रसाद के समय नगाड़ा और शहनाई बजाने की परंपरा थी। अब विशेष अवसरों पर नौबतखाने में शहनाईवादन कराया जाता है।

इस मंत्र से नहीं होती अकाल मौत

प्रदोष काल में स्फटिक शिवलिंग को शुद्ध गंगा जल, दूध, दही, धी, शहद और शक्कर से स्नान व धूप-दीप जलाकर ३० तत्पुरुषाय विदारे महादेवाय धीमहि तन्मो रूद्रः प्रचोदयात्, मंत्र का जाप करने से समस्त बाधाओं का शमन होता है। महामृत्युंजय मंत्र ह्याऽऽ॒ त्रयम्बकं यजामहे सुर्गाधिम पुष्टीवर्धनम्। उवार्कुमिभ बंधनान मृत्योर मुक्षीय मामृतात् ह्ल का जाप रुद्राक्ष की माला से करने से मिलता है सभी तरह के बीमरियों व अकाल मौतों होती है रक्षा। प्राचीन ग्रंथों के अनुसार इस सृष्टि से पहले सत और असत नहीं थे केवल भगवान शिव थे। तीनों लोकों की अपार सुंदरी तथा शीलवती गौरां को अथर्वगी बनाने वाले शिव प्रेतों और पिशाचों से छिरे रहते हैं।

उनका रूप बड़ा अजीब है। शरीर पर मसानों की भस्म, गले में सर्पों का हार, कंठ में विष, जटाओं में जगत्-तारिणी पावन गंगा तथा माथे में प्रलयकार ज्वाला उनकी पहचान है। बैल को वाहन के रूप में स्वीकार करने वाले शिव अमंगल रूप होने पर भी भक्तों का मंगल करते हैं और श्री-संपत्ति प्रदान करते हैं। सावन में भगवान भोलेनाथ की पूजा जीव मात्र के लिए महान उपलब्धि प्राप करने का दिन भी है। बताया जाता है कि जो प्राणि मात्र इस दिन परम सिद्धिदायक उस महान स्वरूप की उपासना करता है वह परम भाग्यशाली होता है। इसके बारे में संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी ने मर्यादा पुरोहेतम् भगवान राम के मुख्यरविन्द से कहलवाया है कि शिवद्वाही मम दास कहावा, सो नर सपनेहु मोहि नहिं भावा अथात् जो शिव का द्रोह कर के मुझे प्राप करना चाहता है वह सपने में भी मुझे प्राप नहीं कर सकता।

इसीलिए श्रावण मास में शिव आराधना के साथ श्रीरामचरितमानस पाठ का बहुत महत्व होता है। शिव की महत्ता को शिवसागर में और ज्यादा विस्तृत रूप में देखा जा सकता है। शिवसागर में बताया गया है कि विविध शक्तियाँ, विष्णु एवं ब्रह्मा जिसके कारण देवी और देवता के रूप में विराजमान हैं, जिसके कारण

जगत् का अस्तित्व है, जो यंत्र हैं, मंत्र हैं। ऐसे तंत्र के रूप में विराजमान भगवान शिव को नमस्कार है। दक्षिण भारत का प्रसिद्ध और परमादर्शीय ग्रन्थ नटराजम भगवान शिव के सम्पूर्ण आलोक को प्रसुत करता है। इसमें लिखा गया है कि मधुमास अर्थात् चैत्र माह के पूर्व अर्थात् फाल्गुन मास की चर्तुदशी को प्रपूजित भगवान शिव कुछ भी देना शेष नहीं रखते हैं। इसमें बताया गया है कि त्रिपथगामिनीहू गंगा जिनकी जटा में शरण एवं विश्राम पाती हैं, त्रिलोक अर्थात् आकाश, पाताल एवं मृत्युलोक वासियों के त्रिकाल यानी भूत, भविष्य एवं वर्तमान को जिनके त्रिनेत्र त्रिगुणात्मक बनाते हैं।

पुर्निमाण

मुलांकों के काल में काशी विश्वनाथ मंदिर को कई बार लूटा गया था। हालांकि मुगल सम्प्राट अकबर ने मूल मंदिर के निर्माण की अनुमति दी थी, लेकिन उनके परिपाते औरंगजेब ने बाद में मंदिर को नष्ट कर दिया और वहां एक मस्जिद का निर्माण किया। जिसका नाम ज्ञानवापी मस्जिद है। वर्तमान में बना मंदिर का निर्माण इंदौर की रानी महान रानी अहिल्या बाई होल्कर ने करवाया था। कहते हैं कि रानी के सपने में भगवान शिव प्रकट हुए थे। रानी ने इसे मंदिर का पुनर्निर्माण करके और इसके लिए धन प्रदान करके काशी की महिमा को बनाए रखने के लिए इसका निर्माण किया गया। यहां तक कि इंदौर के महाराजा रणजीत सिंह ने भी 15.5 मीटर खंभों के चार सोने के निर्माण के लिए लगभग टन सोने का योगदान दिया था। कहा यह भी जाता है कि जब औरंगजेब द्वारा विनाश की खबर पड़ित के कानों में पड़ी तो उन्होंने शिवलिंग को छिपाने और आक्रमण से बचाने के लिए कुएं में छलांग लगा दी। मंदिर और मस्जिद के अवशेषों के बीच अभी भी कुआं पाया जा सकता है। इस कुएं को ज्ञानवापी यानी ज्ञान के कुएं के नाम से जाना जाता है।

उनका रूप बड़ा अजीब है।

शरीर पर मसानों की भस्म, गले में सर्पों का हार, कंठ में विष, जटाओं में जगत्-तारिणी पावन गंगा तथा माथे में प्रलयकार ज्वाला उनकी पहचान है। बैल को वाहन के रूप में स्वीकार करने वाले शिव अमंगल रूप होने पर भी भक्तों का मंगल करते हैं और श्री-संपत्ति प्रदान करते हैं। सावन में भगवान भोलेनाथ की पूजा जीव मात्र के लिए महान उपलब्धि प्राप्त करने वाले शिव अमंगल रूप होने पर भी भक्तों का मंगल करते हैं और देवी और देवता के रूप में विराजमान हैं।

ओडिशा बालासोर : हादसा लापरवाही या साजिश?



ओडिशा के बालासोर में बहनागा बाजार स्टेशन के पास हुआ हादसा दिल ढहला देने वाला है। दो जून की मनहूस शाम दो-चार नहीं पूर 280 से अधिक लोगों को एक झटके में निगल गयी। लैंकिन बड़ा सवाल तो यह है कि दो ट्रेनें एक ही समय पर एक ही पटरी पर कैसे आ जाती है? दुसरा बड़ा सवाल यह सिर्फ एक हादसा है या रेल अफसरों व कर्मचारियों की लापरवाही है? या फिर कहीं कोई आतंकी बड़ी साजिश तो नहीं? खास बात यह है कि लापरवाही की भी हद होती है। यहां तो कोरोमंडल एक्सप्रेस और मालगाड़ी की टक्कर तो समझ में आता है, तीन ट्रेनों का एक साथ टक्कर होना घोर लापरवाही नहीं तो और क्या है? बहरहाल, यह तो जांच का विषय है। जहां तक लापरवाही की बात है तो प्रथम दृष्ट्या मामला मानवीय भूल या तकनीकी खराबी का सामने आ रहा है। और अगर वार्कइं में यह हादसा मानवीय भूल या तकनीकी खराबी का है तो क्यों न दोषियों के विरुद्ध हत्या का मुकदमा का दर्ज कर कारबाई हो?

सुरेश गांधी

फिरहाल, कटे शरीर, चिपकी बोगियां, चीखते-चिल्लाते लोग, 3 ट्रेनों की धीरण टक्कर में हादसे की जो तस्वीरें सामने आई हैं वह भयावह हैं, उन्हीं से यह अंदेशा हो गया है कि मृतकों का आंकड़ा तीन सौ पार कर लेगा। पहले 30, फिर

50, 70, 120, 207, 233 से बढ़कर 280 तक पहुंच गई है। घायलों की संख्या भी 900 से ज्यादा है। ट्रेन के डिब्बों के मलबे में अभी भी कई शव फंसे हुए हैं। बचाव अभियान में सेना भी शामिल हो गई है। ट्रेन के डिब्बों में खाने-पीने की चीजें, पानी की बोतलें, चप्पल-जूते आदि बिखरे हुए हैं। बता दें, ओडिशा के

“ “

दुसरा बड़ा सवाल यह सिर्फ एक हादसा है या रेल अफसरों व कर्मचारियों की लापरवाही है? या फिर कहीं कोई आतंकी बड़ी साजिश तो नहीं? खास बात यह है कि लापरवाही की भी हद होती है। यहां तो कोरोमंडल एक्सप्रेस और मालगाड़ी की टक्कर तो समझ में आता है, तीन ट्रेनों का एक साथ टक्कर होना घोर लापरवाही नहीं तो और क्या है? बहरहाल, यह तो जांच का विषय है। जहां तक लापरवाही की बात है तो प्रथम दृष्ट्या मामला मानवीय भूल या तकनीकी खराबी का सामने आ रहा है। और अगर वार्कइं में यह हादसा मानवीय भूल या तकनीकी खराबी का है तो क्यों न दोषियों के विरुद्ध हत्या का मुकदमा का दर्ज कर कारबाई हो?

यहां तो कोरोमंडल एक्सप्रेस और मालगाड़ी की टक्कर तो समझ में आता है, तीन ट्रेनों का एक साथ टक्कर होना घोर लापरवाही नहीं तो और क्या है? बहरहाल, यह तो जांच का विषय है। जहां तक लापरवाही की बात है तो प्रथम दृष्ट्या मामला मानवीय भूल या तकनीकी खराबी का सामने आ रहा है।



बालासोर में जिस समय कोरोमंडल एक्सप्रेस हादसे का शिकार हुई, उस समय ट्रेन में लोग नाश्ता कर रहे थे। हादसे के बाद मौके पर चीख-पुकार मच गई। हादसे के समय पैसेंजर्स ने ट्रेन से बाहर निकलने की कोशिश की। हादसे के बाद बोगियों के परखच्चे उड़ गए। बिंडे की कांच को तोड़कर लोगों को बाहर निकाला गया। हादसे के बाद ट्रेन के आगे की कई मीटर तक पटरी गायब हो गई। बोगियां एक-दूसरे पर चढ़ गईं। एक अधिकारी के अनुसार, ट्रेन के कई डिब्बे पटरी से उतर गए और बगल की पटरियों पर जा गिरे। पटरी से उतरे डिब्बे 12841 शालीमार-चेन्नई सेंट्रल कोरोमंडल एक्सप्रेस से टकरा गए और इसके डिब्बे भी पलट गए, अब तक के जांच में बात सामने आ रही है कि सिनल की खराबी की वजह से दो ट्रेनें एक ही पटरी पर आ गईं और उन में टकराए हो गईं।

भारतीय रेलवे में सुविधाओं की बढ़ोत्तरी लगातार जारी है। ट्रेन की सेफ्टी और यात्रियों की सुरक्षा के लिए रेल मंत्रालय लगातार नई-नई तकनीक विकास पर काम कर रहा है। लेकिन सुर्घटना पर फिर भी लगाम नहीं है। साल 2016-17 के बाद इतना बड़ा रेल हादसा हुआ है। पिछले करीब 7 सालों से रेल हादसों पर विराम लग गया था, लेकिन इस हादसे ने रेलवे की सुरक्षा कवच स्कीम पर सवाल खड़े कर दिए हैं। शालीमार-चेन्नई कोरोमंडल एक्सप्रेस (12841) मालगाड़ी से टकरा गई। जिसके बाद ट्रेन के कई डिब्बे पटरी से उतर गए। जानकारी के मुताबिक एक्सप्रेस का इंजन मालगाड़ी के डिब्बे के ऊपर चढ़ गया। जिसमें करीब 18 डिब्बे पटरी से उतर गए, दरअसल चालक ट्रेन को कंट्रोल रूम के निर्देश पर चलाता है और कंट्रोल रूम के निर्देश परियों पर ट्रैफिक को देखकर किया जाता है। देखा जाए तो हर रेलवे कंट्रोल रूम में एक बड़ी सी डिस्प्ले लगी होती है, जिस पर दिख रहा होता है कि कौन सी पटरी पर ट्रेन है और कौन सी पटरी खाली है। हरे और लाल रंग की लाइटों के माध्यम से इसे दिखाया जाता है। जैसा कि अगर किसी पटरी पर कोई ट्रेन है या चल रही है तो वह लाल दिखाएगा और जो पटरी यानी रेलवे ट्रैक खाली है वह हरी लाइट दिखाता है। इसी को देखकर कंट्रोल रूम से लोग लोकोपायलट को निर्देश दिए जाते हैं। लेकिन इस बार जैसा हादसा हुआ उसे देखकर ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है कि डिस्प्ले पर ट्रेन का सिग्नल सही नहीं दिखाई दिया और इसकी वजह से यह हादसा हुआ।

मतलब साफ है अगर यह वाकई लापरवाही है तो कर्मचारियों व अफसरों पर हत्या का मुकदमा तो दर्ज होना ही चाहिए। सीपीआई सांसद बिनोय विश्वम ने कहा है कि, ल्हसरकार का फोकस सिर्फ लंजरी ट्रेनों पर है। आम लोगों की रेलगाड़ियों और पटरियों की उपेक्षा की जाती है। ओडिशा में मौतें उसी का परिणाम हैं। उन्होंने कहा कि रेल मंत्री को इस्तीफा देना चाहिए। देखा जाएं तो हत्याएं और

मौतें बहुत तरह की होती हैं। कुछ करवाई जाती हैं, कुछ हो जाती हैं और कुछ जानबूझ कर कर ली जाती हैं। इसमें जाने, अनजाने, भगवान की मर्जी इत्यादि इत्यादि जैसे शब्द फटाफट सक्रिय हो जाते हैं। लेकिन लापरवाही से हुई हत्याओं को या तो दबा दिया जाता है या फिर आंसू बहा, शोक वक्त कर, श्रद्धांजलि देकर भुला दिया जाता है।

ओडिशा में जो हादसा हुआ है और तीन सौ लोगों ने न सिर्फ जान गवाई है, बल्कि 900 से अधिक लोग अस्पतालों में जीवन और मौत से जुँझ रहे हैं। ऐसे में क्या इसे हम एक दुर्घटना मानकर भूल जायेंगे? जी, बिल्कुल नहीं, इस मामले को सरकार को गंभीरता से लेना ही हागा। लेकिन इन सभी में जो मुश्य बात है वह कभी नहीं होगी न सामने आएगी। लीपापोती में धीरे धीरे फाइलों में दफन हो जायेगी। सजा या तो चालक को मिलेगी या स्टेशन अफसर को या ट्रेन के कल पुर्जों को, या बेचारे ईश्वर को, उसे कभी नहीं जो वास्तव में इस हत्या या हादसे या मौत के पीछे होगा?

सिर्फ प्लानिंग बनते हैं, अमल नहीं

घटना के बाद रेल मंत्री रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने रेल सुरक्षा और नई तकनीकों को अपनाने पर जोर दिया जायेगा। उन्होंने अधिकारियों से 30,000 आरकेएम के लिए ट्रेन की गति को 160 किमी प्रति घंटे तक बढ़ाने पर विचार करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि वे सालाना 1100 करोड़ यात्रियों की जरूरतों को पूरा करने के तरीके और भीड़भाड़ निपटने की तकनीक पर काम कर

“ “

भारतीय रेलवे में सुविधाओं की बढ़ोत्तरी लगातार जारी है। ट्रेन की सेफ्टी और यात्रियों की सुरक्षा के लिए रेल मंत्रालय लगातार नई-नई तकनीक विकास पर काम कर रहा है। लेकिन सुर्घटना पर फिर भी लगाम नहीं है। साल 2016-17 के बाद

इतना बड़ा रेल हादसा हुआ है। पिछले करीब 7 सालों से रेल हादसों पर विराम लग गया था, लेकिन इस हादसे ने रेलवे की सुरक्षा कवच स्कीम पर सवाल खड़े कर दिए हैं। शालीमार-चेन्नई कोरोमंडल एक्सप्रेस (12841) मालगाड़ी से टकरा गई।



रहे हैं। जबकि रेल मंत्री ने राज्यसभा में एक सवाल के जवाब में कहा था कि भारतीय रेलवे की दुर्घटना रोधी प्रणाली हावकवचहू को चरणबद्ध तरीके से देश भर में लागू किया जा रहा है। आरडीएसओ यानी रिसर्च डिजाइन एंड स्टैंडर्ड ऑगेनाइजेशन के प्लान के तहत दक्षिण मध्य रेलवे पर 1,455 रूट किलोमीटर पहले ही कवर किए जा चुके हैं। देश भर में इस संगठन की तरफ से तेजी से चल रहा है। दरअसल देश में रेल मार्गों पर दुर्घटनाओं से बचने के लिए रेलवे बोर्ड ने 34,000 किलोमीटर रेल मार्ग के साथ कवच प्रौद्योगिकी को मंजूरी दी थी। इसका लक्ष्य मार्च 2024 तक देश की सबसे व्यस्त ट्रेन लाइनों पर कवच प्रौद्योगिकी स्थापित करना है। कवच की अनूठी विशेषता यह है कि इसका उपयोग करने से ट्रेनें आपने-सामने या पीछे से नहीं टकराती। कवच ऐसी परिस्थितियों में ट्रेन को अपने आप पीछे की ओर ले जाता है।

कवच तकनीक पर करोड़ा खर्च

कवच तकनीक को स्थापित करने के लिए साल 2021-22 में 133 करोड़ रुपये रिलीज किए गए। वहीं साल 2022-2023 में कवच की स्थापना के लिए 272.30 करोड़ का बजट अलगा से रखा गया। इसके अलावा रेल मंत्रालय के मुताबिक ट्रेन सुरक्षा और चेतावनी प्रणाली दुर्घटना रोकने के लिए एक एक अहम सिस्टम है। इसमें हर सिमल रेलवे इंजन के कैब में लगे स्क्रीन पर दिखेगा। पायलट अपनी स्क्रीन पर देख सकेंगे कि ट्रेन कितनी तेजी से आगे बढ़ रही है। घने कोहरे, बारिश या दूसरी वजहों से खराब मौसम में ट्रेनों की गति धीमी रहेगी।

एक नजर अब तक के बड़े ट्रेन हादसों पर

साल 2016 में इंदौर पटना हादसा, कानपुर के पुखरायां के पास इंदौर-पटना एक्सप्रेस ट्रेन पटरी से उतर गई। जिसमें कम से कम 150 लोगों की मौत हो गई। उससे पहले 22 मई, 2012 को हुबली-बैंगलोर हम्पी एक्सप्रेस आंध्र प्रदेश के

पास एक मालगाड़ी से टकरा गई। जिसमें 25 यात्रियों की मौत हो गई। 43 लोग घायल हो गए। वहीं साल 2010 में मुंबई जाने वाली हावड़ा कुर्ला लोकमान्य तिलक ज्ञानेश्वरी सुपर डीलक्स एक्सप्रेस पश्चिम मिदनापुर जिले में पटरी से उतर गई। इस हादसे में कम से कम 170 लोगों की जान चली गई। इसी साल 19 जुलाई, 2010 को उत्तर बंग एक्सप्रेस और बनांचल एक्सप्रेस पश्चिम बंगाल के सैथिया में एक-दूसरे से टकरा गई, जिसमें 63 लोगों की मौत हो गई और 165 से अधिक लोग घायल हो गए। इससे पहले 14 जनवरी 2022 को पश्चिम बंगाल के जलपाइगुड़ी में दोमोहानी के पास हादसा हुआ था। इसमें 9 लोगों की मौत हो गई थी। राजस्थान के बीकानेर से असम के गुवाहाटी जा रही बीकानेर-गुवाहाटी एक्सप्रेस की 12 बोगियां पटरी से उतर गई थीं। तब 34 महीने बाद रेल हादसा हुआ था। अब 16 महीने बाद यानी जून 2023 में दूसरा रेल हादसा सामने आया है।

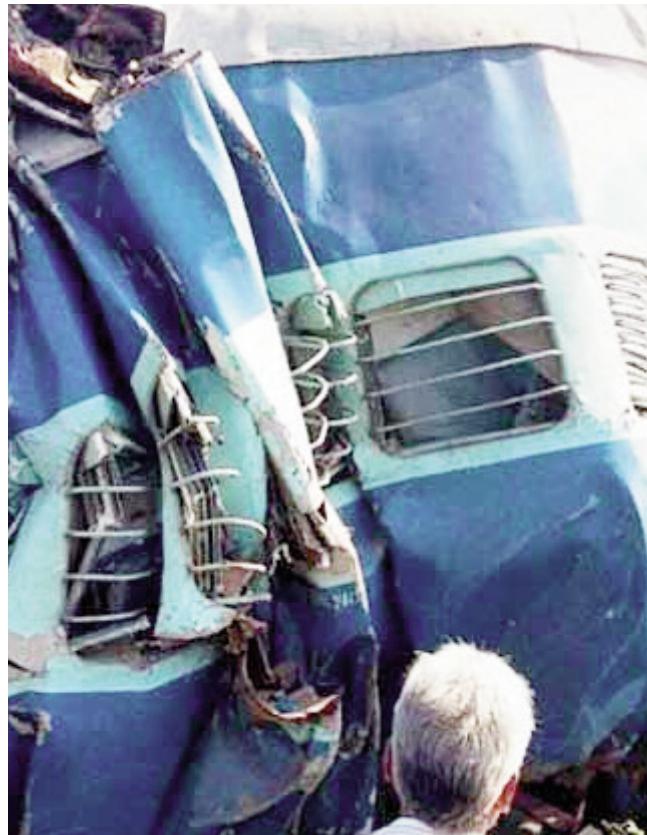
कवच तकनीक को स्थापित करने के लिए साल 2021-22 में 133 करोड़ रुपये रिलीज किए गए। वहीं साल 2022-2023 में कवच की स्थापना के लिए 272.30 करोड़ का बजट अलगा से रखा गया। इसके अलावा रेल मंत्रालय के मुताबिक ट्रेन सुरक्षा और चेतावनी प्रणाली दुर्घटना रोकने के लिए एक एक अहम सिस्टम है। इसमें हर सिमल रेलवे इंजन के कैब में लगे स्क्रीन पर दिखेगा। पायलट अपनी स्क्रीन पर देख सकेंगे कि ट्रेन कितनी तेजी से आगे बढ़ रही है। घने कोहरे, बारिश या दूसरी वजहों से खराब मौसम में ट्रेनों की गति धीमी रहेगी।

“

अलावा रेल मंत्रालय के मुताबिक ट्रेन सुरक्षा और चेतावनी प्रणाली दुर्घटना रोकने के लिए एक एक अहम सिस्टम है। इसमें हर सिमल रेलवे इंजन के कैब में लगे स्क्रीन पर दिखेगा। पायलट अपनी स्क्रीन पर देख सकेंगे।



अब कहां हादसा हुआ ...



1 मुंबई-गोवा राजमार्ग पुल (महाराष्ट्र, 2016)

2 अगस्त 2016 की देर रात मुंबई-गोवा राजमार्ग पर सावित्री नदी पर ब्रिटिश काल के एक पुल के गिरने से लगभग 41 लोगों की मौत हो गई। तकरीबन एक दर्जन वाहन नदी में गिर गए जिसमें कई लोग घायल हुए थे।

मुंबई फुट ओवर ब्रिज, (महाराष्ट्र, 2017)

एलफिंस्टन रोड रेलवे स्टेशन पर एक फुट ओवर ब्रिज 29 सितंबर, 2017 को दुर्घटनाग्रस्त हो गया था, जिसमें 29 यात्रियों की मौत हो गई थी।

माजेरहाट ब्रिज, कोलकाता (पश्चिम बंगाल, 2018)

कोलकाता में 04 सितंबर, 2018 को एक बड़ा पुल ढह गया। माजेरहाट ब्रिज, दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम कोलकाता के बीच मुख्य कनेक्टर्स में से एक था। शाम के ट्रैफिक के भार के चलते पूरा पुल नीचे गिर गया, जिससे 3 लोगों की मौत हो गई और कम से कम 20 लोग घायल हो गए।

“ ”

वहीं साल 2010 में मुंबई जाने वाली हावड़ा कुर्ला लोकमान्य तिलक झानेश्वरी सुपर डीलक्स एक्सप्रेस पश्चिम मिहनापुर जिले में पटरी से उत्तर गई। इस हादसे में कम से कम 170 लोगों की जान चली गई। इसी

साल 19 जुलाई, 2010 को उत्तर बंग एक्सप्रेस और वानांचल एक्सप्रेस पश्चिम बंगाल के सौंथिया में एक-दूसरे से टकरा गई, जिसमें 63 लोगों की मौत हो गई और 165 से अधिक लोग घायल हो गए।

હિન્દી સે હિંગલશ કા સફર



મैं માનતા હું કि ભારત વિવિધતાઓં ઔર અનેકતા મેં એકતા કી કસૌટી પર ખરા ઉત્તરતા હૈ। લેકિન હમ કઈ અચ દેશોં કો દેખે જહાં પર એક રાષ્ટ્ર એક ભાષા કો પરિમાર્જિત હોતે હુએ દેખા જાતા હૈ, જીવિક વહાં ભી કઈ ભાષાએં ઔર બોલિયાં વિદ્યમાન હૈ। સાથ હી વો દેશ અપની ભાષા કે સાથ કોઈ સમજીતા નહીં કરતે જૈસે ઇજરાયલ, જાપાન, ચીન, સ્વીડિન, રૂસ આદિ। વહીં આપ અપને દેશ કો દેરખિએ જિસમે સંવૈધાનિક તૌર પર 22 ભાષાઓં કી માન્યતા તો દી લેકિન કિસી એક ભાષા વિશેષકર હિન્દી જો સબસે જ્યાદા બોલે જાની વાલી દેશી ભાષા હૈ ઉસકો આજ તક હમ રાષ્ટ્રીય ભાષા કે તૌર પર સ્થાપિત નહીં કર પાએં। ઇસકે પીછે યહી તર્ક દિયા જાતા હૈ કि ઇસસે ક્ષેત્રીય અસંતુલન કા ખતરા હૈ। યાણી કારણ હૈ કि હમારી હિન્દી દેખતે હી દેખતે એક સંપર્ક ભાષા કે તૌર પર વિકસિત કરને કે ચક્કર મેં હિન્દી સે હિંગલશ બના બૈઠે। યાણી હમ અપી હિન્દી કે વૈશ્વીકરણ કે ચક્કર મેં અપની હી ભાષા કે સાથ ખિલવાડું કર બૈઠે। હિન્દી ભાષા વિશ્વ કી પ્રાચીન ભાષાઓં મેં સે એક હૈ, જો વિશ્વ મેં તીસરી સર્વાર્થિક બોલે જાને વાલી ભાષા હૈ। ભારત કે અલાવા હિન્દી ઔર ઉસકી બોલિયાં વિશ્વ કે અન્ય દેશોં મેં ભી બોલી પઢી વ લિખી જાતી હૈનું। અમેરિકા, મારીશસ, નેપાલ, ગયાના, ફિજી ઔર સંયુક્ત અરબ અમીરાત મેં ભી હિન્દી ભાષી લોગોં કી બાડી સંખ્યા મૌજૂદ હૈ। ભારત કી જનગણના 2011 કે અનુસાર 57% જનસંખ્યા હિન્દી જાનતી હૈ, યાણી જિસ દેશ કી આધી સે અધિક જનસંખ્યા હિન્દી જાનતી ઔર બોલતી હો ઉસ ભાષા કે વૈશ્વીકરણ શાયદ સમજી મેં નહીં આયા કર્યોકિ ન તો હિન્દી કા સહી સંરક્ષણ હી કર પાએ ઔર ન હી ઉસે અંતરાષ્ટ્રીય ભાષા અંગ્રેજી કે આસ પાસ હી પહુંચા પાએ। ઇસકે લિએ હિન્દી ભાષી ભી કમ દોષી નહીં હૈ, કર્યોકિ આપ ખુદ સોચિએ કી હમ ઔર આપ કિતની બાર હિન્દી બોલતે સમય અંગ્રેજી કે કુછ પ્રચલિત શબ્દોં કા બાર બાર પ્રયોગ કરતે હૈ। જૈસે- ટાઇમ, પાર્ટી, ક્લાસ, બર્થ/સીટ, ક્લાસ રૂમ, પ્રેક્ટિસ, ડ્રાઇવર, કોલ્ડ ડિંક, લાઇટ, એરિયા, ટ્રેન, બસ, પેપર, લેટ, વાઇફ, એક્સરસાઇઝ, એક્સ્પ્રેસાંડ્ટ, હોસ્પિટલ, સુગાર, એસ્ટીકેશન, લેટર, લિસ્ટ, શૉપિંગ, હસ્પાંડ, બુક, ટેબલ, ચેયર, પ્રોબ્લમ, યૂઝ, બાઇક, બાથરૂમ, કિચન, બેડરૂમ, રોડ, ગિફ્ટ, પેન, લગેજ, લોસ, ઎ડવાંસ, પોંકટ, બૈગ, શર્ટ, પૈટ, વોકિંગ, વર્ક બુક, મોંડિયુલ, રાઇટિંગ, સોશલ, નેટવર્કિંગ, પ્રાઇમરી, પ્રમોશન, ચેટ, ગેપ, લાર્નિંગ, સોશલ ડિસ્ટોર્સિંગ, ડાઇટ, વેલકમ, થૈક યૂ આદિ પ્રતિદિન ઇસ્ટેમાલ હોને વાલે પ્રચલિત શબ્દ હૈ। ઇન શબ્દોં કો હમ ઘર મેં, નિયમિત બોલચાલ મેં, ભાષણ/વ્યાખ્યાન મેં, પ્રશિક્ષણ મેં, શિક્ષણ મેં ઔર જાને કહાં-કહાં તક પ્રસારિત કરતે હૈનું, યાણી હમ અપને વાગ્ય યંત્ર કો કમ દુખ પહુંચાએ, કો ધ્યાન મેં રખકર હિંગલશ કા અનુસરણ બોલને કે લિએ કરતે હૈ, જો હમારે ભાષા કે સાથ ખિલવાડું હૈનું। આપ

તપિલ ભાષા કો હી લે લેં જો અતિપ્રાચીન ભાષા હૈ, લેકિન ઇસકો બોલને વાલો ને કંભી ભી ભાષિક મિશ્રણ બનાને કા પ્રયાસ નહીં કિયા। એક બાર હિન્દી કી એતિહાસિક પૃષ્ઠભૂમિ કે બારે મેં કુછ જાનકારી કર લેની ચાહેણે। હિન્દી ભાષા કી ઉત્તરિ મૂલ રૂપ સે શૌરસેની અપભ્રણ સે હુર્દી હૈ। વૈસે તો હિન્દી ભાષા કી આદી જનની સંસ્કૃત માની જાતી હૈ। હિન્દી સંસ્કૃત, પાલી, પ્રાકૃત ભાષા સે હોતી હુર્દી અપભ્રણ / અવહદ્દ સે ગુજરતી હુર્દી હિંદી કા રૂપ લે લેતી હૈ। હિન્દી ભાષા કો પાંચ ઉપભાષાઓં મેં બાટા ગયા હૈ, જિસકે અંતર્ગત હિંદી કી સત્રહ બોલિયાં આતી હૈનું। હિન્દી ભાષા કે વિકાસ કો જાનને સે પહલે હમ યહ ભી દેખ લેતે હૈનું કિ હિંદી શબ્દ કી ઉત્તરિ કૈસે હુર્દી હૈ?, હિન્દી શબ્દ કી ઉત્તરિ સિંધુ શબ્દ સે હુર્દી હૈ સિંધુ કા તાત્યર્થ સિંધુ નદી સે હૈ। જબ ઈરાની ઉત્તર પશ્ચિમ સે હોતે હુએ ભારત આએ તબ ઉઠોને સિંધુ નદી કે આસપાસ રહને વાલે લોગોં કો હિન્દી કહા। ઈરાની ભાષા મેં હ્રાસ કો હ્રાસ તથા હ્રાધ કો હ્રાદ તથા હ્રાચારિત કિયા જાતા થા। ઇસ પ્રકાર યહ સિંધુ સે હિંદૂ બના તથા હિન્દુ સે હિન્દ બના ફિર કાલાંતર મેં હિન્દ સે હિંદી બના જિસકા અર્થ હોતા હૈ હ્રહિંદ કાદ્ય હિન્દ દેશ કે નિવાસી। બાદ મેં યહ શબ્દ હિંદી કી ભાષા કે અર્થ મેં ઉપયોગ હોને લગા। કઈ લોગોં કા યહ સવાલ હોતા હૈ કિ હિંદશબ્દ કિસ ભાષા કા હૈ। આપકો બતા દેં કિ હિંદી શબ્દ વાસ્તવ મેં પાસી ભાષા કા શબ્દ હૈ જિસકા અર્થ હોતા હૈ હિંદ દેશ કે નિવાસી। હિન્દી ભાષા કે વિકાસ કો હમ 3 વર્ગો મેં વિભાજિત કર સકતે હોય ક્રમશ: પ્રાચીન હિન્દી (1100 ઈં- 1400 ઈં), મધ્યકાળીન હિન્દી (1400 ઈં- 1850 ઈં) એવમ આધુનિક હિન્દી (1850 ઈંજી અબ તક) પ્રાચીન યા પુરાની

“ ”

હિન્દી ભાષા વિશ્વ કી પ્રાચીન ભાષાઓં મેં સે એક હૈ, જો વિશ્વ મેં તીસરી સર્વાર્થિક બોલે જાને વાલી ભાષા હૈ। ભારત કે અલાવા હિન્દી ઔર ઉસકી બોલિયાં વિશ્વ કે અન્ય દેશોં મેં કી બાળી પઢી વ લિખી જાતી હૈનું। અમેરિકા, મારીશસ, નેપાલ, ગયાના, ફિજી ઔર સંયુક્ત અરબ અમીરાત મેં ભી હિન્દી ભાષી લોગોં કી બાડી સંખ્યા મૌજૂદ હૈ। ભારત કી જનગણના 2011 કે અનુસાર 57% જનસંખ્યા હિન્દી જાનતી હૈનું।



हिन्दी/प्रारंभिक या आरंभिक हिन्दी/आदिकालीन हिन्दी प्राचीन हिन्दी से अभिप्राय, अपश्रंग इव अवहट के बाद की भाषा से है। यह काल हिन्दी भाषा का शिशु काल था। यह वह काल था जब अपश्रंग-अवहट का प्रभाव हिन्दी भाषा पर बचा हुआ था और हिन्दी की बोलियों के निश्चित और स्पष्ट रूप विकसित नहीं हो पाए थे। मध्यकालीन हिन्दी मध्यकाल में हिन्दी का स्वरूप स्पष्ट हो गया और उसकी प्रमुख बोलियों का विकास होने लगा था। इस अवधि के दौरान, भाषा के तीन रूप उभरे इव ब्रजभाषा, अवधी और खड़ी बोली। ब्रजभाषा और अवधी का अत्यधिक साहित्यिक विकास हुआ। सूरदास, नंददास, रसखान, मीराबाई आदि लोगों ने ब्रजभाषा को साहित्य विकास में अमूल्य योगदान दिया। इनके अलावा कबीर, नानक, दादू साहिब आदि लोगों ने खड़ी बोली के मिश्रित रूप का प्रयोग साहित्य में करते रहे। 18वीं शताब्दी में खड़ी बोली को मुस्लिम शासकों का संरक्षण प्राप्त हुआ और इसके विकास को एक नई दिशा मिली। आधुनिककालीन हिन्दी, हिन्दी के आधुनिक काल तक ब्रजभाषा और अवधी हम बोल-चाल तथा साहित्यिक क्षेत्र से दूर हो गई थी। 19वीं सदी के मध्य तक भारत में ब्रिटिश सत्ता का सबसे बड़ा विस्तार हो चुका था। जब ब्रजभाषा और अवधी का साहित्यिक रूप आम भाषा से दूर हो गया, तो उनके बदले धीरे-धीरे खड़ी बोली का प्रयोग शुरू हो गया। ब्रिटिश सरकार ने भी इसका इस्तेमाल करना शुरू कर दिया था। हिन्दी के आधुनिक काल में एक ओर उर्दू और दूसरी ओर ब्रजभाषा के प्रचार के कारण खड़ी बोली को अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करना पड़ा। 19 वीं शताब्दी तक कविता की भाषा ब्रजभाषा थी और गद्य की भाषा खड़ी बोली थी। 20वीं शताब्दी के अंत तक, खड़ी बोली गद्य और कविता दोनों की साहित्यिक भाषा बन गई थी। विभिन्न धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों ने इस युग में खड़ी बोली की स्थापना में बहुत मदद की। परिणामस्वरूप, खड़ी बोली साहित्य की प्रमुख भाषा बन गई। आधुनिककालीन हिन्दी में खड़ी बोली को हम पांच युगों बांटते हैं, जो हिन्दी पूर्व-भारतेंदु युग, भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद युग, प्रगतिवादी युग और प्रयोगवादी युग के लंबे सफर के बाद आज हिन्दी अपनी पहचान के लिए संघर्षरत है। आधुनिक काल में सम्पूर्ण वैश्वीकरण होने के कारण और सोशल मीडिया ने हमारी हिन्दी को हिंगिलाश के तौर पर इस्तेमाल करने के लिए जाल फेंका और हम फंस गए। चुकि हिन्दी के समृद्ध अस्तित्व के काफी दिनों बाद विश्व पटल पर 1969 में अंतर्रजाल (इंटरनेट) की शुरूआत हुई और हमारे देश में इसकी पहुंच 80 के दशक में देखने को मिलता है, लेकिन देखते ही देखते अंतर्रजाल ने हमारे जीवन के एक अंग के रूप में कार्य करने लगा और यही से हिंगिलाश की शुरूआत हुई। कुछ सॉफ्टवेयर भी जो हमारे बहीखातों और मुनीम जी को चलता किया। कुछ याद आया आप सभी को वही बिंडोज जो आज हर जगह विद्यमान है, जिसने आपके नैसर्गिक लेखन को तो प्रभावित किया ही, आपको नकलची भी बना दिया। मैं ये नहीं कहता कि आप तकनीक का प्रयोग न करें! करें लेकिन संतुलित करें। हमने

सभी खोजी इंजनों को खुद ही मौका दिया कि वो इस बदलाव के बाहक बने। इस बदलाव में गूगल जो एक खोजी इंजन है, जिसने आपके विचारों को पढ़कर, कृत्रिम बुद्धि (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) का प्रयोग करके आपकी सुविधानुसार सामग्री को उपलब्ध करा रहा है, इसने पूरी हिन्दी की नैसर्गिकता को ही बदल कर रख दिया क्योंकि हम भारतीयों को पका पकाया खाने की आदत हो चूकी है, इसलिए इस गूगल ने इसी का लाभ उठाया। गूगल ने अपने टाइपिंग के फॉन्ट भी बना लिए। ज्याहि ये फॉन्ट प्रयोग में आया हम मानक टाइपिंग फॉन्ट कुर्तिंदेव को छोड़कर मंगल, कोकिला का प्रयोग करने लगे और हमने अपनी टाइपिंग की विवासत को बदल दिया। यानी मरीनों ने आपके भाषाई समृद्धता को चुटकी में ही मसल कर रख दिया क्योंकि हमें सब कुछ आसान चाहिए। हम तो सिर्फ अब हिन्दी की फुफकार हिन्दी दिवस और कुछ अन्य कार्यक्रमों में हिन्दी बचाने की दुहाई देकर मारते हैं। अगर हमें अपनी भाषा हिन्दी को बचाना है, तो इसकी शुरूआत मातृ शिक्षा से ही शुरू करनी होगी। हम डॉगी क्यों कहते हैं क्योंकि वो आसान है और किसी के सामने आपको एक अंग्रेजियत का सुखद अहसास कराता है। जबकि हिन्दी में तो इसी को शानदार, प्यारा कुत्ता भी तो कह सकते हैं। इसी प्रकार रंग को कलर न कहें, हम गाय को गाय ही कहें काउ नहीं। इसी प्रकार परिवारिक रिश्तों के नामों का भी उच्चारण कराए कभी कॉन्वेंशन की नकल प्रारंभ में मत करें। यानी शुरूआत से ही शुद्ध हिन्दी की बात की जाएगी तभी वाय यत्रों में से विशेषकर अंग -जीभ टटेगी और हम कठिन शब्दों के प्रयोग को आसान कर पाएंगे, नहीं तो अगली पीढ़ी में हिन्दी के कई शब्द उनको संग्रहालय में किसी सामग्री की तरह दिखेंगे और कहेंगे देखो चिंटू ये शब्द तुम्हारे दादा जी प्रयोग करते थे, समझे!

“ खड़ी बोली साहित्य की प्रमुख भाषा बन गई। आधुनिककालीन हिन्दी में खड़ी बोली को हम पांच युगों बांटते हैं, जो हिन्दी पूर्व-भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद युग, प्रगतिवादी युग और प्रयोगवादी युग के लंबे सफर के बाद आज हिन्दी अपनी पहचान के लिए संघर्षरत है। आधुनिक काल में सम्पूर्ण वैश्वीकरण होने के कारण और सोशल मीडिया ने हमारी हिन्दी को हिंगिलाश के तौर पर इस्तेमाल करने के लिए जाल फेंका और हम फंस गए।

ग्लोबल वार्मिंग का बढ़ता असर संकट में आवादी



विश्व में जलवायु परिवर्तन से होने वाले दुष्प्रभावों के परिणाम धीरे-धीरे सामने आना शुरू हो गए हैं। यदि ग्लोबल वार्मिंग को तत्काल कम नहीं किया गया तो साल 2100 तक हिमालय के 75 फीसदी ग्लेशियर पिघल जाएंगे। इससे भयंकर बाढ़ आएंगी और हिमस्खलन होगा और लगभग दो अरब लोगों के जीवन और आजीविका पर असर पड़ेगा। वैज्ञानिक इस बात का आकलन करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं कि जलवायु परिवर्तन हिंदुकुश हिमालय को कैसे प्रभावित कर रहा है। वहीं यूरोपीय ऐल्स्स और उत्तरी अमेरिका के रॅकी पर्वत के विपरीत इस क्षेत्र में फील्ड मापन का लंबा ऐतिहासिक रिकॉर्ड नहीं है, जो बता सके कि ग्लेशियर बढ़ रहे हैं या सिकुड़ रहे हैं। साल 2019 में अमेरिका ने 1970 तक के क्षेत्र के ग्लेशियरों की जासूसी उपग्रह छवियों को वागीकृत किया। इससे एक नई वैज्ञानिक आधार रेखा प्रदान की गई।

हाल ही में काठमाडू स्थित इंटरनेशनल सेंटर फॉर इंटीग्रेटेड माउटेन डबलपर्मेंट के शोधकर्ताओं ने हिंदू कुश हिमालय क्षेत्र के ग्लेशियरों के पिघलने को लेकर एक रिपोर्ट जारी की है। हिंदू कुश हिमालय (एचकेएच) क्षेत्र के ग्लेशियर और बर्फ से ढके पहाड़ 12 नदियों के लिए पानी का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। इससे इस क्षेत्र में रहने वाले 240 मिलियन लोगों को और अन्य 1.65 बिलियन लोगों को साफ पानी मिलता है। इस नई समझ के साथ ही हिमालय के

इस इलाके में रहने वाले लोगों के लिए गंभीर और बहुआयामी चिंताएं भी पैदा होती हैं। रिपोर्ट में पाया गया कि इस क्षेत्र की गंगा, सिंधु और मेकांग समेत 12 नदी घाटियों में पानी का प्रवाह आने वाले बर्क में चरम पर होने की संभावना है। इसका परिणाम यह है कि करीब 1.6 बिलियन से ज्यादा लोग इससे प्रभावित होंगे। रिपोर्ट

“ “ हाल ही में काठमाडू स्थित इंटरनेशनल सेंटर फॉर इंटीग्रेटेड माउटेन डबलपर्मेंट के शोधकर्ताओं ने हिंदू कुश हिमालय क्षेत्र के रैलिशियरों के पिघलने को लेकर एक रिपोर्ट जारी की है। हिंदू कुश हिमालय (एचकेएच) क्षेत्र के ग्लेशियर और बर्फ से ढके पहाड़ 12 नदियों के लिए पानी का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। इससे इस क्षेत्र में रहने वाले 240 मिलियन लोगों को और अन्य 1.65 बिलियन लोगों को साफ पानी मिलता है।



में कहा है कि यदि ग्लोबल वार्मिंग में कभी नहीं की जाती है तो 2100 तक हिंदू कुश हिमालय क्षेत्र के 80 प्रतिशत तक ग्लेशियर पिघल जाएंगे। विशेषज्ञों का कहना है कि डिग्री ऑफ कंसर्न के ऊपर दो डिग्री सेल्सियस तापमान पर पूरे क्षेत्र के ग्लेशियर 2100 तक 30 प्रतिशत से 50 प्रतिशत तक कम हो जाएंगे। डिग्री ऑफ कंसर्न के ऊपर तीन डिग्री तापमान पर पूर्वी हिमालय में ग्लेशियर 75 प्रतिशत तक खत्म हो जाएंगे।

वहीं डिग्री ऑफ कंसर्न के ऊपर चार डिग्री तापमान पर यह 80 फीसदी तक कम हो जाएंगे। रिपोर्ट के अनुसार, 2010 के दशक के दौरान ग्लेशियर पिघले दशक की तुलना में 65 प्रतिशत तेजी से पिघले हैं। शोधकाठाओं ने आशंका व्यक्त की है कि ग्लेशियरों के तेजी से पिघलने से भवंकर बाढ़ और हिमस्खलन होगा और लगभग दो अरब लोगों के जीवन और आजीविका पर असर पड़ेगा। अन्य प्रभाव में पारंपरिक सिंचाई चैनलों का विनाश, फसल की हानि, भूमि का क्षरण, भूमि उपयोग में परिवर्तन और फसल और पशुधन उत्पादन में गिरावट शामिल होगी।

वहीं बर्फ के पिघलने से खतरनाक हिमनदी झील बना सकती हैं। इन झीलों के फटने से बाढ़ का खतरा और बढ़ जाएगा। हिंदू कुश हिमालय क्षेत्र में विविध वनस्पतियों के लिए अनुकूल चार वैश्विक जैव विविधता हॉट स्पॉट के सभी या कुछ हिस्से मौजूद हैं। ग्लेशियर पिघलने से ये भी नष्ट हो सकते हैं। रिपोर्ट में हिंदू कुश हिमालय में रहने वाले लोगों के लिए गंभीर चिंता जताई गई है। रिपोर्ट में पाया गया कि इस क्षेत्र की 12 नदी घाटियों में पानी का प्रवाह, मध्य शताब्दी के आसपास चरम पर होने की संभावना है, जिसके नतीजे इस आपूर्ति पर निर्भर 1.6 बिलियन से अधिक लोगों को भुगतने पड़ेंगे। ऊंचे पहाड़ों में रहने वाले लोग फसलों की सिंचाई के लिए हिमनदी के पानी और पिघली बर्फ का उपयोग करते हैं। अब बर्फबारी का समय अनिश्चित हो गया है और यह पहले की तुलना में कम हो गई है। हिंदू कुश हिमालय क्षेत्र में दुनिया के सबसे ऊंचे पर्वत शामिल हैं और ध्रुवीय क्षेत्रों के बाहर पूर्वी पर बर्फ की सबसे बड़ी मात्रा है। हिंदू कुश हिमालय अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, चीन, भारत, म्यामार, नेपाल और पाकिस्तान में

3,500 किमी तक फैला हुआ है।

गौरतलब है कि ग्लोबल वार्मिंग को रोकने के लिए साल 2015 में पेरिस जलवायु वार्ता में दुनियाभर के देश पूर्व-औद्योगिक स्तर की तुलना में ग्लोबल वार्मिंग को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने पर सहमत हुए थे। पूर्वी की वैश्विक सतह के तापमान में लगभग 1.15 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हुई है और औद्योगिक क्रांति की शुरूआत के बाद से कार्बन डाइऑक्साइड इसके साथ जुड़ी हुई है। सदी के अंत तक दुनिया के तापमान में लगभग 3 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो सकती है। जलवायु विशेषज्ञों का कहना है कि दुनिया को 2009 के स्तर से 2030 तक उत्सर्जन को आधा करना चाहिए ताकि वैश्विक तापमान वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस से नीचे बनाए रखा जा सके। उनका कहना है कि पिघलते हुए ग्लेशियर निचले इलाके में रहने वाले समुदायों के लिए भी खतरा है। हम सभी को इन पर ध्यान देने की जरूरत है। ऐसा नहीं करने पर आने वाले समय में बड़े संकट का सामना करना पड़ सकता है।

“ “

वहीं बर्फ के पिघलने से खतरनाक हिमनदी झील बना सकती हैं। इन झीलों के फटने से बाढ़ का खतरा और बढ़ जाएगा। हिंदू कुश हिमालय क्षेत्र में विविध वनस्पतियों के लिए अनुकूल चार वैश्विक जैव विविधता हॉट स्पॉट के सभी या कुछ हिस्से मौजूद हैं। ग्लेशियर पिघलने से ये भी नष्ट हो सकते हैं। रिपोर्ट में हिंदू कुश हिमालय में रहने वाले लोगों के लिए गंभीर चिंता जताई गई है। वैश्विक जैव विविधता हॉट स्पॉट के सभी या कुछ हिस्से मौजूद हैं। रेशेशियर पिघलने से ये भी नष्ट हो सकते हैं। रिपोर्ट में हिंदू कुश हिमालय में रहने वाले लोगों के लिए गंभीर चिंता जताई गई है।



जातीय हिंसा में झुलसते 'मणिपुर में शांति बहाली के लिए गृहमंत्री' अमित शाह के प्रयास



देश व दुनिया में सांस्कृतिक विविधता, जैव विविधता, भौगोलिक, सामरिक, राजनीतिक व दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के प्रवेश द्वारा के रूप से अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले पूर्वांतर राज्य मणिपुर का जातीय हिंसा में अशांत होना किसी भी दृष्टिकोण से देश के लिए उचित नहीं है।

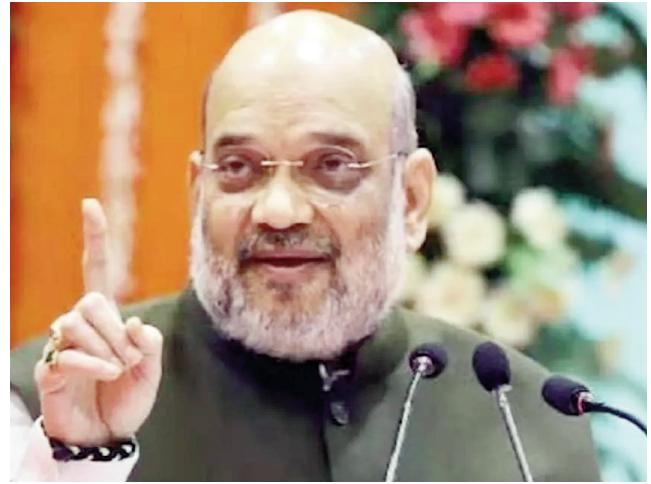
मणिपुर की राज्य सरकार व केन्द्र सरकार का यह दायित्व है कि वह देशित में मणिपुर में जल्द शांति बहाली करके, फिर से मैत्रैई व नागा-कुकी समुदाय में आपस में विश्वास बहाली के लिए एक दूरगामी ठोस रणनीति बनाकर के जातीय विदेश को समाप्त करने के लिए धरातल पर तत्काल कार्य करें। जिसके लिए हाल ही में केन्द्रीय गृहमंत्री ह्यामित शाह ने अपने मणिपुर दौरे के दौरान ठोस पहल की शुरूआत की है।

भारत का सीमावर्ती पूर्वांतर राज्य मणिपुर का का क्षेत्रफल 22,327 वर्ग किलोमीटर का है और वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राज्य की आबादी 2,855,794 है। यह राज्य अपनी विभिन्न विविधताओं को एक

सूत्र में पिरोकर संजोकर रखने वाले एक छोहद संवेदनशील राज्य माना जाता है। मणिपुर की सीमाएं उत्तर में नागालैंड और दक्षिण में मिजोरम, पश्चिम में असम राज्य के साथ पूर्व में म्यांगांग देश से मिलती हैं।

भारत का सीमावर्ती पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर का का क्षेत्रफल 22,327 वर्ग किलोमीटर का है और वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राज्य की आबादी 2,855,794 है। यह राज्य अपनी विभिन्न विविधताओं को एक सूत्र में पिरोकर संजोकर रखने वाले एक बेहद संवेदनशील राज्य माना जाता है। मणिपुर की सीमाएं उत्तर में नागालैंड और दक्षिण में मिजोरम, पश्चिम में असम राज्य के साथ पूर्व में म्यांगार देश से मिलती हैं, जो कि सार्विक दृष्टि से बेहद अहम है। लेकिन आज चिंताजनक बात यह है कि पिछले कुछ समय से मणिपुर अपने ही निवासियों के द्वारा लगाई गई जातीय असांति की आग में रोजाना जल रहा है। यहां आपको याद दिला दें कि जब से मणिपुर में मैतैई समुदाय को अनुसूचित जनजाति (एसटी) का दर्जा मिला है, उसके बाद से ही आरक्षण समर्थकों व विरोधियों के बीच में राज्य में चौतरफा हांगामा बरपा हुआ है। आरक्षण मिलने के बाद जब 3 मई 2023 को नागा व कुकी आदिवासियों ने राज्य के दस पहाड़ी जिलों में एकजुटता मार्च निकाला कर मैतैई समुदाय को आरक्षण देने का विरोध दर्ज कराया था, तो सूत्रों के अनुसार उस वक्त यह मार्च शांतिपूर्ण ढंग से लगभग संपन्न हो गया था, लेकिन कुछ अराजक तत्वों ने चुराचांदपुर में इंग्लो-कुकी युद्ध स्पारक के गेट के एक हिस्सों को जलाकर विरोध को आगजनी, तोड़फोड़ व हिंसा में बदलने का देशद्रोही कार्य कर ही दिया था। जिसके चलते ही देखते ही देखते कुछ समय में ही अचानक से पूरा मणिपुर बड़े पैमाने पर हुई जातीय हिंसा की आग की चपेट में आकर बुरी तरह से झुलस गया है। राजधानी इंफाल सहित राज्य के अन्य विभिन्न हिस्सों में हुई आगजनी तोड़फोड़ व हिंसा की घटनाओं में लोगों की जान तक भी जाने लग गयी, जो जातीय हिंसा राज्य में अभी तक भी जारी है। हालांकि इस हिंसा को रोकने के लिए राज्य सरकार भी तुरंत ही हरकत में आ गयी थी और उसने राज्य में तत्काल कार्फ्यू लगाते हुए, हिंसाग्रस्त इलाकों में पुलिस, पैरा मिलिट्री फोर्स व सेना तक की तैनाती करने का कार्य किया था। राज्य में दंगाइयों को नियंत्रित करने के लिए उन्हें देखते ही गोली मारने तक के आदेश तक भी जारी कर दिये गये थे। वहीं किसी भी प्रकार की अफवाहों को रोकने के लिए राज्य में इंटरनेट सेवा को भी बंद कर दिया गया था। बेहद तनावपूर्ण हालात पर स्वयं मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह निरंतर नजर रखते हुए शासन प्रशासन को आवश्यक दिशा-निर्देश दे रहे थे। वहीं केन्द्र सरकार भी पहले दिन से ही राज्य के हालात पर पल-पल नजर रखे हुए हैं। लेकिन आज लगभग सवा महीने के बाद भी राज्य के हालात पूरी तरह से नहीं सुधरे हैं, इम्फाल-दीमापुर राष्ट्रीय राजमार्ग (एनएच-2) हाईव पर आज भी हथियार बंद दंगाई कब्जा जमाएं अभी तक भी बैठे हुए हैं, गैस, तेल, दवाई व राशन जैसे आवश्यक वस्तुओं को आम जनपानस तक पहुंचाना सरकार के सामने बड़ी चुनौती बना हुआ है, अभी भी एक दूसरे समुदाय के लोगों के जान-माल को उपद्रवियों के द्वारा चिन्हित करके निशाना बनाया जा रहा है। जिसके चलते सरकार निरंतर स्थिति को नियंत्रित करने के लिए प्रयास कर रही है, वहीं हाल ही में अफवाहों को रोकने के लिए राज्य सरकार ने 15 जून तक इंटरनेट बंद करने के आदेश जारी कर दिये हैं। लेकिन अफसोस मणिपुर में मई माह में भड़की इस जातीय हिंसा ने अब तक असमय 105 लोगों के अनमोल जीवन को लीलने का कार्य कर दिया है। हिंसा के चलते 50 हजार 650 से ज्यादा लोगों बेघर होकर सरकार के द्वारा बनाए 350 राहत शिविरों में रहने के लिए मजबूर हैं। स्थिति चीख चीखकर बता रही है कि अब तक राज्य सरकार मणिपुर के जातीय हिंसा वाले हालातों को पूरी तरह से नियंत्रित करने में विफल साबित हुई है। इस स्थिति को देख देश के गृहमंत्री ह्याअमित शाह ने विवाद का समाधान करने की स्वयं कमान संभालने का कार्य किया और वह 29 मई से 1 जून तक के चार दिवसीय दौरे पर मणिपुर के दंगाग्रस्त क्षेत्रों में दौरा करने पहुंच गए। जहां पर गृहमंत्री ह्याअमित शाह ने मणिपुर में शांति बहाली के लिए धरातल पर जाकर विभिन्न क्षेत्रों के दौरे करने के साथ-साथ पक्ष व विपक्ष के लोगों से मुलाकात करके उनके दर्द पर मरहम लगाने का कार्य किया। गृहमंत्री ने अपने इस दौरे के दौरान शासन-प्रशासन व सैन्य अधिकारियों के साथ जगह-जगह मौके पर जाकर हालात के जायज लेकर के शासन-प्रशासन के साथ समीक्षा बैठक करके उन्हें जातीय दागा को नियत्रण करने, राहत व बचाव कार्य के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश देने का कार्य किया।

गृहमंत्री ह्याअमित शाह के मणिपुर चार दिवसीय दौरे के बाद एकबार फिर से वह राजनीतिक व मीडिया के गलियारों में चर्चा में हैं, क्योंकि गृहमंत्री के रूप में ह्याअमित शाह का दंगाग्रस्त मणिपुर का यह दौरा किसी भी दंगाग्रस्त क्षेत्र में अब तक भारत के गृहमंत्री का सबसे लंबे समय तक का दौरा माना जा रहा है। मणिपुर के लोगों को भी गृहमंत्री ह्याअमित शाह के दौरे से बहुत ज्यादा उम्मीद है कि



गृहमंत्री की यात्रा के बाद अब जल्द ही राज्य में शांति लौट आएगी और आंतरिक सुरक्षा के मामले में एक बहुत बड़ी चुनौती बनकर उभर रहे मणिपुर में फिर से जल्द ही जातीय हिंसा समाप्त होकर के अमन-चैन कायम होगा। आज हम सभी देशवासियों को पूरी उम्मीद है कि गृहमंत्री ह्याअमित शाह के हस्तक्षेप के बाद मणिपुर राज्य से जल्द ही दंगे-फसाद की गंभीर चुनौतियों से परिष्पृष्ठ काला बुरा दौर समाप्त होगा और मणिपुर राज्य फिर से अपनी सांस्कृतिक विविधता को संजोकर के विकास के पथ पर तेजी से अग्रसर होकर नव भारत निर्माण में कारबगर सहयोग करेगा।



“ हिंसा के चलते 50 हजार 650 से ज्यादा लोगों बेघर होकर सरकार के द्वारा बनाए 350 राहत शिविरों में रहने के लिए मजबूर हैं। स्थिति चीख चीखकर बता रही है कि अब तक राज्य सरकार मणिपुर के जातीय हिंसा वाले हालातों को पूरी तरह से नियंत्रित करने में विफल साबित हुई है। इस स्थिति को देख देश के गृहमंत्री ह्याअमित शाह ने विवाद का समाधान करने की स्वयं कमान संभालने का कार्य किया।



भारत के समृद्धशालियों एवं प्रतिभाओं का पलायन क्यों?



धनाद्य परिवारों का भारत से पलायन कर विदेशों में बसने का सिलसिला चिन्ताजनक है। ऐसे क्या कारण है कि लोगों को देश की बजाय विदेश की धरती रहने, जीने, व्यापार करने, शिक्षा एवं रोजगार के लिये अधिक सुविधाजनक लगती है, नये बनते भारत के लिये यह चिन्तन-मंथन का कारण बनना चाहिए। हेनले प्राइवेट वेल्थ माइग्रेशन रिपोर्ट 2023 की एक रिपोर्ट के अनुसार, अनुमानित 6,500 हाई-नेट-वर्थ इंडिविजुअल्स (एचएनआई) के 2023 में भारत से बाहर जाने की संभावना है, पिछले वर्ष की तुलना में यह करोड़पतियों के देश छोड़कर जाने की 7500 की संख्या भले ही कुछ सुधरी है, लेकिन नये बनते, सशक्त होते एवं आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर भारत के लिये यह चिन्तन का विषय होना ही चाहिए कि किस तरह भारत की समृद्धि एवं भारत की प्रतिभाएं भारत में ही रहे।

रिपोर्ट के अनुसार, उच्च निवल मूल्य वाली व्यक्तिगत आबादी के 2031 तक 80 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि का अनुमान है, जो इस अवधि के दौरान भारत को दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते धन बाजारों में से एक के रूप में स्थापित करता है। यह वृद्धि मुख्य रूप से देश के भीतर संपन्न वित्तीय सेवाओं, स्वास्थ्य सेवा और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों द्वारा संचालित होगी। इसमें समृद्ध व्यक्तियों के भारत लौटने की प्रवृत्ति को भी देखा जा रहा है, और जैसे-जैसे जीवन स्तर में सुधार जारी है, यह अधिक संख्या में धनवान व्यक्तियों के भारत वापस आने का अनुमान लगाता है। लेकिन प्रश्न है कि भारत के करोड़पति आखिर नये बनते भारत एवं उसकी चिकित्सा, शिक्षा, आर्थिक, राजनीतिक, प्रशासनिक उज्ज्वलता के बावजूद क्यों विदेश जा रहे हैं? वैसे तो यह हर किसी का व्यक्तिगत अधिकार और चाहत हो

सकती है कि वह कहां बसना और कैसी जीवनशैली चाहता है? लेकिन हाई नेटवर्थ वाले (अति समृद्ध) हमारे देशवासियों के देश छोड़ कर कहीं और बसने की तैयारी की ताजा रिपोर्ट बहुत कुछ कहती है। दुनियाभर में धन और निवेश प्रवासन के रुझान को ट्रैक करने वाली कंपनी की सालाना रिपोर्ट में अति समृद्ध भारतीयों का अपना सब-कुछ समेट कर हमेशा के लिए भारत से जुदा हो जाने का अनुमान अनेक प्रश्न खड़े करता है, सरकार को इन प्रश्नों पर गौर करने की जरूरत है। संतोष इस बात पर किया जा सकता है कि ऐसा कदम उठाने वाले इन

“ ”

उच्च निवल मूल्य वाली व्यक्तिगत आबादी के 2031 तक 80 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि का अनुमान है, जो इस अवधि के दौरान भारत को दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते धन बाजारों में से एक के रूप में स्थापित करता है। यह वृद्धि मुख्य रूप से देश के भीतर संपन्न वित्तीय सेवाओं, स्वास्थ्य सेवा और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों द्वारा संचालित होगी। इसमें समृद्ध व्यक्तियों के भारत लौटने की प्रवृत्ति को भी देखा जा रहा है। यह एक के रूप में स्थापित करता है। यह

वृद्धि मुख्य रूप से देश के भीतर संपन्न वित्तीय सेवाओं, स्वास्थ्य सेवा और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों द्वारा संचालित होगी। इसमें समृद्ध व्यक्तियों के भारत लौटने की प्रवृत्ति को भी देखा जा रहा है, और जैसे-जैसे जीवन स्तर में सुधार जारी है।



अति समृद्धशालियों की संख्या पिछले साल की तुलना में लगभग एक हजार कम है। लेकिन यह संख्या समूचे विश्व में सर्वाधिक है। भारत के दृष्टिकोण से इस तथ्य का विश्लेषण ज्यादा जरूरी हो जाता है। जाना यह भी जरूरी है कि बचपन से जवानी तक का एक-एक पल देश में गुजाने और यहीं अमीर बनने का सफर तय करने के बाद देश से मोह भंग होने के कारण आखिर क्या हो सकते हैं? उम्मीद यह की जाती है कि देश में रहकर समृद्धि हासिल करने वाले समय आने पर देश को लौटाएंगे भी। सबाल यही है कि देश को लौटाने और फायदा देने का वक्त आता है तब एकाएक विदेश में जाकर बसने की लालक कैसे और क्यों पैदा हो रही है? अपने देश के प्रति जिम्मेदारी निभाने के समय इस तरह की पलायनवादी सोच का उभरना व्यक्तिगत स्वार्थ, सुविधा एवं संकीर्णता को दर्शाता है।

बड़ा सवाल यह भी उठना स्वाभाविक है कि आखिर क्या कमी है हमारे यहां? यह बात सही है कि गांव से कस्बे, कस्बे से शहर और शहरों से महानगरों में जाकर बसने की मानवीय प्रवृत्ति होती है। इसे विकास से भी जोड़ा जा सकता है। लेकिन जब यह दौड़ बहुत ज्यादा होने लगे और लोग अपनी जड़ें ही छोड़ने को आकुल दिखें तो सोचना जरूरी हो जाता है। मुम्बई, दिल्ली, बैंगलूरु जैसे महानगर दुनिया के दूसरे महानगरों को टक्कर देने वाले हैं। फिर भी अगर ये भारतीय विदेशी महानगरों को ही चुन रहे हैं, तो तमाम पहलुओं पर विचार भी करना होगा। यह इसलिए भी जरूरी है कि यह दौड़ भारतीय महानगरों से विदेशी महानगरों की तरफ ही है। विदेश में बसने की यह दौड़ ऐसे समय देखने को मिल रही है जब देश में विकास के नये कीर्तिमान स्थापित हो रहे हैं, जीवनशैली उन्नत एवं सुविधापूर्ण होती जा रही है, व्यापार एवं व्यवसाय की संभावनाओं को पंख लग रहे हैं। भारत दुनिया में साख एवं धाक जमा रहा है। दुनिया की नजरें भारत पर लगी है और यहां अनंत संभावनाओं को देखते हुए विदेशी भारत आ रहे हैं। फिर भारतीय विदेशों की ओर क्यों जा रहे हैं।

अपने देश से ही पाने और मौका पड़ने पर देश को लौटाने की परिपाठी बरसों से है। सिर्फ क्वालिटी लाइफ को ही पलायन की वजह नहीं माना जा सकता। उन कारणों की तलाश भी करनी जरूरी है जिसकी वजह से लोग देश को छोड़कर कहीं और बसना चाहते हैं। सुरक्षित माहौल, अनुकूल कर ढाँचा, सरल प्रशासनिक व्यवस्था, निवेश का माहौल, रोजगार, शिक्षा व चिकित्सा जैसी सुविधाओं की तरफ भी ध्यान देना होगा ताकि पलायन की इस प्रवृत्ति की रोकथाम हो सके। बात केवल करोड़पतियों की ही नहीं है, बल्कि भारत की प्रतिभाओं की भी है। उच्च शिक्षित प्रतिभाओं को भारत में उचित प्रोत्साहन एवं परिवेश न मिलने से वे भी विदेशों की ओर पलायन करती हैं।

विदेशों में काम करने वाले भारतीय उच्च शिक्षित हैं और आमतौर पर उन्हें भारत में उपयुक्त करियर नहीं मिला। सिंगापुर जैसे देशों ने भारतीयों के लिए दरवाजे खोल दिए हैं। इसके अलावा, स्कैंडिनेवियाई देश हैं, जिन्होंने आप्रवासन नियमों में ढील दी है, जिससे भारतीयों के लिए वहां जाना आसान हो गया है। सबसे बढ़कर, भारतीय आईटी पेशेवरों की अमेरिका में अत्यधिक मांग है।

वैज्ञानिक और तकनीकी प्रवृत्ति पर आधारित विश्व स्तर पर ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था ने प्रतिभाशाली कर्मियों की बढ़ती मांग को जन्म दिया है। भारत विशेष रूप से यूरोपीय देशों के लिए प्रतिभाशाली और कुशल मानव संसाधनों का प्रमुख आपूर्तिकर्ता बन गया। कई देश, इंग्लिशियरों, डॉक्टरों और संचार की भाषा के रूप में अंग्रेजी के साथ अन्य प्रमुख सेवा प्रदाताओं के रूप में भारतीयों की आंतरिक प्रतिभा से अवगत हैं, उनके लिए तेजी से अपने दरवाजे खोल रहे हैं। भारतीयों का एक बड़ा वर्ग विश्व की बड़ी कंपनियों में कार्यरत हैं। सूची में गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, एडोब, आईबीएम, पालो आलो नेटवर्क सहित अन्य शामिल हैं।

क्या कारण है कि जन्मभूमि को जननी समझने वाला भारतवासी आज अपनी समृद्धि को भोगने या अपनी प्रतिभा का विदेश की चकाचौंध भरी धरती उपयोग करने, उन्हें लाभ पहुंचाने विदेश की ओर भागता है और वहां जाकर सम्पन्न एवं भोगवादी जीवन जीने लगता है? और यह भी नहीं कि बाहर जाने वाला हर व्यक्ति दक्ष होता है। क्या कारण है कि शस्य श्यामला भारत भूमि पर अपनी समृद्धि से विकास के नये क्षितिज उद्घाटित करने या अपनी प्रतिभा से देश को लाभान्वित करने की बजाय विदेश की धरती को लाभ पहुंचाते हैं। कारणों की लम्जी फरिस्त में मूल है देश में अशांति, आतंक, जटिल कर-कानून व्यवस्था और हिंसा का ताण्डव होना? कारण है -शासन, सत्ता, संग्रह और पद के मद में चूर यह तीसरा राजनीतिक आदमी, जिसने जनतंत्र द्वारा प्राप्त अधिकारों का दुरुपयोग किया और जनतंत्र की रीढ़ को तोड़ दिया है। कृषि प्रधान देश को कुर्सी-प्रधान देश में बदल दिया है। सरकारों हैं-प्रशासन नहीं। कानून हैड्यून्याय नहीं। साधन हैं-अवसर नहीं। भ्रष्टाचार की भीड़ में राष्ट्रीय चरित्र खो गया है। उसे खोजना बहुत कठिन काम है। बड़े त्याग और सहिष्णुता की जरूरत है। पलायनवादी सोच के कगार पर खड़े राष्ट्र को बचाने के लिए राजनीतिज्ञों को अपनी संकीर्ण मनोवृत्ति को त्यागना होगा। तभी समृद्ध हो या प्रतिभाशाली व्यक्ति अपने ही देश में सुख, शांति, संतुलन एवं सह-जीवन का अनुभव कर सकेगा और पलायनवादी सोच से बाहर आ सकेगा।

“ बड़ा सवाल यह भी उठना स्वाभाविक है कि आखिर क्या कमी है हमारे यहां? यह बात सही है कि गांव से कस्बे, कस्बे से शहर और शहरों से महानगरों में जाकर बसने की मानवीय प्रवृत्ति होती है। इसे विकास से भी जोड़ा जा सकता है।

लेकिन जब यह दौड़ बहुत ज्यादा होने लगे और लोग अपनी जड़ें ही छोड़ने को आकुल दिखें तो सोचना जरूरी हो जाता है। मुम्बई, दिल्ली, बैंगलूरु जैसे महानगर दुनिया के दूसरे महानगरों को टक्कर देने वाले हैं।



योग भारतीय प्राचीन संस्कृति की परम्पराओं को समाहित करता है

हर साल अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को मनाया जाता है। इस साल पूरे विश्व में नौवाँ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाएगा। भारत देश में योग दिवस का एक अपना ही अलग महत्व है। योग भारतीय प्राचीन संस्कृति की परम्पराओं को समाहित करता है। भारत देश में योग का प्राचीन समय से ही अहम स्थान है। पतंजलि योग दर्शन में कहा गया है कि- योगश्चित्ववृत्त निरोधः अर्थात् चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो हृदय की प्रकृति का संरक्षण ही योग है। जो मनुष्य को समरसता की और ले जाता है। योग मनुष्य की समता और ममता को मजबूती प्रदान करता है। यह एक प्रकार का शारारिक व्यायाम ही नहीं है बल्कि जीवात्मा का परमात्मा से पूर्णतया मिलन है। योग शरीर को तो स्वस्थ रखता है ही इसके साथ-साथ मन और दिमाग को भी एकाग्र रखने में अपना योगदान देता है। योग मनुष्य में नये-नये सकारात्मक विचारों की उत्पत्ति करता है। जो कि मनुष्य को गलत प्रवृत्ति में जाने से रोकते हैं। योग मन और दिमाग की अशुद्धता को बाहर निकालकर फेंक देता है। साथ-साथ योग से मनुष्य के अन्दर की नकारात्मकता खत्म होती है। योग व्यक्तिगत चेतना को मजबूती प्रदान करता है। योग मानसिक नियंत्रण का भी माध्यम है। हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म में योग को आध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाता है। योग मन और दिमाग को तो एकाग्र रखता है ही साथ ही साथ योग हमारी आत्मा को भी शुद्ध करता है। योग मनुष्य को अनेक बीमारियों से बचाता है और योग से हम कई बीमारियों का इलाज भी कर सकते हैं। असल में कहा जाते तो योग जीवन जीने का माध्यम है।

श्रीमद्भागवत गीता में कई प्रकार के योगों का उल्लेख किया गया है। भगवद गीता का पूरा छठा अध्याय योग को समर्पित है। इस में योग के तीन प्रमुख प्रकारों के बारे में बताया गया है। इसमें प्रमुख रूप से कर्म योग, भक्ति योग और ज्ञान योग का उल्लेख किया गया है। कर्म योग- कार्य करने का योग है। इसमें व्यक्ति अपने स्थिति के उचित और कर्तव्यों के अनुसार कर्मों का श्रद्धापूर्वक निर्वाह करता है। भक्ति योग- भक्ति का योग। भगवान के प्रति भक्ति। इसे भावनात्मक आचरण वाले लोगों को सुझाया जाता है। और ज्ञान योग- ज्ञान का योग अर्थात् ज्ञान अर्जित करने का योग। भगवत गीता के छठे अध्याय में बताये गए सभी योग जीवन का आधार हैं। इनके बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। भगवन्नीता में योग के बारे में बताया गया है कि इन्हीं सिद्धांश्यसिद्ध्यों समोभूत्वा समत्वयोग उच्चते। अर्थात् दुःख-सुख, लाभ-अलाभ, शत्रु-मित्र, शीत और उष्ण आदि द्वन्द्वों में सर्वत्र समभाव रखना योग है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो योग मनुष्य को सुख-दुःख, लाभ-अलाभ, शत्रु-मित्र, शीत और उष्ण आदि परिस्थितियों में सामान आचरण की शक्ति प्रदान करता है। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में एक स्थल पर कहा है ह्योगः कर्मसु कौशलम् अर्थात् योग से कर्मों में कुशलता आती है। वास्तव में जो मनुष्य योग करता है उसका शरीर, मन और दिमाग तरीका रहता है। और मनुष्य प्रत्येक काम मन लगाकर करता है।

27 सितंबर 2014 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र में अपने पहले संबोधन में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने की जोरदार पैरवाई की थी। इस प्रस्ताव में उहोने 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मान्यता दिए जाने की बात कही थी। मोदी की इस पहल का 177 देशों ने समर्थन किया। संयुक्त राष्ट्र महासभा के 69वें सत्र में इस आशय के प्रस्ताव को लगभग सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया। और 11 दिसम्बर 2014 को को संयुक्त राष्ट्र में 193 सदस्यों द्वारा 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को मनाने के प्रस्ताव को मंजूरी मिली। प्रधानमंत्री मोदी के इस प्रस्ताव को 90 दिन के अंदर पूर्ण बहुमत से पारित किया गया, जो संयुक्त राष्ट्र संघ में किसी दिवस प्रस्ताव के लिए सबसे कम समय है। पहला अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2015 को मनाया गया और पूरे विश्व में धूमधाम से मनाया गया। इस दिन करोड़ों लोगों ने विश्व में योग किया जो कि एक रिकॉर्ड था। योग दिवस में हायसूर्य नमस्कार व ह्योम उच्चारण का कुछ मुस्लिम संगठन विरोध करते रहे हैं। असल



में कहा जाए तो ह्योम शब्द योग के साथ जुड़ा हुआ है। इसे विवाद में उच्चेतन करना दुर्भाग्यपूर्ण है। लेकिन इसे हर किसी पर थोपा भी नहीं जा सकता। इसलिए योग करते समय लोगों को ह्योम उच्चारण को अपनी धार्मिक मान्यता की आजादी के अनुसार प्रयोग करना चाहिए। अगर किसी का धर्म ओम उच्चारण की आजादी नहीं देता तो उन्हें बिना ओम जाप के योग करना चाहिए। लेकिन योग को किसी एक धर्म से जोड़कर विवाद पैदा नहीं करना चाहिए। आज के समय में योग को भारत के जन-जन तक योग को पहुँचाने में योग गुरु बाबा रामदेव, आध्यात्मिक गुरु श्री श्री रविशंकर सहित अनेकों ऐसे महापुरुषों का अहम योगदान है। इनके योग के क्षेत्र में योगदान की वजह से ही आज भारत के घर-घर में प्रतिदिन योग होता है। भगवन्नीता के अनुसार इन्हीं तस्माद्योगाययुज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् अर्थात् कर्तव्य कर्म बन्धक न हो, इसलिए निष्काम भावाना से अनुप्रेरित होकर कर्तव्य करने का कौशल योग है। योग को सभी लोगों को सकारात्मक भाव से लेना चाहिए। कोई भी धर्म-सम्प्रदाय योग की मनाही नहीं करता। इसलिए लोगों को योग को विवाद में नहीं घसीटना चाहिए। योग बुद्धि कुशल बनाता है और संयम बरतने की शक्ति देता है। योग की जितनी धार्मिक मान्यता है। उतना ही योग स्वस्थ शरीर के लिए जरूरी है। योग से शरीर तो स्वस्थ रहता है ही साथ ही साथ योग चिंता के भाव को कम करता है। और मनोबल भी मजबूत करता है। योग मानसिक शान्ति प्रदान करता है और जीवन के प्रति उत्साह और ऊर्जा का संचार करता है।

“ ”

श्रीमद्भागवत गीता में कई प्रकार के योगों का उल्लेख किया गया है। भगवद गीता का पूरा छठा अध्याय योग को समर्पित है। इस में योग के तीन प्रमुख प्रकारों के बारे में बताया गया है।

योग और ज्ञान योग का उल्लेख किया गया है। कर्म योग- कार्य करने का योग है। इसमें प्रमुख रूप से कर्म योग, भक्ति योग और ज्ञान योग का उल्लेख किया गया है। कर्म योग के अंदर पूर्ण बहुमत से पारित किया गया, जो संयुक्त राष्ट्र संघ में किसी दिवस प्रस्ताव के लिए सबसे कम समय है। पहला अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2015 को मनाया गया और पूरे विश्व में धूमधाम से मनाया गया। इस दिन करोड़ों लोगों ने विश्व में योग किया जो कि एक रिकॉर्ड था। योग दिवस में हायसूर्य नमस्कार व ह्योम उच्चारण का कुछ मुस्लिम संगठन विरोध करते रहे हैं। असल

मोदी के हनुमान बिगाड़ देंगे नीतीश का सियासी खेल

एनडीए में पासवान के एंट्री के बाद महागठबंधन को ऐसे होगा नुकसान



राकेश कुमार

समाचार संपादक,
उभरता बिहार

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने चिराग पासवान को पत्र लिखा है। पीएम मोदी की अध्यक्षता में एनडीए के घटक दलों की बैठक 18 जुलाई को बैठक होगी। इस बैठक में चिराग पासवान भी शामिल होंगे। जेपी नड्डा के इस पत्र के बाद बिहार में सियासी हलचल तेज हो गई है। चिराग पासवान को नरेंद्र मोदी का 'हनुमान' कहा जाता है। चिराग पासवान एनडीए गठबंधन में रहकर और गठबंधन से बाहर रहकर भी बीजेपी का सहयोग करते रहे हैं। 2020 में हुए विधानसभा चुनाव में चिराग पासवान ने ही नीतीश कुमार के खेल को बिगाड़ दिया था। वही, चिराग पासवान के एनडीए में शामिल होने के बाद महागठबंधन की चिंता बढ़ जाएगी। इन दिनों बिहार में चिराग पासवान को अपार समर्थन मिल रहा है।

बिहार में चिराग की है काफी लोकप्रियता

गैरतलब हो कि बिहार के लगभग 56 फीसदी वोटर्स 18 से 40 साल के बीच के आयु समूह के हैं। चिराग पासवान बिहार के ही नहीं देश में उभरते हुए एक युवा नेता हैं। बिहार में इनकी लोकप्रियता काफी है। तेजस्वी, चिराग, कहैया, पीके के बाद, बीजेपी ने भी इस सच को समझते हुए एक युवा, सप्ट्राट चौधरी को राज्य की कमान सौंपी है। नीतीश कुमार के बाद बिहार को एक युवा मुख्यमंत्री मिले तो कोई आश्वर्य नहीं होना चाहिए। चिराग पासवान की पार्टी की पकड़ सभी जातियों में है। चिराग को सभी जाति के लोग पसंद करते हैं।

चिराग के रणनीति में फंस चुके हैं नीतीश

2020 के विधानसभा चुनाव में चिराग पासवान ने 135 सीटों पर चुनाव लड़ने का फैसला किया और ज्यादातर ऐसी सीटों पर उम्मीदवार दिए, जहां से



जेडीयू के उम्मीदवार मैदान में थे। हालांकि यह भी कहा गया कि वे यह सब बीजेपी के इशारे पर कर रहे थे। नतीजा यह हुआ कि करीब 6 फीसदी वोट पा कर खुद की पार्टी को तो नहीं जीत दिला पाए लेकिन जेडीयू की सीटों की संख्या पिछले चुनाव के मुकाबले 28 कम करने में वे सफल रहे। तब जेडीयू 43 सीटों पर ही जीत सकी। चिराग के इस खेल से नीतीश कुमार को काफी नुकसान हुआ था।

बिहार पर बीजेपी की है खास नजर

अभी 2024 में लोकसभा चुनाव और 2025 में बिहार विधानसभा का चुनाव होना है। ऐसे में बीजेपी बिहार में काफी फोकस की हुई है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह बिहार का कई बार दौरा कर चुके हैं। इसके साथ ही बीजेपी इन दिनों नीतीश के खिलाफ बाले सभी नेताओं को भाव दे रही है। इसमें उपेंद्र कुशवाहा, जीतन राम मांझी, मुकेश सहनी और चिराग पासवान शामिल हैं। बीजेपी को चिराग से ज्यादा उम्मीद है। बीजेपी चिराग का करामात 2020 के चुनाव में देख चुकी है।

महागठबंधन की मुश्किलें बढ़ सकती हैं

2024 और 2025 चुनाव में बीजेपी चिराग को पिछली बार से ज्यादा सीटें दे सकती है। बीजेपी नीतीश कुमार को पूरी तरह से डैमेज करना चाहती है। इसके लिए बीजेपी एक बार फिर चिराग पासवान पर भरोसा करेगी। बिहार की राजनीति को चिराग पासवान अच्छे से समझते हैं। चिराग पासवान लगातार बिहार के सभी जिलों में दौरा कर रहे हैं। एक सीटों पर जीत की समीकरण भी तैयार कर रहे हैं। चिराग के इस समीकरण से बीजेपी को काफी लाभ मिलेगा। चुनावी मैदान में महागठबंधन के खिलाफ चिराग पासवान ऐसे उम्मीदवार को उतारेंगे जो महागठबंधन को मात दे सके। बिहार की राजनीति में चिराग पासवान के अनुभव से बीजेपी की सीट शेयरिंग जीत के लिहाज से महत्वपूर्ण होगा। चिराग पासवान सीएम नीतीश कुमार को एकबार पटखनी दे चुके हैं। इस बार भी महागठबंधन की मुश्किलें बढ़ने वाली हैं।

मातृभाषा और बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा में भारतीय भाषाओं का महत्व



किसी व्यक्ति के जीवन में उसकी मातृभाषा के महत्व की सबसे अच्छी और सटीक तुलना करने के लिए माँ के दूध से बेहतर कुछ नहीं। जैसे जन्म के एक या दो वर्ष तक बच्चे के शारीरिक और भावनात्मक विकास के लिए माँ का दूध और स्पर्श सर्वश्रेष्ठ होते हैं वैसे ही उसके संवेगात्मक, बौद्धिक और भाषिक विकास के लिए मातृभाषा या माँ बोली। मातृभाषा की इस भूमिका पर संसार में कोई भी मतभेद नहीं है, वैसे ही जैसे माँ के दूध के महत्व, प्रभाव और भूमिका पर कोई मतभिन्नता नहीं है।

बच्चों की प्रारंभिक देखभाल और शिक्षा में मातृभाषा या पारिवारिक भाषा या परिवेश/स्थानीय भाषा का महत्व उन मुद्दों भर विषयों में है जिस पर इतने सारे शोध, प्रयोग, अध्ययन हुए हैं, इतनी सारी किताबें लिखी गई हैं कि अब इसे एक सार्वभौमिक निर्विवाद सत्य के रूप में वैश्विक स्वीकृति मिल गई है। शिक्षाविद् जानते हैं कि 6 साल की उम्र तक बच्चों के ८०-८५ प्रतिशत मस्तिष्क का विकास हो जाता है। यह भी अब एक सर्वाविदित तथ्य है कि दो से आठ साल की उम्र के बीच कई भाषाएं आसानी से सीख लेने की क्षमता बच्चों में सबसे प्रबल होती है।

शोधों ने यह सिद्ध किया है कि जीवन के आरंभिक वर्षों और प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा माध्यम में पढ़ने वाले बच्चों में सर्वश्रेष्ठ संवेगात्मक विकास के साथ सभी विषयों की समझ और अधिगम भी बेहतर होते हैं उन बच्चों की तुलना में जिन्हें

“ बच्चों की प्रारंभिक देखभाल और शिक्षा में मातृभाषा या पारिवारिक भाषा या परिवेश/स्थानीय भाषा का महत्व उन मुद्दों भर विषयों में है जिस पर पूरी दुनिया के शिक्षाविदों और मनोवैज्ञानिकों की सवार्नुमति है। इस विषय पर इतने सारे शोध, प्रयोग, अध्ययन हुए हैं, इतनी सारी किताबें लिखी गई हैं कि अब इसे एक सार्वभौमिक निर्विवाद सत्य के रूप में वैश्विक स्वीकृति मिल गई है। शिक्षाविद् जानते हैं कि 6 साल की उम्र तक बच्चों के ८०-८५ प्रतिशत मस्तिष्क का विकास हो जाता है।

प्रतिशत मस्तिष्क का विकास हो जाता है।



अपनी मातृभाषा/परिवेश भाषा से अलग किसी भाषा में पढ़ना पड़ता है। इतना ही नहीं, दूसरी भाषाएं सीखने में भी मातृभाषा/परिवेश भाषा में पढ़ने वाले बच्चे आगे पाए गए उन दूसरी श्रेणी के बच्चों की तुलना में। यानी प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा माध्यम शिक्षा बच्चों को बहुभाषी बनाने में भी श्रेष्ठतर साबित होती है।

यह तथ्य अकेला ही पर्याप्त है यह सिद्ध करने के लिए कि दुनिया के किसी भी स्थान-समाज में जन्म लेने वाले बच्चों के लिए मातृभाषा/परिवेश/स्थानीय भाषा ही सर्वांगीन विकास तथा सभी विषयों के बारे में सीखने के लिए सर्वोत्तम माध्यम होती है। यह बात सुदूर जंगलों में रहने वाले वनवासी बच्चों पर भी उतनी है लागू होती है जितनी सबसे विकसित, संपन्न समाजों-देशों के बच्चों पर।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि भाषाविदों के अनुसार समाज विकसित या अविकसित हो सकते हैं लेकिन कोई भी भाषा अविकसित नहीं होती। संसार की हर भाषा में अपने बोलने-बरतने वालों की सभी संचार-अभिव्यक्ति-आवश्यकताओं को पूरा करने की अन्तर्निहित क्षमता होती है।

यह बात इसलिए केन्द्रीय महत्व की है कि बहुत से ऐसे देशों-समाजों में जो आधुनिक विकास, संपन्नता, तकनीकी-आर्थिक प्रगति में विकसित देशों से पिछड़ गए हैं, लोगों के मन में यह बात बिठा दी जाती है कि उनकी अपनी देशज, स्थानीय भाषाएं विकसित देशों की तथाकथित विकसित भाषाओं की तुलना में अविकसित, गरीब और असमृद्ध हैं। यह स्थिति ज्यादातर उन देशों की है जो किसी न किसी औपनिवेशिक देश की दासता के शिकार रहे हैं। अपनी भाषा-संस्कृति-समाज-समझ की हीनता का यह भाव इन समाजों में अपनी विरासत, अपनी हर बात को लेकर एक गहरा हीनता-भाव, आत्म-लज्जा भर देता है। उनके आत्म-विश्वास को खंडित कर देता है।

इस औपनिवेशिकता-जनित आत्महीनता का एक परिणाम यह होता है कि ऐसे विजेता समाज अपनी भाषा, अपनी सांस्कृतिक पहचान, तौर-तरीकों, परंपराओं, पद्धतियों, ज्ञान-परंपराओं को लेकर गहरे संशय और अविश्वास से भर जाते हैं। उन्हें विजेता समाज, संस्कृति, भाषा, शिक्षा, जीवन शैली श्रेष्ठतर लगने लगते हैं। परिणामतः वे अपने पारंपरिक तौर तरीके छोड़ कर विजेता या प्रभुत्वशाली वर्ग के तौर तरीके अपनाने लगते हैं। उनकी नकल करने लगते हैं। विश्व के सभी पूर्व-औपनिवेशिक देश-समाज इस आत्महत्ता चेतना से ग्रस्त हो गहरी और व्यापक सांस्कृतिक-बौद्धिक-शैक्षिक दासता के शिकार बने दिखते हैं भले ही उन्हें राजनीतिक स्वाधीनता मिल गई हो।

सांस्कृतिक दासता का एक स्पष्ट परिणाम उस समाज में नवाचार, मौलिक चिंतन, शोध, आविष्कारों की कमी में दिखता है। चूँकि समाज का शिक्षित वर्ग पराई शिक्षा पद्धति और विचार संरणियों की नकल करना हृदयंगम कर चुका होता है इसलिए

अपनी नैसर्गिक प्रकृति तथा प्रतिभा की नींव पर मौलिक विचार, कल्पनाओं और नवोन्मेषी की उसकी क्षमता क्षीण पड़ जाती है।

भाषायी साम्राज्यवाद- ह्लवह परिघटना जिसमें एक भाषा के बोलने वालों के मन-मस्तिष्क और जीवन एक दूसरी भाषा द्वारा इतने दबा दिए जाते हैं कि वे यह विश्वास करते हैं कि जब मामला जीवन के उच्चरतर पहलुओं का हो तो वे उसी विदेशी भाषा का प्रयोग कर सकते हैं और उन्हें करना चाहिए जब मामला जीवन के उन्नत पक्षों से, जैसे शिक्षा, दर्शन, साहित्य, शासन, प्रशासन, न्याय व्यवस्था आदि, निपटने का हो। भाषायी साम्राज्यवाद में किसी समाज के श्रेष्ठ लोगों के भी मानस, दृष्टिकोणों और आकांक्षाओं को विकृत करने और उन्हें देशज भाषाओं के सही मूल्यांकन तथा उनकी संपूर्ण संभावनाओं का अहसास करने से रोकने की एक शक्ति है।

भारत भी इस ऐतिहासिक विकार, भाषायी साम्राज्यवाद का शिकार है

इस विषय का दूसरा पहलू बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में मातृभाषा या भाषा की भूमिका का है। इसे समझने से पहले यह जरूरी है कि भाषा के बारे में इस सबसे बड़ी लगभग वैश्विक और सार्वभौमिक गलतफहमी को दूर किया जाए कि भाषा केवल संवाद का माध्यम है। जब तक इस भ्रम को दूर नहीं समझा जाता तब तक बच्चों की प्रारंभिक देखभाल तथा शिक्षा में मातृभाषा के महत्व को नहीं समझा जा सकता। जिस तरह गर्भनाल के माध्यम से बच्चे को मां के गर्भ में सारा पोषण प्राप्त होता है।

“ “ यह बात इसलिए केन्द्रीय महत्व की है कि बहुत से ऐसे देशों-समाजों में जो आधुनिक विकास, संपन्नता, तकनीकी-आर्थिक प्रगति में विकसित देशों से पिछड़ गए हैं, लोगों के मन में यह बात बिठा दी

जाती है कि उनकी अपनी देशज, स्थानीय भाषाएं विकसित देशों की तथाकथित विकसित भाषाओं की तुलना में अविकसित, गरीब और असमृद्ध हैं। यह स्थिति ज्यादातर उन देशों की है जो किसी न किसी औपनिवेशिक देश की दासता के शिकार रहे हैं।

जनपथ न्यूज वेब पोर्टल ने मनाया अपना नौवा वर्षगाट और पाटलिपुत्र सम्मान 2023 में किया कई लोगों को सम्मानित



बिहार की राजधानी पटना के होटल चाणक्य में जनपथ न्यूज ने अपना नौवा वर्षगांठ मनाया जिसका उद्घाटन सांसद रामकृपाल यादव, एमएलसी डॉ. अजय कुमार सिंह, पटना हाईकोर्ट के वरीय अधिवक्ता उपेंद्र प्रसाद, वीणा कुमारी जयसवाल, बिहार पुलिस एसोसिएशन के अध्यक्ष मृत्युंजय कुमार सिंह ने दीप प्रज्वलित कर किया। जनपथ न्यूज ने अपने नौवे वर्षगांठ में पाटलिपुत्र सम्मान

बताते चले कि पाटलिपुत्र सम्मान 2023 में सांसद राम कृपाल यादव व एमएलसी डॉ. अजय कुमार सिंह ने कई लोगों को मोमेंटो व सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया। पाटलिपुत्र सम्मान 2023 में पत्रकारिता के क्षेत्र मेंौं ठीक्ड़ बिहार/झारखंड के ब्यूरो चीफ रजनीश, डॉ. राकेश कुमार, छातापुर चरनई के

“

पाटलिपुत्र सम्मान 2023 में सांसद राम कृपाल यादव व एमएलसी डॉ. अजय कुमार सिंह ने कई लोगों को मोमेंटो व सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया। पाटलिपुत्र सम्मान 2023 में पत्रकारिता के क्षेत्र मेंौं ठीक्ड़ २ बिहार/झारखंड के ब्यूरो चीफ रजनीश, डॉ. राकेश कुमार, छातापुर चरनई के मुखिया दीपक कुमार सरदार, निशांत गुप्ता, रितेश कुमार सिंह, खेल क्षेत्र से रूपक कुमार, श्रमजीवी पत्रकार संघ के अध्यक्ष जितेंद्र कुमार सिंह, एडोवेट व उभरता बिहार के संपादक राजीव रंजन, इंजीनियर रंजीत कुमार रणवीर व अन्य लोगों को सम्मानित किया गया।



मुखिया दीपक कुमार सरदार, निशांत गुप्ता, रितेश कुमार सिंह, खेल क्षेत्र से रूपक कुमार, श्रमजीवी पत्रकार संघ के अध्यक्ष जितेंद्र कुमार सिंह, एडोवेट व उभरता बिहार के संपादक राजीव रंजन, इंजीनियर रंजीत कुमार रणवीर व अन्य लोगों को सम्मानित किया गया। सांसद रामकृपाल यादव ने जनपथ न्यूज के नौवे वर्षगांठ समारोह में कहा कि पत्रकारिता क्षेत्र में जनपथ न्यूज अपने शुरूआत से ही सही पत्रकारिता कर रहा है और आम लोगों की समस्या पर हमेशा आवाज उठाता रहा है और जनपथ न्यूज की पत्रकारिता शैली को हम हमेशा प्रोत्साहन देते हैं।

विधान पार्षद सदस्य डॉक्टर अजय कुमार सिंह ने कहा कि आज पत्रकारिता क्षेत्र में पीत पत्रकारिता बहुत ज्यादा हो रहा लेकिन जनपथ न्यूज हमेशा पीत पत्रकारिता से अपने को दूर रखा है और सच्ची पत्रकारिता पर ध्यान दिया है। आप

लोगों की समस्याओं पर जनपथ न्यूज ने हमेशा सरकार तक उनकी आवाज पहुंचाई है। जनपथ न्यूज के बारे में उन्होंने कहा कि यह जन जन की आवाज है और हमेशा सच की तह तक खबर दिखाता है। जनपथ न्यूज के नौवे वर्षगांठ व पाटलिपुत्र सम्मान 2023 समारोह में मुख्य अधिति के रूप में सांसद राम कृपाल यादव, विधान परिषद सदस्य डॉ. अजय कुमार सिंह, पटना हाईकोर्ट के वरीय अधिकर्ता उपेंद्र प्रसाद, वीणा कुमारी जयसवाल, बिहार पुलिस एसोसिएशन के अध्यक्ष मृत्युंजय कुमार सिंह शामिल हुए। आपको बता दे कि इस कार्यक्रम का संचालन बिहार के सबसे ज्यादा चर्चित एंकर व राष्ट्रीय उद्घोषक पृथ्वी राज यदुवंशी ने किया। इस कार्यक्रम में जनपथ न्यूज के मुख्य संपादक व निदेशक राकेश कुमार, संस्थापक राजीव रंजन, संरक्षक रंजीत कुमार रणवीर ने मुख्य अतिथियों को बुके, अंग वस्त्र देकर का स्वागत किया।



अमित शाह से क्यों इतनी नफरत करते हैं नीतीश कुमार..!

तेजस्वी के एमएलसी को गृह मंत्री के साथ फोटो खिंचवाने पर लगा ढी व्लास



राकेश कुमार

समाचार संपादक, उभरता बिहार

बिहार विधानमंडल का मानसून सत्र सोमवार से शुरू हो चुका है। सत्र के पहले दिन बीजेपी ने उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव के इस्तीफे की मांग करते हुए हंगामा किया। बीजेपी 'नौकरी के बदले जमीन' लेने सबधी घोटाले में तेजस्वी के खिलाफ सीधीआई के आरोप पत्र दायर किए

जाने के मद्देनजर उनके इस्तीफे की मांग कर रही है। दूसरी ओर महागठबंधन विधानमंडल दल की बैठक में भी जोरदार हंगामा देखने को मिला। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, बैठक में नीतीश कुमार आरजेडी एमएलसी सुनील सिंह पर भड़क गए। बताया जा रहा है कि सीएम नीतीश केंद्रीय मंत्री अमित शाह के साथ फोटो खिंचवाने पर भड़क गए। खबर है कि नीतीश कुमार के आरोपों पर सुनील सिंह भी भड़क गए और खड़े होकर जवाब देने लगे। बताया जा रहा है कि हालात इतने बिगड़ गए कि डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव को बीच बचाव करना पड़ा।

बैठक में नाराज दिखे नीतीश कुमार

बताया जा रहा है कि विधानमंडल दल की बैठक में नीतीश कुमार सिर्फ आरजेडी एमएलसी सुनील सिंह पर ही नहीं, कांग्रेस और खुद की पार्टी के कुछ विधायकों पर भी नाराज दिखे। इस दौरान नीतीश कुमार बीजेपी नेता अमित शाह के साथ तस्वीर खिंचवाने को लेकर सुनील सिंह की कलास लगाई। हालांकि इस दौरान सुनील सिंह भी तीखे तेवर से नीतीश कुमार को जवाब देते नजर आए। स्थिति बिगड़ता देख तेजस्वी यादव को आगे आना पड़ा। तेजस्वी यादव ने मामले को संभाला और एमएलसी सुनील सिंह को शांत कराया।

अमित शाह से क्यों नहीं मिलूँगा?

बताया जा रहा है कि नीतीश कुमार और सुनील सिंह के बीच जब नोकझोंक हो रही थी, उस दौरान सनील सिंह तीखे तेवर में नीतीश कुमार को जवाब दे रहे थे। सुनील सिंह ने कहा कि मैं 27 साल से राजनीति में हूं। 27 साल पहले जहां था, आज भी उसी जगह खड़ा हूं। मेरी विश्वसनीयता के ऊपर कोई सवाल नहीं



उठ सकता। आरजेडी एमएलसी ने कहा कि अमित शाह केंद्रीय सहकारिता मंत्री हैं, और इस नाते मुलाकात करने में कोई हर्ज नहीं है। सुनील सिंह ने आगे कहा कि आरजेडी प्रमुख लालू यादव ने चुप रहने को कहा है, इसलिए शांत हूं।

टूट की खबरों से परेशान हैं नीतीश कुमार

दरअसल, कुछ दिनों से आरजेडी एमएलसी सुनील सिंह अपनी ही सरकार के खिलाफ मौंचा खोल रखा है। शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर और उनके विभाग के अपर मुख्य सचिव के काम पाठक के बीच जारी विवाद के दौरान उन्होंने अपनी ही सरकार के ऊपर सवालिया निशान खड़े किए थे। बताया जा रहा है कि इसी बात को लेकर नीतीश कुमार सुनील सिंह से नाराज चल रहे हैं। दूसरी ओर टूट की खबरों से भी नीतीश कुमार परेशान हैं। यही कारण है कि महागठबंधन विधानमंडल दल की बैठक में नीतीश कुमार अलग अंदाज में दिखे। बताया जा रहा है कि कांग्रेस के कुछ विधायकों पर भी नीतीश कुमार नाराज दिखे। इस दौरान उन्होंने कहा कि सब पता है कि कौन किसके संपर्क में है।

“ “

बताया जा रहा है कि विधानमंडल दल की बैठक में नीतीश कुमार सिर्फ आरजेडी एमएलसी सुनील सिंह पर ही नहीं, कांग्रेस और खुद की पार्टी के कुछ विधायकों पर भी नीतीश कुमार बीजेपी नेता अमित शाह के साथ तस्वीर खिंचवाने को लेकर सुनील सिंह की कलास लगाई। हालांकि इस दौरान सुनील सिंह भी तीखे तेवर से नीतीश कुमार को जवाब देते नजर आए। स्थिति बिगड़ता देख तेजस्वी यादव को आगे आना पड़ा। तेजस्वी को आगे आना पड़ा।

पौराणिक और ऐतिहासिक महत्व वाले हैं पटना के बैकटपुर धाम मंदिर

आभा सिन्हा, पटना



बिहार की राजधानी पटना में पटना जंक्शन से लगभग 35 किलोमीटर दूर, खुसरूपुर प्रखण्ड स्थित बैकटपुर गांव में, मुगल शासक अकबर के सेनापति मान सिंह द्वारा शिवलिंग रूप में भगवान शिव के साथ माता-पार्वती का निर्माण कराया गया था। इस प्राचीन शिवलिंग में 112 शिवलिंग कटिंग हैं जिसे द्वादश शिवलिंग से भी जाना जाता है। इसप्रकार यह प्राचीन मंदिर बैकटपुर गांव में है, जहां शिवलिंग रूप में भगवान शिव के साथ माता-पार्वती भी विराजमान हैं। यह प्राचीन और ऐतिहासिक शिव मंदिर को लोग श्री गौरीशंकर बैकुंठ धाम के नाम से भी जानते हैं। मंदिर में पूजा-पाठ करने वाले पंडा सुभाष पांडे ने बताया कि अकबर के सेनापति रहे राजा मान सिंह, जब गंगा नदी में जलमार्ग से, बंगाल विद्रोह को खत्म करने के लिए अपने परिवार के साथ रनियासाराय जा रहे थे, उसी वक्त राजा मान सिंह की नाव, गंगा नदी स्थित कौड़िया खाड़ में फंस गई। काफी प्रयास करने के बाद भी जब राजा मान सिंह की नाव कौड़िया खाड़ से नहीं निकल सकी, तो पूरी रात मानसिंह को सेना सहित वहीं डेरा डालना पड़ा। सुभाष पांडे ने आगे बताया कि (बुजुर्ग से सुनी गई कहानियों के अनुसार) उस रात को राजा मान सिंह को सपने में भगवान शंकर ने दर्शन दिया और कौड़िया खाड़ के पहले स्थापित जीर्ण-शीर्ण मंदिर को पुनः स्थापित करने को कहा। मान सिंह ने उसी रात मंदिर के जीर्णोद्धार का आदेश दिया और उसके बाद यात्रा शुरू की। राजा मान सिंह को बंगाल में उन्हें विजय प्राप्त हुआ। सुभाष पांडे का कहना है कि वर्तमान मंदिर में जो शिवलिंग, माता पार्वती के साथ स्थापित है वह राजा मान सिंह का स्थापित किया हुआ है।

सुभाष पांडे ने बताया कि इस मंदिर की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यहां भगवान शिव और पार्वती एक साथ एक ही शिवलिंग रूप में विराजमान हैं। बड़े शिवलिंग में 112 छोटे-छोटे शिवलिंगों को रूद्र कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि बैकटपुर जैसा शिवलिंग पूरी दुनिया में कहीं और नहीं है।

उन्होंने बताया कि मंदिर का इतिहास महाभारत काल से जुड़ा हुआ है। पुरानी कथाओं के अनुसार महाभारत काल के जरासंध से भी इसका है। मान्यताओं के अनुसार, मगध क्षेत्र के राजा जरासंध के पिता बृहद्रथ भगवान भोलेनाथ का भक्त था। शास्त्रों के अनुसार, प्रतिदिन वह गंगा किनारे आते थे और भगवान भोलेनाथ की पूजा करते थे। इसी जगह पर एक ऋषि मुनि ने राजा बृहद्रथ को संतान उत्पत्ति के लिए एक फल दिया था, राजा बृहद्रथ को दो रानियाँ थीं, इसलिए राजा बृहद्रथ ने फल के दो टुकड़े कर अपनी दोनों परियों को खिला दिया था। फलस्वरूप दोनों रानियों के एक पुत्र के अलग-अलग टुकड़े हुए थे जिसे जंगल में फेंकवाया गया था। उसके बाद उसे जोड़ा नाम की राक्षसी ने जोड़ दिया जिसे जरासंध के नाम से जाना गया। जरासंध भगवान शंकर का बहुत बड़ा भक्त था। जरासंध रोज इस मंदिर में राजगृह से आकर पूजा करता था। जरासंध हमेशा अपनी बांह पर एक शिवलिंग की आकृति का ताबीज पहने रहता था। जरासंध को भगवान शंकर का वरदान था कि जब तक उसके बांह पर शिवलिंग रहेगा तब तक उसे कोई हरा नहीं सकता है। जरासंध को पराजित करने के लिए श्रीकृष्ण ने छल से जरासंध की बांह पर बंधे शिवलिंग को गंगा में प्रवाहित करा दिया था और तब वह मारा गया था।

सुभाष पांडे ने बताया कि इस मंदिर को रामायण से भी जोड़ा जाता है। रामायण में बैकटपुर मंदिर की चर्चा है। प्राचीन काल में गंगा के तट पर बसा यह क्षेत्र बैकुंठ वन के नाम से जाना जाता था। अनंद रामायण में इस गंगा की चर्चा बैकुंठ के रूप में हुई है। लंका विजय के बाद रावण को मारने से जो ब्राह्मण हत्या का पाप लगा था, उस पाप से मुक्ति के लिए श्रीराम जी ने इस मंदिर में आए थे। यह भी कहा जाता है कि यहां आने के लिए गंगा नदी के उस तरफ के एक गांव में श्रीराम जी ने रात्रि विश्राम किया था, जिसके कारण कारण उस गांव का नाम राधवपुर पड़ा जो वर्तमान में वैशाली जिले के राधेपुर के नाम जाना जाता है।



थे। शिवरात्रि के मौके पर यहां पांच दिनों तक मेला लगा रहता है। बिहार के बाबाधाम के रूप में माना जाता है गौरीशंकर बैकुंठधाम मंदिर।

उन्होंने बताया कि श्री गौरीशंकर बैकुंठधाम मंदिर धार्मिक आस्था का केन्द्र सदियों से रहा है। यह धाम शिवलिंग में 108 रुद्र और शिव-पार्वती का संयुक्त रूप है इसलिए इस मंदिर को अद्वितीय पहचान मिलता है। भक्तों की इस मंदिर पर अगाध रक्षा है। मान्यता है कि सच्चे मन से बैकुंठधाम में भोले शंकर की जो पूजा करता है, उसकी मनोकामना अवश्य पूरी होती है। सावन माह में इस मंदिर में लाखों की संख्या में लोग जलाभिषेक करते हैं। जलाभिषेक के लिए पटना के कलेक्टरेट घाट या फुतुहा के त्रिवेणी कट्टैया घाट से हजारों की संख्या में लोग रविवार को जल उठा कर रात भर की यात्रा कर सोमवार को जल चढ़ाते हैं। काशी में विश्वनाथ और देवधर में बैधनाथ धाम के बीच इस मंदिर को बिहार का बाबाधाम कहा जाता है। चौरी यात्री फाहान ने यात्रा बृतांत में नालंदा दौरे के दौरान बैकटपुर मंदिर की चर्चा की है। लंका विजय के बाद रावण को मारने से जो ब्राह्मण हत्या का पाप लगा था, उस पाप से मुक्ति के लिए श्रीराम जी ने इस मंदिर में आए थे। यह भी कहा जाता है कि यहां आने के लिए गंगा नदी के उस तरफ के एक गांव में श्रीराम जी ने रात्रि विश्राम किया था, जिसके कारण कारण उस गांव का नाम राधवपुर पड़ा जो वर्तमान में वैशाली जिले के राधेपुर के नाम जाना जाता है।

सुभाष पांडे ने कहा कि बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भी हैं इस मंदिर के भक्त। पौराणिक और ऐतिहासिक महत्व वाले इस मंदिर में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भी आते-रहते हैं। यही नहीं बैकटपुर मंदिर में पुरी के शंकराचार्य जगतगुरु निश्चलानंद जी भी 2007 में आ चुके हैं।

“ उन्होंने बताया कि मंदिर का इतिहास महाभारत काल से जुड़ा हुआ है। पुरानी कथाओं के अनुसार महाभारत काल के जरासंध से भी इसका है। मान्यताओं के अनुसार, मगध क्षेत्र के राजा जरासंध के पिता बृहद्रथ भगवान भोलेनाथ का भक्त था। जरासंध रोज इस मंदिर में राजगृह से आकर पूजा करता था। जरासंध हमेशा अपनी बांह पर एक शिवलिंग की आकृति का ताबीज पहने रहता था। जरासंध को भगवान भोलेनाथ का वरदान था कि जब तक उसके बांह पर शिवलिंग रहेगा तब तक उसे कोई हरा नहीं सकता है। जरासंध को पराजित करने के लिए श्रीकृष्ण ने छल से जरासंध की बांह पर बंधे शिवलिंग को गंगा में प्रवाहित करा दिया था और तब वह मारा गया था।

भोलेनाथ का भक्त था। शास्त्रों के अनुसार, प्रतिदिन वह गंगा किनारे आते थे और भगवान भोलेनाथ की पूजा करते थे। इसी जगह पर एक ऋषि मुनि ने राजा बृहद्रथ को संतान उत्पत्ति के लिए एक फल दिया था, राजा बृहद्रथ को दो रानियाँ थीं।

आर्थिक कठिनाइयों का सामना करती विधवाएं



आजादी के सात दशकों बाद भी देश में कुछ जातियां, समुदाय और वर्ग ऐसे हैं जो आज भी गरीबी रेखा से नीचे जीवन बसाय कर रहे हैं। जिन्हें आज भी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं, जो समाज के मुख्यधारा से कटे हुए हैं। लेकिन विधवाओं का वर्ग ऐसा है जो सभी धर्मों, जातियों और समुदायों में मौजूद है। अफसोस की बात यह है कि इस वर्ग को स्वयं समाज द्वारा सभी प्रकार की सुविधाओं से वर्चित कर बहिष्कृत जीवन जीने पर मजबूर कर दिया जाता है। इस वर्ग के कल्याण के उद्देश्य से हर साल 23 जून को अंतरराष्ट्रीय विधवा दिवस मनाया जाता है। यह दिवस विधवाओं के सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में जागरूकता बढ़ाने, उनके अधिकारों और कल्याण के प्रति समर्पित है। इसके माध्यम से विधवाओं के सामने आने वाली सामाजिक, आर्थिक और कानूनी कठिनाइयों को उजागर करना और इन मुद्दों को हल करने के लिए कर्तव्यादी को बढ़ावा देना है।

इस दिवस की स्थापना 2010 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा की गई थी। इसकी शुरूआत एक गैर-सरकारी संगठन लूंबा फाउंडेशन द्वारा की गई थी, जो दुनिया भर में विधवाओं के कल्याण और सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए कार्यरत है। साथ ही इस विशेष दिन का उद्देश्य विधवाओं द्वारा सामना की जाने वाली कठिनाइयों की ओर सभी का ध्यान आकर्षित करना है, जो अकसर भेदभाव, गरीबी, सामाजिक बहिष्कार और अन्य चुनौतियों का सामना करती हैं। यह दिवस लैंगिक समानता, महिला सशक्तिकरण और विधवाओं के लिए सामाजिक न्याय को भी बढ़ावा देना है।

उल्लेखनीय है कि 2011 की जनगणना के अनुसार, देश में 4 करोड़ से अधिक

विधवाएं हैं। भारत में इसका दर राज्यों के हिसाब से अलग-अलग है। भारत में कुल विधवा दर लगभग 8.13 प्रतिशत है। भारत में अधिकांश विधवाएं वृद्ध हैं। लगभग 58 प्रतिशत विधवाओं की आयु 60 वर्ष और उससे अधिक है। सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों के कारण भारत में विधवाओं के बीच पुनर्विवाह की दर आप तौर पर कम है। 2011 की जनगणना के अनुसार, 60 वर्ष और उससे अधिक आयु की केवल 15 प्रतिशत विधवाओं का पुनर्विवाह हुआ है। देश में कई विधवाएं आर्थिक कठिनाइयों का सामना कर रही हैं और गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन

इस दिवस की स्थापना 2010 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा की गई थी। इसकी शुरूआत एक गैर-सरकारी संगठन लूंबा फाउंडेशन द्वारा की गई थी, जो दुनिया भर में विधवाओं के कल्याण और सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए कार्यरत है। साथ ही इस विशेष दिन का उद्देश्य विधवाओं द्वारा सामना की जाने वाली कठिनाइयों की ओर सभी का ध्यान आकर्षित करना है, जो अकसर भेदभाव, गरीबी, सामाजिक बहिष्कार और अन्य चुनौतियों का सामना करती हैं। यह दिवस लैंगिक समानता, महिला सशक्तिकरण और विधवाओं के लिए सामाजिक न्याय को भी बढ़ावा देना है।

करने को विवश हैं। 2011-12 में किए गए राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण में बताया गया है कि ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 46 प्रतिशत और शहरी क्षेत्रों में 32 प्रतिशत विधवाएं गरीबी रेखा से नीचे जीवन व्यतीत कर रही हैं। इसके अलावा देश में विधवाओं की शिक्षा तक सीमित पहुंच है। 2011 की जनगणना के अनुसार, 60 वर्ष और उससे अधिक आयु की लगभग 57 प्रतिशत विधवाएं निरक्षर हैं।

अधिकांश विधवाएं विरासत के अधिकारों से वंचित हैं और वे यौन शोषण या हिंसा की शिकार होती हैं। भारतीय विधवाएं अभी भी अतीत के मानदंडों, परंपराओं और सांस्कृतिक उपेक्षाओं से पीड़ित हैं। विधवाओं द्वारा सामना की जाने वाली दो आम समस्याएं- सामाजिक स्थिति का नुकसान और वित्तीय स्थिति में कमी है। विधवाओं को अपने जीवन के दौरान आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता है। जिसके कारण वे अपने बच्चों को शिक्षा के लिए स्कूल भेजने के बजाय काम पर भेजने के लिए बाध्य हैं। राजस्थान के जालोर जिले के बागरा कस्बे की विधवाओं को कुछ ऐसे ही बुरे हालात से गुजरना पड़ रहा है। कस्बे की रहने वाली सीता देवी के पाति की जब दस साल पहले सङ्कट हादसे में मौत हुई थी, तब उनके बच्चों की उम्र पांच से छह साल के बीच थी। पाति की असामियक मृत्यु के कारण उन्हें अपने पुत्र का स्कूली दाखिला निरस्त कर उसे पैतृक कार्य में लगाना पड़ा। सीता देवी से जब विधवाओं के कल्याण के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं व उनसे मिलने वाले लाभ के बारे में पूछने पर वह कहती हैं, मुझे सरकार की ओर से विधवा पेंशन के नाम पर मात्र 750 रुपये मिलते हैं। इसके अलावा किसी प्रकार की कोई मदद नहीं मिल रही है। 750 रुपये में घर चलाना संभव नहीं है। इस कारण मैंने मजबूरीवश अपने बड़े बेटे का स्कूल छुड़वाकर उसे काम पर लगा दिया और खुद भी मजदूरी कर रही हूँ। अनपढ़ होने के कारण हमें विधवा कल्याण की दिशा में सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं की कोई जानकारी नहीं मिलती और न ही इस बारे में कोई बताता है।

इसी तरह पिछले साल कस्बे की एक अन्य महिला सविता देवी के पाति का भी सङ्कट दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो जाने के कारण परिवार के भरण-पोषण के लिए उन्हें भी अपने तेरह साल के बड़े बेटे का स्कूल छुड़वाकर पैसे कमाने के लिए शहर भेजना पड़ा। शिक्षा से वंचित रखकर बेटे पर कम उम्र में घर की जिम्मेदारी डाल देना कितना ठीक है? इस प्रश्न के जवाब में वह कहती हैं, हम भी नहीं चाहते कि बेटा पढ़ाई की उम्र में पैसा कमाए, लेकिन मजबूरी इंसान से क्या कुछ नहीं करवाती। घर पर दो बेटियां और एक छोटा लड़का भी हैं। कुल मिलाकर पांच लोगों की दैनिक जरूरतों का खर्च। बेटियां बड़ी हैं इसलिए उन्हें काम पर भेज नहीं सकते और छोटा बेटा अभी स्कूल में पढ़ रहा है। सरकार की ओर से क्या लाभ मिल रहा है? इस सवाल के जवाब में वह कहती है, फिलहाल तो पेंशन के रूप में 750 रुपये ही मिलते हैं। वे माह के बीच या आखिर में खाते में जमा होते हैं। इसके अतिरिक्त किसी और तरह की कोई आर्थिक सहायता नहीं मिल रही है। हमने बीपीएल में नाम जुड़वाने की कोशिश की, पर बहुत दौड़-भाग के बाद भी नीतीजा सिफर ही रहा। मैं खुद भी मजदूरी करती हूँ। दो सौ रुपये दिन के मिल जाते हैं। जिससे घर चलाने में आसानी होती है। बेटा अभी शहर में दुकान पर है और काम सीख रहा है। इसलिए फिलहाल घर का खर्च तो मैं ही चला रही हूँ।

विधवाओं के कल्याण और उनकी बदतर आर्थिक-सामाजिक स्थिति के बारे में समाजसेवी दिलीप सिंह का कहना है, जिले में विधवाओं की सबसे बड़ी समस्या आर्थिक संकट है। ग्रामीण क्षेत्रों में घर और पूरे परिवार की आजीविका की जिम्मेदारी अकेले पति के कंधों पर होती है। उनके असमय गुजर जाने के बाद घर का संतुलन बिगड़ जाता है। महिलाओं के अशिक्षित होने के कारण उनके पास मजदूरी करने के अलावा कोई विकल्प नहीं होता है। हालांकि समाज भी अपने स्तर पर विधवाओं की आर्थिक मदद करता रहा है, लेकिन ज्यादातर मामलों में विधवाएं समाज का सहयोग लेने से इनकार कर देती हैं। कारण है उन्हें समाज के अन्य लोगों के बीच असहाय और हीन समझने का डर होता है, जो उनके आत्मसम्मान को ढेर पहुंचाती है। जहां तक बात विधवाओं की सामाजिक स्थिति की है, तो पहले की अपेक्षा अब स्थिति बेहतर हो रही है। समाज विधवा पुनर्विवाह को मान्यता दे रहा है। विधवाओं पर सामाजिक बांदरों भी कम हो रही हैं। समाज में जैसे-जैसे शिक्षा का प्रकाश फैल रहा है, वैसे-वैसे विधवा जीवन से जुड़ी संकीर्ण मानसिकता कम होती जा रही है।

ई-मित्र संचालक प्रवीण कुमार के अनुसार, देश व राज्य में विधवाओं की आर्थिक सहायता के लिए सरकारी कार्यक्रम और सामाजिक पहल के तौर पर कई योजनाएं संचालित हैं, जैसे कि राष्ट्रीय विधवा पेंशन योजना, स्वाधार गृह योजना, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना (पीएमएमवीवाई), महिलाओं के लिए प्रशिक्षण और रोजगार कार्यक्रम में सहायता योजना, राष्ट्रीय पारिवारिक लाभ योजना, अनन्पूर्णा

इसी तरह पिछले साल कस्बे की एक अन्य महिला सविता देवी के पाति का भी सङ्कट दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो जाने के कारण परिवार के भरण-पोषण के लिए उन्हें भी अपने तेरह साल के बड़े बेटे का स्कूल छुड़वाकर पैसे कमाने के लिए शहर भेजना पड़ा। शिक्षा से वंचित रखकर बेटे पर कम उम्र में घर की जिम्मेदारी डाल देना कितना ठीक है? इस प्रश्न के जवाब में वह कहती हैं, हम भी नहीं चाहते कि बेटा पढ़ाई की उम्र में पैसा कमाए, लेकिन मजबूरी इंसान से क्या कुछ नहीं करवाती। घर पर दो बेटियां और एक छोटा लड़का भी हैं। कुल मिलाकर पांच लोगों की दैनिक जरूरतों का खर्च। बेटियां बड़ी हैं इसलिए उन्हें काम पर भेज नहीं सकते और छोटा बेटा अभी स्कूल में पढ़ रहा है। सरकार की ओर से क्या लाभ मिल रहा है? इस सवाल के जवाब में वह कहती है, फिलहाल तो पेंशन के रूप में 750 रुपये ही मिलते हैं। वे माह के बीच या आखिर में खाते में जमा होते हैं। इसके अतिरिक्त किसी और तरह की कोई आर्थिक सहायता नहीं मिल रही है।

योजना इत्यादि। विकसित और विकासशील दोनों देशों में विधवाओं को अपनी सामाजिक स्थिति में कई परिवर्तनों का सामना करना पड़ता है। भारत में विधवाओं को अकसर सामाजिक कलंक और विभिन्न भेदभावपूर्ण प्रथाओं का सामना करना पड़ता है।

खास तौर से पारंपरिक और रूढ़िवादी समुदायों में विधवाओं को पुनर्विवाह प्रतिवंशों का सामना करना पड़ता है। उन्हें सामाजिक जीवन से बहिष्कृत कर दिया जाता है। यहां तक कि उनके पहनावे, शुभ-कार्य में प्रवेश, साज-शृंगार व आभूषण पहनने और नाचने-गाने पर समाज की पावरिंदियां होती हैं। हालांकि समय के साथ समाज में विधवाओं के प्रति आदर और सम्मान का भाव जाग रहा है और उनके स्वतंत्र जीवन को बाधित करने वाली परंपराएं और प्रतिवंश अपनी पकड़ हाली कर रहे हैं। लेकिन अभी भी आर्थिक रूप से विधवाओं को सशक्त बनाने की चुनौती कायम है।

“ “

इसी तरह पिछले साल कस्बे की एक अन्य महिला सविता देवी के पाति का भी सङ्कट दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो जाने के कारण परिवार के भरण-पोषण के लिए उन्हें भी अपने तेरह साल के बड़े बेटे का स्कूल छुड़वाकर पैसे कमाने के लिए शहर भेजना पड़ा। शिक्षा से वंचित रखकर बेटे पर कम उम्र में घर की जिम्मेदारी डाल देना कितना ठीक है? इस प्रश्न के जवाब में वह कहती हैं, हम भी नहीं चाहते कि बेटा पढ़ाई की उम्र में पैसा कमाए।

महागठबंधन बनते ही दिखती है एकता में दरार



जितेन्द्र कुमार सिन्हा, पटना

लोकसभा चुनाव में नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार को परास्त करने के लिए महागठबंधन में शामिल होने वाले दलों की बैठक 23 जून को पटना में हुई, जिसमें 15 राजनीतिक पार्टियाँ शामिल हुए। जबकि इस बैठक में 21 राजनीतिक पार्टियाँ को शामिल होने की सभावना थी। महागठबंधन में शामिल होने वालों में जदयू, राजद, कांग्रेस, भाकपा, माकपा, भाकपा माले, एनसीपी, झामुमो, टीएमसी, डीएम्से, शिवसेना(बाला साहेब ठाकरे गुट), समाजवादी पार्टी, आम आदमी पार्टी, नेशनल कान्फ्रेंस और पीडीपी के कुल 27 नेता थे।

महागठबंधन की बैठक लगाभग साढ़े तीन घंटे चली और मात्र तीन बिंदु पर ही सहमती बनी। वह बिंदु है भाजपा के खिलाफ एक साथ रहेंगे, 2024 लोकसभा चुनाव में साझा प्रत्याशी देंगे, और भाजपा के किसी भी एंजेंडे का मिलकर विरोध करेंगे। बैठक के बाद विहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि बहुत अच्छे ढंग से विपक्षी दलों ने माना है कि मिलकर चलेंगे। यह देश हित में है। पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री ने कहा है कि बैठक में सबने तय किया है कि हमलोग एकजुट रहेंगे और मिलकर रहेंगे। राजद प्रमुख लालू प्रसाद ने कहा है कि विपक्ष का बोट बटने से भाजपा- आरएसएस की जीत हो जाती है। हमलोग ऐसा नहीं होने देंगे। हम सब एक होकर लड़ेंगे और भाजपा को हरायेंगे। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा कि हिंदुस्तान के नीव पर आक्रमण हो रहा है। संवैधानिक संस्थानों पर भाजपा-आरएसएस हमला कर रहा है। इसके खिलाफ हमसब साथ खड़े हैं। इधर दिल्ली के मुख्यमंत्री अविंद केजरीवाल की पार्टी ने बयान जारी कर कहा कि यदि कांग्रेस अध्यादेश पर साथ नहीं देगी, तो गठबंधन का हिस्सा बनना मुश्किल है।

महागठबंधन में भाजपा सरकार को परास्त करने के लिए साझा मोर्चा बनाने और इसको अमली रूप देने के लिए शिमला में पुनः मिलने की बात हुई। देखा जाय तो विपक्षी पार्टियाँ गरीबी, महंगाई, बेरोजगारी के मुद्दे पर भाजपा को घेरने के लिए अपनी-अपनी पार्टियों के प्रवक्ताओं के जिम्मे लगा दिया है। लेकिन महागठबंधन में एकता में फूँट पहले ही दिन पड़ गई। आम आदमी पार्टी ने यह स्पष्ट कर दिया है कि यदि कांग्रेस अध्यादेश पर साथ देने की आश्वासन नहीं देती है तो गठबंधन का हिस्सा बनना मुश्किल है। इसबात पर कांग्रेस ने साफ मना कर दिया। जबकि कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे हाँ में भी थे और ना में भी, लेकिन राहुल गांधी की सख्त "ना" थी। भारतीय जनता पार्टी के केन्द्रीय मंत्री ने स्पष्ट रूप से कहा है कि विपक्ष कितना भी एकजुट हो जाय, लेकिन 2024

लोकसभा चुनाव में 300 से ज्यादा सीटों के साथ नरेन्द्र मोदी का प्रधानमंत्री बनना तय है। देखा जाय तो भाजपा का यह अनुमान गलत नहीं दिखता है, क्योंकि जहां जहां भी आम आदमी पार्टी जाती है कांग्रेस का ही सफाया करती है। उदाहरण के रूप में दिल्ली, पंजाब और गुजरात को देखा जा सकता है। इससे ऐसा लगता है कि आम आदमी पार्टी का उदय ही कांग्रेस की कब्र पर हो रहा है। इधर ऑल इंडिया मजलिस-ए- इतेहादुल मुस्लिमीन (अक्टअवट) के राष्ट्रीय अध्यक्ष असादुदीन ओवैसी को महागठबंधन में नहीं बुलाये जाने से वे भी खफा हैं और लोकसभा चुनाव परिणाम में असर दिखा सकते हैं। चुनाव में अभी समय है तो यह भी सभावना है कि कुछ राजनीति पार्टियाँ महागठबंधन में जुड़ सकते हैं और कुछ टूट भी सकते हैं। अब देखा जाय तो महागठबंधन में जो पार्टी शामिल हुए उनमें से अधिकांश पार्टी का जन्म कांग्रेस विरोध या अन्य पार्टी के विरोध के कारण हुआ है। अब ममता बनजी, जिन्होंने कांग्रेस से विरोध कर अपनी राजनीति चमकाई थी और आज कांग्रेस के साथ खड़ा होने को तैयार हैं। उसी प्रकार शरद पवार और उद्धव ठाकरे की जोड़ी एक बार फिर से कांग्रेस के साथ खड़े होने को बेचैन हैं। यह बेचैनी मात्र नरेन्द्र मोदी को हटाना है। ऐसी घालमोल की स्थिति में अभी कुछ भी कहना जल्दबाजी होगी। इतना तो स्पष्ट दिखता है कि टक्कर पुरजोर रहेगी। विपक्षी दलों के गठबंधन से छन कर यह बात चर्चा में है कि सभी दलों में आम सहमती बन गई है कि महागठबंधन का नाम हैपेट्रियोटिक डेमोक्रेटिक एलायंसह (पीडीए) यानि हैदेशभक्त लोकतात्त्विक गठबंधन हरखाना चाहिए। संभव है कि शिमला में होने वाली विपक्षी पार्टियाँ गरीबी, महंगाई, बेरोजगारी के दौरान इसकी आधिकारिक घोषणा होगी और इस बैनर तले सभी विपक्षी दल एकजुट होंगे। हालांकि नाम को अंतिम आम सहमति के लिए अभी घोषणा नहीं किया गया है।

“ महागठबंधन में भाजपा सरकार को परास्त करने के लिए साझा मोर्चा बनाने और इसको अमली रूप देने के लिए शिमला में पुनः मिलने की बात हुई। देखा जाय तो विपक्षी पार्टियाँ गरीबी, महंगाई, बेरोजगारी के मुद्दे पर भाजपा को घेरने के मुद्दे पर भाजपा को घेरने के लिए अपनी-अपनी पार्टियों के प्रवक्ताओं के जिम्मे लगा दिया है। लेकिन महागठबंधन में एकता में फूँट पहले ही दिन पड़ गई। आम आदमी पार्टी ने यह स्पष्ट कर दिया है कि यदि कांग्रेस अध्यादेश पर साथ देने की आश्वासन नहीं देती है तो गठबंधन का हिस्सा बनना मुश्किल है। इसबात पर कांग्रेस ने साफ मना कर दिया। भारतीय जनता पार्टी के केन्द्रीय मंत्री ने यह स्पष्ट रूप से कहा है कि विपक्ष कितना भी एकजुट हो जाय, लेकिन 2024

के लिए अपनी-अपनी पार्टियों के प्रवक्ताओं के जिम्मे लगा दिया है। लेकिन महागठबंधन में एकता में फूँट पहले ही दिन पड़ गई। आम आदमी पार्टी ने यह स्पष्ट कर दिया है कि यदि कांग्रेस अध्यादेश पर साथ देने की आश्वासन नहीं देती है।

पक्ष और विपक्ष के विरोधाभास में 'समान नागरिक संहिता' लागू होगी ?



जितेन्द्र कुमार सिंहा, पटना

देखा जाय तो, दुनियाँ के अधिकांश देशों में नागरिक कानून सबके लिए समान है। भारत में बोट बैंक की राजनीति करने वाले लोग समान नागरिकता संहिता का पुरजोड़ विरोध करते हैं। इससे बिहार की वर्तमान सरकार भी अद्भूता नहीं है। लेकिन किसी भी धर्मनिरपेक्ष देश के लिए कानून, धर्म के आधार पर नहीं होनी चाहिए। यदि देश और राज्य धर्मनिरपेक्ष हैं, तो कानून धर्म पर आधारित कैसे हो सकता है?

समान नागरिकता संहिता लागू हो जाने पर विशेष रूप से अल्पसंख्यक वर्ग की महिलाओं की स्थिति में व्यापक सुधार आयेगा। समान नागरिकता संहिता बन जाने के बाद उनके लिए अपने पिता की संपत्ति पर अधिकार जाने और गोद लेने जैसे मामलों में एक समान नियम लागू हो सकेगा।

गुजरात और हिमाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव के समय समान नागरिक संहिता को लागू करना भाजपा के प्रमुख मुद्दों में शामिल था। समान नागरिक संहिता को लेकर देश में समय-समय पर बहस होते रही है और लोग तरह-तरह के अपने विचार खेते रहे हैं। कोई इसे एक खास धर्म के खिलाफ बताते हैं, तो कोई इसे देश द्वितीय में बताते हैं। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार बिहार में लागू नहीं करने की बात कहते हैं। उमीद जतायी जा रही है कि 2024 के लोकसभा चुनावों से पहले भाजपा समान नागरिक संहिता कानून बना सकती है। ऐसे भी समान नागरिक संहिता भाजपा के एजेंडे में जनसंघ काल से ही रहा है और पार्टी तमाम अवसरों पर इसे लागू करने की प्रतिबद्धता भी जाती रही है।

भारत में समान नागरिकता संहिता लागू करने से संबंधित कुछ राज्यों में सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीशों की अध्यक्षता में समर्पित बनी है, उसके समक्ष विभिन्न धर्मों के लोग अपने-अपने विचार खेल रहे हैं। केन्द्र सरकार हर प्रकार की लोकतात्रिक चचाओं के पूरा होने के बाद ही देश में समान नागरिक संहिता लाने के लिए प्रतिबद्ध है। भारत में समान नागरिक संहिता कानून लाने की दिन प्रति दिन बढ़ती मांग के बीच राज्य सभा में इस संबंध में एक निजी विधेयक पेश किया गया था।

वैसे भी देखा जाय तो, भारत में आपराधिक कानून और उस पर सजा का प्रावधान सभी धर्मों के अनुयायियों पर समान रूप से लागू होता है, यानि भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) में सभी धर्म के लोगों के लिए सजा का कानून समान



है। ऐसी स्थिति में प्रश्न यह उठता है कि फैमली लॉ में समानता क्यों नहीं होनी चाहिए?

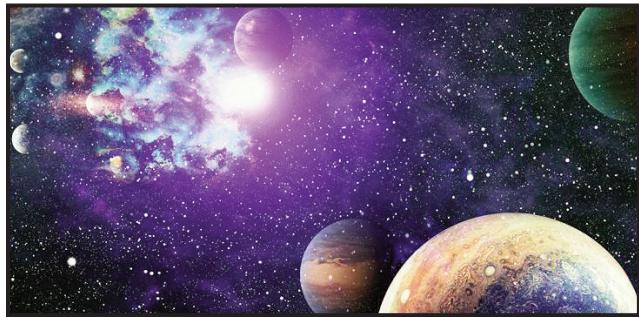
भारतीय संविधान में समान नागरिक संहिता का उल्लेख भाग-4 के अनुच्छेद -44 में है। इसमें नीति निर्देश दिया गया है कि समान नागरिक कानून लागू करना हमारा लक्ष्य होगा। डॉ शीम राव अबेडकर भी इस संहिता के पक्षधर थे। मौलाना अरशद मदनी ने कहा है कि समान नागरिक संहिता कानून का हम विरोध करेंगे, लेकिन सङ्केत पर नहीं उतरेंगे। जबकि सभी दलों को समान नागरिक संहिता लागू करने के लिए सामूहिक प्रयास करना चाहिए, क्योंकि यह राष्ट्र और मानवता के लिए अच्छा होगा। क्योंकि अगर कोई पुरुष किसी महिला से शादी करता है तो नैसर्गिक है। लेकिन कोई इससे ज्यादा शादी करता है, तो अप्राकृतिक होगा।

वहीं केरल के राज्यपाल ने समान नागरिक संहिता लाने के विचार का समर्थन करते हुए कहा था कि जिसने भी संविधान की शपथ ली है वह इसका कभी विरोध नहीं करेगा। जबकि विपक्षी पार्टियों के सदस्यों ने इस विधेयक को संविधान के विरुद्ध बताते हुए कहा है कि इससे देश की विविधता की संस्कृति को नुकसान पहुँचेगा। देश के सामाजिक ताने बाने को क्षति पहुँचने की आशंका है।

अब समय आ गया है कि समाज को धार्मिक संकीर्णता छोड़कर समान नागरिक संहिता की बात करनी चाहिए। अच्छी बात है कि विधि आयोग ने समान नागरिक संहिता निर्माण के लिए आम लोगों और मानवता प्राप्त धार्मिक संगठनों से सुझाव माँगा है। लोगों को और संगठनों को निश्चित रूप से अपनी बात खबरी चाहिए ताकि समान नागरिक संहिता निर्माण की राह प्रशस्त हो सके। समान नागरिक संहिता लागू होने पर ऐसा लगता है कि अल्पसंख्यक देश के मुख्य धारा में आ जायेंगे।

“ वैसे भी देखा जाय तो, भारत में आपराधिक कानून और उस पर सजा का प्रावधान सभी धर्मों के अनुयायियों पर समान रूप से लागू होता है, यानि भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) में सभी धर्म के लोगों के लिए सजा का कानून समान है। ऐसी स्थिति में प्रश्न यह उठता है कि फैमली लॉ में समानता क्यों नहीं होनी चाहिए? भारतीय संविधान में समान नागरिक संहिता का उल्लेख भाग-4 के अनुच्छेद -44 में है। इसमें नीति निर्देश दिया गया है।





मेष

गुरु की कृपा से भाग्य की बृद्धि होगी। क्रम स्थान का शनि मेहनत के बाद ही सफलता देगा। शनिवार की संध्या में लहू गरीबों में बाटे। सेहत का ध्यान रखें। भगवान् श्री सूर्यनारायण को अर्ध्य प्रदान करें। शुभ अंक 1 और शुभ रंग लाल है।



बृष्णु

मन खिन्न रहेगा। बहुत मेहनत के बाद सफलता मिलेगी। जीवन में आनंद का वातावरण बनाने के लिए दुर्गासप्तशती का पाठ करें। विद्यार्थी के लिए और प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अनुकूल अवसर हैं। शुभ अंक 2 और शुभ रंग सफेद या ऑफ वाइट हैं।



मिथुन

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। प्रतिष्ठा तो मिलेगी। लेकिन धनागमन में थोड़ी परेशानी होगी। अष्टम शनि के लिए चांदी का टुकड़ा अपने पास रखें। दशम सूर्य आपके जीवन में विशेष कृपा बनाएगा। मा के महालक्ष्मी रूप की पूजा करें। शुभ अंक 3 रंग हरा और लाल।



कर्क

सेहत का ध्यान रखना बहुत जरूरी है। घर के स्त्री पक्ष का सेहत चिंता का कारण बनेगा। प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अनुकूल समय है। हनुमान जी की आराधना करें। बजरंगबाण का पाठ करें। शुभ अंक 7। शुभ रंग - गुलाबी।



सिंह

मन्त्र के वेश में छुपे शत्रु से सावधानी की जरूरत है। श्री लक्ष्मी नारायण की पूजा से धन लाभ होगा। संध्या प्रहर धी का चतुर्मुख दीपक अपने घर के मुख्यद्वार पर प्रतिदिन जलाए। उत्सव और मांगलिक कार्य की बातें करने का उपयुक्त समय है। शुभ रंग नीला। शुभ अंक 8।



कन्या

पंचम शनि करियर के क्षेत्र में अच्छे अवसर देंगे। विद्या व बृद्धि से सफलता प्राप्त होंगे। गुरु के प्रभाव से लौवर या पेट की समस्या रहेगी। महामृत्युंजय मन्त्र का जाप या श्रवण करें। शुभ रंग पीला। शुभ अंक 3।



बृश्कि

आपके आराध्य श्री लक्ष्मी नारायण की कृपा से धन आगमन का योग है। भाई के हिले समय अनुकूल नहीं है। बाएं सुर बाले पीले गणपति का तस्बीर घर में रखें। प्रतिष्ठा व सम्मान का योग है। शुभ रंग सफेद। शुभ अंक 5।



तुला

भाग्य का राहु राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करेंगे। गुरु की कृपा से शत्रु व रोग का नाश होगा। शनि माता के स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं है। चांदी के पात्र से गाय का कच्चा दूध नदी में बहाएं। अनुकूलता बनी रहेगी। शुभ रंग लाल। शुभ अंक 4।



मकर

जिद्द छोड़ना होगा। बाएं हाथ की कलाई में पीला धागा बांधने से नुकसान कम होगा। राहु अचानक व विचित्र परिणाम दे सकता है। कालभैरव जी की पूजा करें। शुभ रंग सफेद। शुभ अंक 7।



कुम्भ

झूट से नफरत होगी। झूटे लोगों से सामना होगा। लाभ होंगे लेकिन मन के अनुकूल नहीं। लेकिन मान सम्मान बढ़ेगा। मिंगल कार्य के लिए आगे बढ़े। आवश्यकता को कम करें। चोट घेपेट से बचना होगा। हल्दी का गांठ अपने पर्स में रखें। ॐ नमो नारायणाय का जाप करें। शुभ रंग - गुलाबी। शुभ अंक 8।



धनु

धन का आगमन होगा। लेकिन सूर्यास्त के बाद दूध व दही का सेवन नहीं करें। आत्मधिमान से बचना होगा। अहंकार को हावी नहीं होने दे। हनुमान चालीसा का पाठ करें। शुभ अंक 6। शुभ रंग हरा।



मीन

सूर्य की कृपा से पद व प्रतिष्ठा की बृद्धि होगी। गुरुस्सा पर नियंत्रण रखें। दुश्मन से सघेत जरूरी है। नजर बचना होगा। घर की शांति राहु के कारण नियंत्रण में नहीं रहेगा। सफेद कपड़े में सिंधा नामक घर के मुख्य द्वार पर बांधे। शुभ रंग - हरा। शुभ अंक 9।



लोक सभा चुनाव में जनता की सोच पर निर्भर करेगा अगली सरकार



जितेन्द्र कुमार सिन्हा, पटना

भारतीय संस्कृति में किसी व्यक्ति के लिए अपने जीवन काल में, नए घर का निर्माण और उसमें प्रवेश करने को बहुत ही शुभ और दुर्लभ क्षण माना जाता है और जब देश के जीवनकाल में इस तरह का समय आता है तो वह असाधारण क्षण होता है। लेकिन हमारे देश राजनीतिक पार्टियों ने नए संसद भवन शिलान्यास पर कोई आपत्ति नहीं किया लेकिन उद्घाटन पर ऐसा आपत्ति किया, जो देश को शर्मसार कर दिया है। ऐसा लगता है राजनीतिक पार्टियाँ देश के प्रधान मंत्री का विरोध करते करते देश का विरोध करने लगा है। नए संसद भवन का निर्माण करने की प्रक्रिया का शुरूआत कांग्रेस पार्टी की शासन काल में शुरूआत हुई थी, लेकिन उसे शिलान्यास कर उद्घाटन करने का सौभाग्य प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को मिला।

नए संसद भवन के उद्घाटन समारोह का बहिष्कार करने वालों में देश के राजनीतिक पार्टियाँ 81 संसद वाली कांग्रेस, 34 संसद वाली द्रमुक, 7 संसद वाली शिव सेना-यूबीटी, 11 संसद वाली आम आदमी पार्टी, 6 संसद वाली समाजवादी पार्टी, 4 संसद वाली भाकपा, 2 संसद वाली ज्ञानमूर्ती, 2 संसद वाली केरल कांग्रेस-मणि, एक संसद वाली विदुथलाई चिरस्थिगल काची, एक संसद वाली राष्ट्रीय लोक दल, एक संसद वाली आरएसपी, एक संसद वाली एमडीएमके, 35 संसद वाली तृणमूल कांग्रेस, 21 संसद वाली जनता दल (यूनाइटेड), 9 संसद वाली राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी, 8 संसद वाली सोनीआई-एम, 6 संसद वाली राजद, 4 संसद वाली आईयूएमएल, 3 संसद वाली नेशनल कान्फ्रेंस, और 2 संसद वाली एआईएमआईएम, कुल 20 पार्टियाँ शामिल थी। इस तरह के सोंच रखने वाली पार्टियों को देश हित में किए गए कार्य कैसे कहा जा सकता है।

जबकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की एनडीए में शामिल नहीं रहने के बावजूद गैर एनडीए पार्टियाँ लोक जनशक्ति पार्टी (राम विलास), बीजू जनता दल, बहुजन समाज पार्टी, तेलुगु देशम पार्टी और वाईएसआरसीपी, कुल 5 पार्टियाँ नए संसद भवन के उद्घाटन में शामिल थे।

ऐसा लगता है की देश की राजनीति पार्टियाँ भाजपा सरकार के कार्यों का विरोध करने के सिवाय कोई काम नहीं करती है। जब केन्द्र की नरेन्द्र मोदी सरकार ने पाकिस्तान पर सर्जिकल स्ट्राइक किया तो इसका सबूत माँगने लगा, जब जम्मू कश्मीर से धारा 370 हटाया तो इसका विरोध करते हुए ऐसे पुनः लागू करने का

वादा करने लगी, तीन तलाक हटाया तो इसका भी विरोध करने लगी, राफेल खरीदा तो विरोध करने लगी, इतना ही नहीं देश के प्रधान मंत्री को चौंकीदार चोर कहते हुए संघोधित करने सकता है। देश के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय इंदिरा गांधी के शासन काल में विपक्ष के नेता रहने के बाद भी विदेशों में देश के नेतृत्व के लिए अटल बिहारी वाजपेयी को भेजा गया था। लेकिन आज के विपक्ष को भेजना तो दूर है बल्कि विपक्ष के नेता विदेशों में जाकर देश की छवि खराब करने और देश को बदनाम करने की कोई कसर नहीं छोड़ रहा है।

अबप्रश्न उठता है कि अगर देश की जनता ऐसी विपक्षी पार्टियों को सत्ता सौंपती है देश का कौन सी छवि उभरेगी यह प्रश्न सोचनीय है। जहां तक महंगाई, वेरोजगारीदृष्टि आदि का प्रश्न है तो यह सोचनीय बिषय है की जब देश आजाद हुआ था और 70 वर्ष में क्या रेट सामग्रियों का नहीं बढ़ा है? वेरोजगारी नहीं रही है? जो पार्टी 70 वर्ष में महंगाई और वेरोजगारी खतम नहीं कर सका, तो क्या उसे इसका विरोध करने का हक है? दूसरे पर आरोप लगाना उचित है? आगामी लोक सभा चुनाव अगले वर्ष होना है। अब देखना है कि देश की जनता अपने मताधिकार का उपयोग कर देश का बागड़ेरि किसे सौंपती है। देश की छवि बनाने वालों को या देश के नए संसद भवन का बहिष्कार करने वालों को। यह सब जनता की सोंच पर निर्भर करता है।

“ ”

ऐसा लगता है की देश की राजनीति पार्टियाँ भाजपा सरकार के कार्यों का विरोध करने के सिवाय कोई काम नहीं करती है। जब केन्द्र की नरेन्द्र मोदी सरकार ने पाकिस्तान पर सर्जिकल स्ट्राइक किया तो इसका सबूत माँगने लगा, जब जम्मू कश्मीर से धारा 370 हटाया तो इसका

विरोध करते हुए इसे पुनः लागू करने का वादा करने लगी, तीन तलाक हटाया तो इसका भी विरोध करने लगी, राफेल खरीदा तो विरोध करने लगी, इतना ही नहीं देश के प्रधान मंत्री को चौंकीदार चोर कहते हुए संघोधित करने लगा। इस तरह का विरोध स्वच्छ विपक्ष का पहचान नहीं हो सकता है।

नहीं बदली गरीबों की तकदीर जहां थी वही है गरीबी



जितेन्द्र कुमार सिन्हा, पटना

देश आजाद हुए 75 वर्ष हो गई, लेकिन नहीं बदली देश के गरीबों की तकदीर। किसान जैसा था वैसा ही है, उनकी समस्याओं की सूची अभी भी लंबी है। टूथपेस्ट, क्रीम, पाउडर आदि से लेकर कोल्ड ड्रिंक्स ऐसे कई प्रोडक्ट हैं, प्रतिवर्धित रहने के बावजूद भी देरी पातच से लेकर विदेशी तक सहज उपलब्ध होता है। यह सोच कर मन हो जाता है बेचैन।

राजनेता द्वारा चुनाव के समय या उससे पहले भी दिलाशा तो दी जाती है लेकिन अमल नहीं किया जाता है। सड़क, पुल एवं पुलिया बनी हैं और बन भी रही है, लेकिन कल-कारखाने नहीं लगी हैं और बेरोजगारी बढ़ी है।

सरकार कई योजनाओं में सार्विकिल योजना, शिक्षा योजना, पोषाक योजना, वृद्धा पेंशन योजना, जयप्रकाश पेंशन योजना, पत्रकार सम्मान पेंशन योजना, पत्रकार बीपा योजना के अतिरिक्त अन्य कई योजनाएँ लागू की हैं, परन्तु सभी की राशि इतनी कम है, जिससे लगता है कि ऊँट के मुँह में जीरा का फोड़न।

अगर राजनेता वादों पर थोड़ा बहुत भी अमल करती, तो आज लोगों की तकदीर और देश की तस्वीर अलग रहती। भले ही सरकार सड़क बनाने की बात करती हो, लेकिन आज भी कई जगहों पर चचरी पुल पर जिन्दगी रेंग रही है। शिक्षा व्यवस्था तो चौपट हैं ही, हाल के वर्षों में भूमाफिया का भी कद बढ़ा है और प्रशासन उसके आगे नतमस्तक प्रतीत होता है।

राजनेताओं को कहते सुना जाता है कि स्वदेश की सुरत बदली है। न्याय के साथ विकास हो रहा है। लेकिन हकीकत तो यह है कि अधिकांश जगहों पर लोग जल जमाव के बीच जीने को विवश हैं। जल निकासी की समुचित व्यवस्था नहीं रहने के कारण, लोगों को काफी परेशानियाँ उठानी पड़ रही हैं। जल निकासी की व्यवस्था कुशल प्रबन्धन के तहत योजनाबद्ध तरीके से नहीं की जा रही है। देखा जाय तो बदमाश वेखौफ है, पुलिस को चुनौती देते हुए अपराधिक वारदातों को अंजाम दे रहे हैं। कहने के लिए तो अपराध एवं अपराधियों की नकेल कसने के मकसद पर हमेशा समीक्षा होती है और समीक्षा में मौके पर लगाम कसने के लिए निर्देश के बावजूद भी घटनाओं में कमी नहीं दिखती, बल्कि बढ़ता ही जा रहा है। लगता है कि प्रशासन महकते की बातों को एक कान से सुनकर दूसरे कान से

निकाल देते हैं। बढ़ रहे अपराध के ग्राफ इस बात को प्रमाणित करता है कि बढ़ती अपराधिक घटनाओं से, लोगों का विश्वास, पुलिस से दिन पर दिन उठता जा रहा है। देहात में बच्चे कुपोशन के शिकार हो रहे हैं। अस्पतालों में इसे देखा जा सकता है। आज भी देहात की महिलाएँ दो गज के चिथरों में और पुरुष दो हाथ की लंगोटी में रहने को विवश हैं। आरक्षण का खेल भी ऐसा ही है। कहने का तात्पर्य यह है कि देश की आजादी के समय से समस्यायें यथावत हैं। भले ही कागज पर तकदीर और तस्वीर बदल गई हो यह अलग बात है, लेकिन यह कहा जा सकता है कि बदलती रही सत्ता, नहीं बदली और नहीं बदल रही गरीबों की तकदीर - जहां थी वहीं है गरीबी। आज भी यहां जिस घर में दादा किसान थे, तो पोता भी किसान है। जो हरवाहे का काम करता था, उसका पोता भी आज हरवाहे है। जो सूद के पैसे से जिन्दगी जीता था, उसके पोते भी सूद पर जिन्दगी जी रहा है। चाहे क्यों न वह लोन, निजी लोन, बैंक लोन या सरकारी लोन हो। दुनियाँ चाँद पर घर बनाने की सोच रही है लेकिन दो जून की रोटी के जुगाड़ करने वाले पोते, आज भी दो जून की रोटी के जुगाड़ में ही जी रहा है। सरकारें आती हैं और बदलती हैं लेकिन गरीबी जहां थी वहीं है। राजनीतिक पार्टियाँ बढ़ी वेतहासा बढ़ी हैं और अपनी पहचान विदेशों तक बनाई हैं।



Sristi Shreya

जन्मदिन की ठार्डिक शुभकामनायें



You can get your next
Courier on time,
we know how



BOOK NOW

+91 99-9991-7342
www.nationalaircourier.com
info@nationalaircourier.com

COURIER SERVICE

Express Courier in any City

We Are The Best courier Solution in India

- ⦿ Speed
- ⦿ Reliability
- ⦿ Professionalism
- ⦿ Flexibility



www.nationalaircourier.com

nationalaircourier472@gmail.com

+91 99-9991-7342

COURIER DELIVERY

JUST AT STAY HOME WE DELIVER!



WE'LL SAVE YOUR TIME THROUGH OUR VAST EXPERIENCE OF FREIGHT FORWARDING
www.nationalaircourier.com

BEST COURIER COMPANY

Transport your parcels across the India with NATIONAL AIR COURIER



Call us: +91 99-9991-7342

info@nationalaircourier.com

www.nationalaircourier.com

Courier Delivery

Best Service

Info@nationalaircourier.com

- ⦿ Fast responsa
- ⦿ Good service
- ⦿ Clean and safe
- ⦿ Deliver as soon as possible

ORDER NOW

+91 99-9991-7342



www.nationalaircourier.com

GROW YOUR BUSINESS

INTERNATIONAL SERVICE

SERVICES OFFERED:

- International Shipping
- Customs clearance
- International Courier
- Good service



National Air Courier

COURIER DELIVERY

Express Delivery in any City

- 5 days your package arrived
- You Can Track Your Package
- Much cheaper shipping

CALL US

+91 99-9991-7342

www.nationalaircourier.com

info@nationalaircourier.com



24

FORD HOSPITAL, PATNA

A NABH Certified Multi Super-Speciality Hospital
PATNA



A 105-Bedded Hospital Run by Three Eminent Doctors of Bihar

उत्कृष्ट एवं अपनात्मक की अनुभूति



Dr. Santosh Kr.



Dr. B. B. Bharti



Dr. Arun Kumar



हृदय रोग चिकित्सा के लिए बेहतरीन टीम

2nd Multi Speciality
NABH Certified Hospital
of Bihar



Best Promising
Multi Speciality
Hospital
2018 Bihar.



फोर्ड हॉस्पिटल में उपलब्ध सेवाएं

कार्डियोलॉजी

- किटीकल केयर
- न्यूरोलॉजी
- स्पाइन सर्जरी
- गेफोलॉजी एवं डायलेसिस
- ऑथोपेडिक एवं ट्रॉमा
- ओड्स एवं गॉब्बेकोलौजी
- पेतिएट्रिक्स
- पेडिएट्रिक सर्जरी
- साइचिरेट्री एवं साइकोलॉजी
- रेसिपरेट्री मेडिसिन
- यूरोलॉजी
- सर्जिकल ऑन्कोलौजी

Empanelled with CGHS, ECR, CISF, NTPS, Airport Authority, Power Grid & other Leading PSUs, Bank, Corp. & TPS

New Bypass (NH-30) Khemnichak, Ramkrishna Nagar, Patna- 27
Helpline : 9304851985, 9102698977, 9386392845, Ph.: 9798215884/85/86
E-mail : fordhospital@gmail.com web. : www.fordhospital.org